

देखना ऐ अहल इबरत आंख दिल की खोल कर ।
वैसे न धर देना इसे इधर उधर कागज़ फोल कर ॥

अद्भुतानुभव

जिसको

स्वामी अद्भुतानन्द उपनाम बाबा मस्तरामगिर

भरतपुर राज्य निवासी

ने

अपने अनुभव से बना कर

प्रकाशित किया ।

संवत् १९८५ विक्रम्



देखना ऐ अहल इबरत आंख दिल की खोल कर ।
वैसे न धर देना इसे इधर उधर कागज़ फोल कर ॥

अद्भुतानुभव

जिसको

स्वामी अद्भुतानन्द उपनाम बाबा मस्तरामगिर

भरतपुर राज्य निवासी

ने

अपने अनुभव से बना कर

प्रकाशित किया ।

संवत् १९८५ विक्रम

प्रकाशक—**स्वामी अछूतानन्द, भरतपुर।**
मुद्रक—**सत्यव्रत शर्म्मा, शान्ति प्रेस, आगरा।**

* ॐ तत्सत् *

दोहा ।

देखो हित चित से इसे, कर विचार दृढ़ साथ ।
सार अंश को लाभ कर, खोल लीनी जो हाथ ॥

भूमिका ।

हे प्यारे जो कदापि रात्रि के अभाव करने को षोड़श कला सम्पन्न पूर्ण षोड़श चन्द्रमा उदय होंय अरु तारागण भी असंख्य उदय होंय अरु समस्त पर्वत बनादिकों में अग्नि प्रज्वालित करिये एक सूर्य के उदय हुए विना रात्रि का अभाव होवे नहीं, तैसे ही जो कदापि माया की निवृत्ति के अर्थ सहस्त्रावधि यज्ञ तप देवराधनादि साधन करिये तथापि विना सम्यक् ज्ञान स्वरूप परमात्मा जी के सम्यक् स्वरूप ज्ञान कें माया की

अशेष निवृति होवे नहीं, क्योंकि यावत् कर्म उपासनादि हैं सो सर्व माया का कार्य हैं अरु माया से उनका विरोध नहीं, अरु एक दूसरे का नाश तब करता है जब परस्पर में विरोधी होता है, अरु यावत् कर्म उपासना हैं सो माया के आश्रय हुए प्रकाशते हैं। अतएव उक्त कारणों करके कर्म उपासनादिकों से माया अशेष होवे नहीं, जैसे एक किंबा अनेक चन्द्रमा अरु असंख्य तारागण दीपकादि प्रकाशवान् हैं सो सर्व रात्रि के आश्रय प्रकाशवान् दीखते हैं ताते वो चन्द्रादिक अपना आश्रय जे रात्रि तिस के अभाव करने में समर्थ नहीं क्योंकि चन्द्र तारादिक किंचित् अन्धकार के अभाव करने के साधन होने से अन्धकार का अभाव करते हैं परन्तु वो रात्रिके अभाव की सामिग्री न होने से उसका अभाव करें नहीं, अरु जो एक सूर्य है अपने उदय के समकाल ही चन्द्र तारादिकों सहित रात्रि को अभाव करता है।

हे प्यारे यह जो सर्व जीवोंके अन्तःकरण रूप आकाश में अविद्यारूपा रात्रि घन हो रही है सो कर्म उपासना रूप साधनों से निर्मूल होवे नहीं क्योंकि कर्म उपासना अविद्या कार्य अविद्या के आश्रय अविद्या से अविरोधि हैं। ताते सर्वोत्तम हिरण्यगर्भ की उपासना रूप चंद्रमा है अरु अन्य देवताओंकी उपासनारूप शुक्र बृहस्पत्यादि ग्रह हैं अरु यज्ञादि उत्तम मध्यम अनेक प्रकार के कर्म छोटे बड़े असंख्य तारा हैं सो सर्व यदि संस्काररूप से अन्तःकरणरूप आकाश में स्थित भी होवें वा हैं तथापि वो अपना आश्रय अविरोधि जो अविद्या तिस को अशेष अभाव करने को समर्थ नहीं परन्तु अविद्या के सत्वगुण का कार्य जे हिरण्यगर्भादिकों की उपासना वा यज्ञादिकर्म से अविद्या के तमोगुण कार्य अशुभ कर्मजन्य पापरूप अन्धकार तिसको किंचित एक देशी अभाव करते हैं, परन्तु

अविद्या रूप रात्रि को नहीं, अरु उस अन्तः-करणरूप आकाश में (तस्यादित्य वज्ज्ञानम्) इत्यादि प्रमाण से सूर्यादिकों का भी प्रकाशक सम्यक् महावाक्यार्थ ज्ञानरूप सूर्य उदय होता है सो अपने उदय के समकाल ही सहित उक्त चन्द्र, ग्रह नक्षत्रादिकों के अविद्या रूप रात्रि का अत्यान्ताभाव कर देता है, ताते हे प्यारे (ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः। न्यान्यः पन्था विद्यते अयनाय) इत्यादि अनेक प्रमाणों से विना सम्यक् ज्ञान स्वरूप के अभेद ज्ञान के अन्य किसी प्रकार भी दुस्तर माया से छूटना होवे नहीं।

प्यारे सम्यक् ज्ञान किसी प्रकार से भी अभाव होता नहीं। जैसे सामान्य अन्धकार में पड़ी जो रज्जु तिस विषे सर्प की प्रतीति अरु तज्जन्य भय कम्पादिक होते हैं अरु जब दीपक के प्रकाश करके अन्धकार का अभाव

होता है तब सम्यक् प्रकार रज्जु को यह रज्जु ही है, इस प्रकार जानने से भय कम्पादि सहित सर्प का अत्यन्ताभाव होता है पश्चात् उस दीपक के विशेष प्रकाश के अभाव हुए भी उस रज्जु विषयक हुआ जो सम्यक ज्ञान सो किसी प्रकार भी अभाव होता नहीं, अरु यह जो सम्यक् ज्ञानरूप प्रकाश है सो सूर्य, चन्द्र, विद्युत, अग्नि आदिक प्रकाशवानों के समान उदय अस्त वाला नहीं किन्तु यह सर्व त्रिषे सर्व के उदय अस्त भावाभाव के प्रकाशने वाला एक रस प्रकाश है वो किसी कर्म से उत्पत्ति विनाश होता नहीं वह उत्पत्ति विनाश से रहित अविनाशी प्रकाश ज्ञान स्वयं सिद्ध है, अरु जो ज्ञान की भी उत्पत्ति मानो तो ज्ञानोत्पति के पूर्व अन्तःकरण की अज्ञात अवस्था को प्रकाशे कौन, मुझको ज्ञान नहीं वह जो अविद्यात्मक वृत्ति सो भी उस ज्ञान करके ही प्रकाशित है, ताते ज्ञान जो है सो

उत्पत्ति से रहित अविद्यादि सर्व का प्रकाशक एक रस सदा सिद्ध है सर्व में समान व्याप्त है, जो ऐसा कहो कि (अज्ञाने नावृतं ज्ञानं तेन मह्यन्ति जन्तवः) इस प्रमाण से ज्ञान जो है सो अज्ञान करके आवृत है ताते ज्ञान रूप दीपक का बुझना सप्रमाण ही है, सो नहीं क्योंकि जो आवरण में होना है सो अभाव होता नहीं, जैसे ओट में रक्खा दीपक सो दृष्टि-गोचर न होने से उसका अभाव मानना अज्ञान है तैसे अन्तःकरण की ज्ञान वृत्ति को अज्ञान का आवरण होने से ज्ञान स्वरूप स्वयं प्रकाश साक्षी का अभाव मानना अज्ञान है श्रुति प्रमाण (यथा भवति बालानां गगनं मलिनो मलैः। तथा भवत्यबुद्धी नामात्माऽपि मलिनो मलैः) अज्ञान होने से ज्ञान का अभाव नहीं होता अरु वह ज्ञान अज्ञान के गये उत्पन्न भी नहीं होता क्योंकि पूर्व से ही सिद्ध है। इत्यादि युक्ति सम्यक् ज्ञान जो है सो

उत्पत्ति विनाश से रहित सर्व का प्रकाशक एक रस सर्व का अपना आप है। (येन रूपं रसं गन्धं शब्दान् स्पर्शों ऽश्चमैथुनान् एतद्वैतत्) ताते जिस ज्ञान के प्रकाश करके सर्व प्राणी सर्व को अनुभव करते हैं सो किसी प्रकार भी बढ़ता नहीं, अरु किसी प्रकार से घटता नहीं ऐसा श्रुतियों का भी कहना है। अरु ज्ञान नाम चैतन्य का है अरु चैतन्य है सो सर्व व्यापी सर्व का आत्मा ब्रह्म है (ज्ञानं ज्ञानवता महम्। ज्ञानीत्वात्मैव मे मतम्) इत्यादि, क्योंकि यावत् सूर्य, चन्द्र, अग्नि, विद्युत, मणि आदिक प्रकाशवान् वस्तु हैं सो ज्ञान के प्रकाश से ही प्रकाश रूप हैं, ज्ञान विना उनका प्रकाशकपना सिद्धि होवे नहीं तथाच (नतत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्नि। तमेव भान्त मनु भाति सर्वन्तस्य भासा सर्वमिदं विभात्ति।) इति सिद्धम्॥

प्यारे–यह पुस्तक अद्भूतानुभव, जो बनाई है वह मैंने अपनी आनन्द की तरंगों से रची है। सज्जन ज्ञानी पुरुष इस पुस्तक के लेखों को पाठ करें और निरपेक्ष रूप में विचार करेंगे तब उनको संसार में रहते हुए भी नित्य अनित्य वस्तु का ज्ञान हो जावेगा। और जान जायँगे कि जीव क्या है, ईश्वर क्या है और ब्रह्म क्या है—अतः सज्जनों से यही निवेदन है कि कहीं कोई कड़ी ऊंची नीची हो तो उसे क्षमा करें यदि कहीं कोई शब्द अशुद्ध हो तो क्षमा करें। भाव को देखना कविता के दोष गुण न देखना। क्योंकि आशिक लोग अपने आनन्द को ही समझते हैं दोष-गुण को नहीं जानते जी, इति।



* अछूतानुभव *

नज़्म ॥ १ ॥

टुक ज़िक्र करूं तेरी शान का,
मुझ में ज़रा छल बल नहीं।
इब्तदा से ले आज तल्लक,
जिसमें ज़रा हल चल नहीं ॥१॥
दिन में शाहे खावर शहन्शाह,
माहे अनवर की शब में शाही।
हुक्म अदूलः करें ताक़त क्या,
जिनमें ज़रा खल बल नहीं ॥२॥
धरती हैगी धारना शक्ती,
आकाश लगा है जिस पै खेमा।
हाज़र खड़े दम खुश्क देवता,
दम में ज़रा चल पल नहीं ॥३॥
आफ़रीं है इस साहिबी पर,
बे अदालत अदल बेनिशां।
इन्साफ़ खामोश हैगा अछूता,
जिसमें ज़रा कल बल नहीं ॥४॥

भजन ॥ २ ॥

तुम देखो आंख पसार,
धर्म जड़ हरी भरी होती है ॥

प्रहलाद भगतकी भगति, भगतमन दे श्रवण सुनताहै।
कर लाल लोहे के खम्भ, हरना यह कुमति गुनता है॥
ले हाथ नंगी तलवार, क्या तू राम रूई धुनता है।
है कहां पर तेरो राम, क्यों अपनी आयु भुनता है॥

उड़ान।

प्रहलाद कहे लल्कार, न पावे हर की माया का पार।
लेवे युग युग में अवतार, कौन जो देवे मुझको मार॥
पिता जी हरि की भगति, हरी भरी होती है।
तुम देखो आंख पसार, धर्म जड़ हरी भरी होती है॥ १॥
प्रभु दीनबन्धु भगवान, सदा भगतनपर दया करता है।
सुन टेर न लावे देर, प्रभु अनेक रूप धरता है॥
सब रोगसोग भगतनके, आप इकआनमें आन हरताहै।
है हरता करता करतार. सार सब सृष्टिका भरता है॥

उड़ान।

देख चैंटी को प्रहलाद, आई हर की माया याद।
मुझे कौन करे बरबाद, होवे दिल ही दिल में शाद॥

पिता जी दया भगत पै, सरा सरी होती है।
तुम देखो आंख पसार, धर्म जड़ हरी भरी होतीहै॥२॥
है तोमें मोमें राम, देख खम्भा पै क्या चलता है।
हुआ पाप पुंज बलवान, देख तेरा भवन जलता है॥
क्यों चले अनीती चाल, देख चौदह भवन हलता है।
जो न माने भले की बात, अंत हाथ मलता है॥

उड़ान।

अब आगया तेरा काल, क्यों दिखावे नैनां लाल।
हूँ मैं जी तेरा बाल, यही है मलमास का साल॥
पिता जी शुभ कर्मों से, बड़ी हरी भरी होती है।
तुम देखो आंख पसार, धर्म जड़ हरी भरी होती है॥३॥
है प्रेम धर्म का नियम, क्यों अज्ञान नींद सोता है।
यह मानुष जन्म दुर्लभ, क्यों वृथा अकारथ खोता है॥
दी काट चंदन की बेल, क्यों कंटक बीज बोता है।
देख अछूतानन्द नरसिंह, क्यों खड़ा खड़ा रोता है॥

उड़ान।

न है दिन न दीखे रात, न वह पशू न मानुष जात।
देखो यह अजनबी बात, हिरण्यकश्यप की घात॥
पिता जी अन्त समय पै, खरा खरी होती है।
तुम देखो आंख पसार, धर्म जड़ हरी भरी होती है॥४॥

नज़म–३

अजब विज्ञान का मारग, यह श्रुति पन्थ गाता है।
क्या भेदाभेद है सर्वज्ञ, बस जीव ही ब्रह्म कहाता है॥
अजब० ॥१॥
न ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय त्रिपुटी, है ध्याता ध्यान धेय नाहीं।
प्रमाता प्रमाण प्रमेय प्रमा, अप्रमा गुपाल गाथा है॥
अजब० ॥२॥
न द्रष्टा दृष्टि का दर्शी, न जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ही।
है तुर्या अतीत परमहंसी, पद निर्भय निर्गुन साँचा है॥
अजब० ॥३॥
कोई ओहं सोहं का योगी, कोई रामां राम का खोजी।
है अपने आप में वह जी, क्या घर ही घर में नाचा है॥
अजब० ॥४॥
कोई परोक्षापरोक्ष का ज्ञानी, कोई दृढ़ अदृढ़ का अभिमानी
कोई लक्ष्यालक्ष्य गलतानी, बस अछूतानन्द झलकाता है
अजब विज्ञान का मारग, यह श्रुति पन्थ गाता है॥५॥

नज़म–४

श्री राम अवतार।

घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया।
हस्थी चैंटी आदि काया, सम दृष्टि सम समाया॥

एक समय ऋषी नारद, बैकुण्ठ में गये थे।
वहां देख अचरज लीला, चकित हो गये थे॥
भूले ज्ञान ध्यान विद्या, सब होश खो गये थे।
कमलापति प्रभू बिन, सुनसान धाम पाया॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥१॥
चलकर वहां से इक दम, ब्रह्मा की शरन धाया।
आकर पिता के सन्मुख, कर जोड़ कर सुनाया॥
बैकुण्ठ में नर नारी, मैं देख कर भरमाया।
क्या है यह अचरज माया, नाहीं भेद हाथ आया॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥२॥
ब्रह्मा विचार कर कर, नारद से यों बताते।
शङ्कर त्रिकाल दर्शी, दिव्य दृष्टि वह कहाते॥
वेद आगम निगम चारों, शिवोहम ज़वाँ पर लाते।
नारद ऋषी को ब्रह्मा, शङ्कर के पास लाया॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥३॥
बड़ भागी आज शङ्कर, आइये जगत के हो कर्त्ता।
सब रोग सोग जग के, भय ताप के तुम हरता॥
हो दयावन्त दयालू, सब सृष्टि के हो भरता॥
ब्रह्म ज्ञान के हो दाता, ब्रह्म वेद नाम पाया॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥४॥
शङ्कर जी अंतर्यामी, सब हाल उनका पाकर।
यह राम अवतार होंगे, राजा दशरथ के जाकर॥

करेंगे धर्म्म की रक्षा, दुष्टों को मारें आकर ।
मर्यादा पालक पूरण, निष्काम धारी काया ॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥५॥
नाम राम का गाने से, नर ज्ञान पद पावेंगे ।
अर्थ धर्म्म काम मोक्ष, निष्काम हो जावेंगे ॥
रमता में रम रमा कर, न गर्भ में आवेंगे ।
यह भेद कथ कथा कर, ब्रह्मा को कह सुनाया ॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥६॥
ब्रह्मा की निश्चय खातिर, महादेव सिद्ध कलाकर ।
इक तसकर पकड़ लाये, माया का छल चला कर ॥
कहा बोल मुख से राम, दया दृष्टि से बुला कर ।
बोला वह मरा मरा कर, उलटा ही सर सराया ॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥७॥
पचास हज़ार वर्ष, रटते को हो गये थे ।
परम प्रेम के कारण, पुण्य पुनीत हो गये थे ॥
न सुधि रही जहां की, इक जोत हो गये थे ।
लागी लगन पियासे, घर बार सब भुलाया ॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥८॥
शम्भू दया के सिंधू, भगतन पै दया करते ।
पावन हैं प्रण पालक, पतितन को पार करते ॥
हृदय में याद उनकी, जो उनको याद करते ।

वाल्मीक नाम धर कर, बालू से जा जगाया ॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥९॥
जग को करो कृतार्थ, तुम राम के गुण गा कर।
मृत्य लोक में रामायण, कहो शम्भू का वर पाकर॥
जो कोई सुने और गावै, न पावे दुःख गत में आकर।
नाम हो प्रसिद्ध तुम्हारा, इस तरह पर कह चिताया॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥१०॥
हो करके गुणग्राही, शम्भू की आज्ञा पाई।
पावन पुनीत रामायण, वाल्मीक ने बनाई॥
ज्ञान भक्ती वैराग्य तीनों, ले विचार कर सुनाई।
श्रोता जनों ने सुन कर, हित चित से नेह बढ़ाया॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥११॥
मन्दिर शिवालय घर घर, वक्ता कथा सुनाते।
नर नारी सब मिल कर, गोविन्द गीत गाते॥
भगवन अवतार लैंगे, आपस में ये बताते।
सब देश हर दिशा में, गावें राम का बधाया॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥१२॥
पहिले दस हजार वर्ष, प्रसिद्ध हो गई थी।
श्री राम की कथा जी, नव निद्ध हो गई थी॥
फिर क्यों राजा ऋषी की, ऐसी जिद्ध हो गई थी। (ज़िद)
विचित्र हर की माया, भूला वह सुन सुनाया॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥१३॥

राजा को राज मोह में, विपरीत भावना कर ।
प्रमाण प्रमेय में संशय, असम्भावना कर ॥
न दृढ़ विश्वास आया, विक्षेप भावना कर ।
बिन विचार ज्ञान दुर्लभ, क्यों आप अपन बिसराया ॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥१४॥
माया का चक्कर ऐसा, इस जीव को भुला कर ।
राजा दशरथ के तदवत, मोह नींद में सुला कर ॥
भय जन्म मरण का देकर, विष दे दिया घुला कर ।
ब्रह्म का भेद ब्रह्म में, जीव जीव को दर्शाया ॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥१५॥
ना दृष्टान्त दृढ़ कर, ब्रह्म जीव का ही मानो ।
नहीं तो इस कथा को, कल्पना कपोल जानो ॥
गुरु की ले अशारत, स्वरूपानन्द रूप स्यानो ।
थे राम अवतार स्वयम्, धारी देह ब्रह्म कहाया ॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥१६॥
शंकर के मुख में राम, राम शिव का ध्यान धरते ।
हर हरी में भेद नाहीं, ज्ञानी यह ज्ञान करते ॥
ऋषी मुनी सब विद्याधर, वेदों में ध्यान करते ।
जीवो ब्रह्म ना परा-है, कर अभेद ही लखाया ।
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥१७॥
जो राम अवतार होगा, तो जीव ब्रह्म हैगा ।
जो ब्रह्म निर्धार होगा, तो जीव ब्रह्म हैगा ॥

जो वेदान्त सार होगा, तो जीव ब्रह्म हैगा ।
असंगो ह्ययम् पुरुषा, अछूतानन्द ही झलकाया ॥
घट पट में राम पाया, हर घट में रम रमाया ॥१८॥

नज़म—५

हो एक नज़र इधर भी, बन्सी बजान वाले ।
इक तान फेंकता जा, बांकी अदान वाले ॥१॥
थे बालपन के मित्र, विप्र सुदामा तेरे ।
उन को किया कृतारथ, तन्दुल चवान वाले ॥२॥
मीरा के प्रेम वश हो, ब्रज को त्याग दीना ।
जाकर बिदुर के घर में, तुम साग खान वाले॥३॥
ग्वालन से प्रेम कर कर, माखन चुरा चुरा कर ।
अहीरन के संग बन में, गौश्रां चरान वाले ॥४॥
भिलनी के बेर झूठे, करमांकी खिचड़ी बेरस ।
खा खा कर न धाये, बिगड़ी बनान वाले ॥५॥
गज की टेर सुनकर, पाओं पियादे धाये ।
इक छिन में कीनी रच्छा, चक्कर चलान वाले ॥६॥
कुबजा हुई पटरानी, तुमको लगा के टीका ।
वहां रुक्मिणी उड़ाई, रण छोड़ जान वाले ॥७॥
गौतम ने अपनो नारी, पत्थर की करके डारी ।
हुई मुक्त चरण छूकर, शिला उड़ान वाले ॥८॥

नरसी की हुँडी भरकर, सावलशाह कहाए ।
बलि के दर पै ठाड़े, आड़े लेन दान वाले ॥९॥
द्रोपद सुता का चीर, खैंचत न अन्त आया ।
तिस पर भी हो अकर्ता, अछूता कलान वाले ॥१०॥

नज़्म ॥ ६ ॥

है ये मजमा हाज़िर, ओ हाज़रान वाले ।
कुछ तो हुक्म हो सादर, लाखों ज़बान वाले ॥१॥
षट् शास्त्र वेद चारों, असली ज़वां है तेरी ।
अञ्जील के पिरीचर, ज़ाकर कुरान वाले ॥२॥
कोटानिकोट ब्रह्मण्ड, इक रोम रोम में हैं ।
चौदह तबक़ नज़र में, ओ आन शान वाले ॥३॥
है पैरहन बेहिजाबी, उकदा कुशा हो तुम ।
ज़ाहिर ज़हूर रोशन, शमसो निशान वाले ॥४॥
हर वर्ग की सदाये, गुल में तजल्ली बू है ।
हुसीनों में बदगुमानी, ज़ाहिर गुमान वाले ॥५॥
खुद पुज पुजारी बनकर, मन्दिरों में पूजा करता ।
क़ाबे में शेख मुसलिम, दीनों ईमान वाले ॥६॥
हर जा पै जलवा तेरा, सब जल जलाल तेरा ।
दोज़ख बहिश्त ऐराफ़, तीनों जहान वाले ॥७॥
दोज़ख में तौक़ स्याही, जन्नत में क़सर हूर ।
ऐराफ़ में बुत-परस्ती, मिज़गांन वान वाले ॥८॥

खुदीमें खुद की ख़ातिर, खुदही खुदा कहाया।
बिसमिल किये जुदाहो, बांकी कामन वाले ॥९॥
यकता सब पै शफ़क़त; हमदम सबसे उलफ़त।
खूबां के रुख़ पै खूबी, ख़ालिस मकान वाले॥१०॥
दुई दोरंगी यक रंग, हर रंग हो दिखाया।
अछूतानंद स्वयम्, कैवल्य ज्ञान वाले ॥११॥

गाना बहर ऐज़न ॥ ७ ॥

नर चेत रे दीवाने, दुनियां का पार नाहीं॥
है कार दुनियां दरिया, लबरेज़ व्याधी भरिया।
रहज़न जेब कतरिया, जिनका शुमार नाहीं॥१॥
नर चेत रे दीवाने, दुनियां का पार नाहीं॥
ले सुबह से जो धाया, सरे शाम सर न आया।
डोलत फिरे भरमाया, इक छिन क़रार नाहीं ॥२॥
नर चेत रे दीवाने, दुनियां का पार नाहीं॥
भटकत फिरें उमर भर, देवी देवता विद्याधर।
इन्सान जिन चराचर, आया हाथ सार नाहीं॥३॥
नर चेत रे दीवाने, दुनियां का पार नाहीं॥
मेरी मेरी सब करते, दिन रात लड़ते मरते।
अज्ञान सिर पर धरते, अछूता विचार नाहीं ॥४॥
नर चेत रे दीवाने, दुनियां का पार नाहीं॥

ऐज़न ॥ ८ ॥

क्या जाने क्या बना है, नाहीं सार हाथ आया ॥
सत्यासत्यसे विलक्षन है, दृष्टि लक्ष से अलक्षन है ।
आंख बंद स्वप्न दर्शन है, है अकर्षन न पार पाया॥१॥
क्या जाने क्या बना है, नाहीं सार हाथ आया ॥
कोई करता ब्रह्म जाने, कोई पांच तत्त्व ठाने ।
कोई भूमा पुरुष माने, कोई खुद बखुद कहाया॥२॥
क्या जाने क्या बना है, नाहीं सार हाथ आया ॥
एक प्रलय को बतावें, एक प्रभा अनादि गावें ।
एक संकल्पमात्र सुनावें, एक है नाहीं दरसाया ॥३॥
क्या जाने क्या बना है, नाहीं सार हाथ आया ॥
न उपलब्धी स्वरूप हैगा, न प्रतिष्ठा अनूप हैगा ।
न दृष्टा अरूप हैगा, अछूता अचरज दिखाया ॥४॥
क्या जाने क्या बना है, नाहीं सार हाथ आया ॥

ऐज़न ॥ ९ ॥

मुश्किल है जहां में, जाना ज़रूर इक दिन ॥
वजूद में जो आया, मादूम वह कहाया ।
चमन जो गुल खिलाया, कुम्हलाया ज़रूर इकदिन॥१॥
मुश्किल है जहां में, जाना ज़रूर इक दिन ॥
जावे उमर अस्प दौड़ा, बशर पीछे आगे घोड़ा ॥
ज़िंदगी क़ज़ा का जोड़ा, तोड़ा ज़रूर इक दिन ॥२॥

मुश्किल है जहां में, जाना ज़रूर इक दिन ॥
है कहां सिकन्दर दारा, किया फ़तह मुल्क सारा ॥
था चमकता जो सितारा, उतारा ज़रूर इक दिन ॥३॥
मुश्किल है जहां में, जाना ज़रूर इक दिन ॥
है गुल कहां गुलिस्तां, बुलबुल कहां दास्तां ।
है बू कहां बोस्तां, वैरां ज़रूर इक दिन ॥४॥
मुश्किल है जहां में, जाना ज़रूर इक दिन ॥
लाखों फिरें भटकते, थे ज़मीं पर सर पटकते ॥
फिरें मौत से सटकते, अटकते ज़रूर इक दिन ॥५॥
मुश्किल है जहां में जाना ज़रूर इक दिन ॥
इन बुतों से मुंह मोड़ा, हिर्स बहुत रहना थोड़ा ॥
अछूता जगत विछोड़ा, छोड़ा ज़रूर इक दिन ॥६॥
मुश्किल है जहां में, जाना ज़रूर इक दिन ॥

ऐज़न ॥ १० ॥

ढूंढ़ा कहीं न पाया, घट ही में हाथ आया ॥
घर ग़ैर के मत जाना, ज़नहार पता न पाना ।
भूले न मिले ठिकाना, सर धुन धुन पछताया ॥१॥
ढूंढ़ा कहीं न पाया, घट ही में हाथ आया ॥
दिल का पर्दा उठाकर, ज़रा आंख को दबाकर ।
सर को ख़म में लाकर, अर्श घरघर दिखाया ॥२॥

ढूंढ़ा कहीं न पाया, घट ही में हाथ आया ॥
हर शै में निहाँ है, माजरा अजब इयां है।
बे खुद बे गुमाँ है, बे निशां है नमाया ॥३॥
ढूंढ़ा कहीं न पाया, घट ही में हाथ आया ॥
आशिक में इश्क तू है, दर हिना ज़रदी तू है।
मुझे मुझसे गुफ्तगू है, अछूता ये गुल खिलाया॥४॥
ढूंढ़ा कहीं न पाया, घट ही में हाथ आया ॥

एज़न ॥११॥

नर रे अविनाशी है तू, पुरुषा परात परम तू॥
श्रुति परमान है तू, महा वाक्य वाक है तू।
वेदान्त वेद है तू, धर्मात्मा है धर्म तू ॥१॥
नर रे अविनाशी है तू, पुरुषा परात परम तू ॥
मन की निर्मलता है तू, बुद्धि की निश्चलता है।
चितकी उज्जलता है तू, निष्कामता है कर्म तू ॥२॥
नर रे अविनाशी है तू, पुरुषा परात परम तू ॥
जाग्रत जगत है तू, करता प्रकृत है तू।
समाधि परयन्त है तू, सूक्षम से है तरम तू ॥३॥
नर रे अविनाशी है तू, पुरुषा परात परम तू ॥
द्रष्टा दृष्टान है तू, ध्याता ध्यान है तू।
ज्ञाता ज्ञान है तू, अछूतानन्द है परम तू ॥४॥
नर रे अविनाशी है तू, पुरुषा परात परम तू ॥

नज़म ॥१२॥

है ज़ाहिर ज़हूर नहीं तारिक रती,
बैठ गोशे में कोई पुकारो मती।
है ताज़ा बताज़ा वो शजरे अरम,
हक़बीनी की ऐनक़ उतारो मती ॥१॥
है नूर का उसके ज़हूरे बक़ा,
कूए जानां में जा ललकारो मती।
है दैरो-हरम में उसी का अदल,
चरख़ कज़ पर आंख पसारो मती ॥२॥
है दू बदू वो जलवा कुनां,
खुद उकदा कुशा सर को मारो मती।
है वजूदो अदम में हक़ीक़त वही,
अनलहक़ की सदा बिसारो मती ॥३॥
यकताई में हरगिज़ दोताई नहीं,
टुक जुदाई को ले किलकारो मती।
दरे दिल में अछूतानन्द है सदा,
कहीं सहरा बसहरा सिधारो मती ॥४॥

नज़म, ऐज़न ॥ १३ ॥

है खुद खुदाई का दावा किसे,
जो मैं देखा तो मुझ में खुदा ही नहीं।
है किस से जुदा वो क़िबलानुमा,
कि बन्दा खुदा से जुदा ही नहीं ॥१॥

हैगा वो मुझमें और हूँ मैं,
वहदत में दुई वो बजा ही नहीं ।
है नहीं वो जुदा फिर दीखे कहां,
जुदा अगर वो है तो खुदा ही नहीं ॥२॥
है जोरो सितम का कैसा गिला,
अजब ये कि मुझमें जफ़ा ही नहीं ।
है महरो मोहब्बत दोताई कहां,
यकताई चश्म में वफ़ा ही नहीं ॥३॥
है असल में वसल विसाल कहां,
जाम फ़रके फ़राक़ पिया ही नहीं ।
है कुश्ते ग़म को ठोकर से क्या,
जो मसीहा वो है तो जिया ही नहीं ॥४॥
है ग़ैर जो उसको कहां से शफ़ा,
कोई दर्द हिजर की दवा ही नहीं ।
है होशो हवास क्या खामे खियाल,
बस अछूता किसी से छुआ ही नहीं ॥५॥

नज़म, ऐज़न ॥ १४ ॥

कोई लाख चलावे तीरो तफंग,
पर मेरे तो सर को ज़रर ही नहीं ।
कब गुज़र है शमसो क़मर का वहां,
पहुँचे लामकां पर ख़तर ही नहीं ॥१॥

है अबरो बर्क़ न आतिश की जलन,
वहां कुछभी किसीकी ख़बर ही नहीं।
ख़ुदी गुम हुई पहुँचा दूरो दराज़,
मिटी हस्ती ऐसा सफ़र ही नहीं ॥२॥
जिसके सर पर है ताज वहदत का,
कोई उससे शह ज़बर ही नहीं।
है आंखों में ज़ाहिरा वो दीखे कहां,
कि अछूता किसी की नज़र ही नहीं ॥३॥

नज़्म ऐज़न ॥ १५ ॥

इश्क़ ग़ैरों से करना बुरा ऐ दिला,
दिल को दर दर फिराना मुनासिब नहीं।
ख़ुद दिला महसूसात के फ़ंदे में आ,
ये लड़कपन दिखाना मुनासिब नहीं ॥१॥
यूं जाकरके घर पर किसी के दिला,
हतक अपनी कराना मुनासिब नहीं।
ख़ुद शग़ल में तहम्मुल से लाना इसे,
शोर नाहक़ मचाना मुनासिब नहीं ॥२॥
कुछ करो होश वरना हो रहना ख़ामोश,
चापलूसी जताना मुनासिब नहीं।
दग़ाबाज़ हैंगे बहुरंगे ये यार,
आंख इनसे मिलाना मुनासिब नहीं ॥३॥

क्यों क़ज़ा को बुलाता होकर छोकरा,
ऐसी आफ़त उठाना मुनासिब नहीं ।
रहम कर अपने ऊपर ज़रा ये दिला,
दार पर दिल चढ़ाना मुनासिब नहीं ॥४॥
यादकर उस मालिकके जिसने पैदा किया,
मुंह उससे हटाना मुनासिब नहीं ।
या खुद खुदाई का खुद दावा उठा,
खुद रसाई घटाना मुनासिब नहीं ॥५॥
सब बखेड़े झमेले छोड़दे यहांके यहां,
मुफ्त झगड़े बढ़ाना मुनासिब नहीं ।
हो करके अछूता न छूना ग़ैर को,
तौहीद अपनी मिटाना मुनासिब नहीं ॥६॥

गाना ॥ १६ ॥

देखो यार इक आन में,
क्या क्या ज़माना होगया ॥
कलतो थी चहचह चमन में, गुल पै बुलबुल थी फ़िदा।
हर बर्ग हर शाख़ पर, कुदरतकी क्या क्या थी अदा॥
जब चली बादह ख़िज़ां, न गुल न बुलबुल की सदा।
एक पलक की झलक में, गुलशन वैराना होगया॥
देखो यार इक आन में०,

अभी तो था ये भरा खज़ाना, ज़र जेवर हीरे पुखराज।
झूलें दर पर हाथी घोड़े जिनके उदय अस्त लों राज॥
निमेख एक में भये लंडूरे, न वो तख्त रहा न ताज।
जिस दिन चक्कर दिया अज़ाल ने, राख खज़ाना होगया॥२

देखो यार इक आन में०

जीते जी का जगत तमाशा, जिसमें देखे मात पिता।
तरुण भये तरुणी संग राचे, वृद्ध पुरुष को लात धिका॥
दूर खड़े दम बाज़ यार, जब रह गया खाली भात फिका।
तज काया को हंस यार, जिस दम रवाना होगया॥

देखो यार इक आन में०

रविकी रस्म समेट गोंथ रुच, पुनिपुनि गल पहने बनमाल।
मिरीचिकाजलसेभरीगगरिया चंचलगगनपुरुषकीचाल
बंध्यापुत्र खिलावे हस रस, नाम धरो मेरे जयपाल।
अछूतानन्द सब भ्रम पसारा, ज्ञान निशाना होगया॥
देखो यार इक आन में, क्या क्या ज़माना होगया॥

नज़म ॥ १७ ॥

है अजब नज़ारा यार का, खुद ही इशारा हो गया।
दिल दिलों के बीच में, दिलबर हमारा हो गया॥१॥
आया था किसी शहर से, इक हंस बिहंगम उड़ा हुआ।
सहरा के एक पेड़ पर, उसका उतारा हो गया॥२॥

बहुत मजमा थे जानवर, रहने वाले उस पेड़ के।
उसको भी किसी शाख पर, घर का सहारा होगया॥३॥
देखा जो तायरों ने उसे, यकता हुस्न में खुश जबाँ।
आंखों में हर एक के, वो हंस प्यारा होगया ॥४॥
देख देख कर हंस को, मशगूल खुशी में रात दिन।
सबों के दिलो जान में, उल्फ़त का तरारा हो गया॥५॥
सुहबत हुई हमदम हुए, बाकी न दम में ग़म रहा।
चन्द रोज़ वहां हंस का, हिल मिल गुज़ारा होगया॥६॥
लो यार हम चलते हैं, अपने वतन की याद में।
रहो शाद शादां सभी, ये पेड़ तुम्हारा हो गया ॥७॥
सुनते ही इस बात के, गुम होश हुए सब बेकरार।
बोले अब हमको भला, राहत से किनारा हो गया॥८॥
हम जितने हैं सबके सभी, चलेंगे तुम्हारे साथ ही।
रहना हुआ मुश्किल यहां, ग़म हम पै करारा होगया॥९॥
इस बज़्मका क़ज रफ्तार ने, दम में दम चहचहा दिया।
उड़ने को साथ हरएक का, पंख पसारा हो गया॥१०॥
हंस पलक की झलक में, ये गया यारो वो गया।
बस पहली ही मंज़िल में, सबका किनारा हो गया॥११॥
आया अकेला चल बसा, सब यहीं झमेला छोड़कर।
न हम न हमारा है कोई, अछूता ही नज़ारा होगया॥१२

गाना ॥ १८ ॥

क्या मज़ेदार तेरे बाल,
ऐ यार घूंघर वाले ।
दिल में रखते हो ख़ार, डसे पड़े आशिक बीमार ।
सुनो लाल मेरे दिल्दार, है नाग ज़हरीले काले ॥१॥
क्या मज़ेदार तेरे बाल०
हैं रेशम से नरम तार, कोई क्या जाने इसरार ।
हो गये कलेजे पार, अनीदार चमकते भाले ॥२॥
क्या मज़ेदार तेरे बाल०
दिल छीन हुए हुशियार, तीछी नज़र धारा तलवार ।
माशूकों के दीदार, देखन को भोले भाले ॥३॥
क्या मज़ेदार तेरे बाल०
ये अछूता है संसार, है जिसका वार न पार ।
नैया आन पड़ी मझधार, बेदर्दों से पड़ गये पाले ॥४॥
क्या मज़ेदारतेरे बाल०

गाना ॥ १६ ॥

हो विदेशी रे कान्हा,
कर गयो यार बेज़ार ।
पड़े गल में खुलड़े बाल, ब्रज बनिता फिरैं बिहाल ।
छल कर बैठे हो कराल, निकला कौन जनम का ख़ार ॥
हो विदेशी रे कान्हा०

कलेजा मुंह को बाहर आवे, दम घुट गुबार हो जावे।
अन्धकार घटा लहरावे, रोवें अबला नारे मार ॥

हो विदेशी रे कान्हा०

बालापन की हमरी प्रीत, गाये मिलकर मंगल गीत।
थोथे भये हमारे मीत, तोड़े हम से कौल क़रार ॥

हो विदेशी रे कान्हा०

हमको काहे करोगे याद, पूरी दिल की भई मुराद ।
ऐश कुबरी से दिल शाद, लाए देव अंगना पट नार ॥

हो विदेशी रे कान्हा०

ऐ करुणा रस सरकार, करो रोज़ शाही दरबार।
कहलाते तिसपर हो अवतार, अछूता होजगत करतार॥

हो विदेशी रे कान्हा०

॥ गाना ॥ नज़्म ॥ २०

क्या ख़ाक धरी अमीरी में, जो देखा मज़ा फ़क़ीरी में॥
न ग़म दुनियाँ का है उसको, न दुनियाँ से किनारा है।
न लेना है न देना है, न होला है न चारा है॥
क्या ख़ाक धरी तबदीरीमें, जो देखा मज़ा फ़क़ीरी में॥१
न अपने से मोहब्बत है, न नफ़रत ग़ैर से उसको।
सबों को जात हक़ देखे, यही उसका नज़ारा है॥
क्या ख़ाक धरी दिलगीरीमें, जो देखा मज़ा फ़क़ीरी में॥२

न शाही में वो शादां है, गदाई में न ग़म उसको।
जो बन आवे सोई अच्छा, यही उसका गुज़ारा है॥
क्या ख़ाक धरी जागीरी में, जो देखा मज़ा फ़क़ीरी में॥२
कुफ़र इसलाम से फ़ारग़,न मिल्लत से ग़र्ज़ उसको।
न हिन्दू गबरो मुसलिम है,बस अछूतानन्द पसारा है॥
क्या ख़ाक धरी मतगीरी में,जो देखा मज़ा फ़क़ीरीमें॥३

नज़म ॥ २१ ॥

संभल के कर भला जानां,जो तू अपना भला चाहे।
जरा दिलको पकड़ दिलसे,ये करलो जिसका जी चाहे॥१
शहीदे नाज़ हो कर के, बुतों से दिल लगा लेना।
सुख़न मस्ताना ख़ूबां से, ये करलो जिसका जी चाहे॥२
खुला बाज़ार उल्फ़त का, तमाशा गर्म है हमदम।
लुत्फ़ का जाम भरलेना,ये करलो जिसका जी चाहे॥३
बुतो क्यों नाज़ से चलते,क़दम धरते उछलते हो।
फ़ना का इमत्याज़ अपना,ये करलो जिसका जी चाहे।
नज़रबाज़ों की नज़रों में, जरा हँस ले चश्मतर से।
रहोगे शाद शादां तुम, ये करलो जिसका जी चाहे॥५
खिली है चांदनी दिल में, अँधेरा छायेगा आख़िर।
बस दुनियाँ चन्द रोज़ा है,ये करलो जिसका जी चाहे॥६
अछूता हो बदी से दूर, निकल जान दो आलम से।
निकोई ओज है मन्सब,ये करलो जिसका जी चाहे॥६

नज़म ॥ २२ ॥

बनाया दिल को बुतख़ाना, लासानी जिसमें हैराना।
न पकड़ो हाथ बेगाना, ये करलो जिसका जी चाहे॥१॥
ज़रा अपने में आप आना, मजा के इश्क को पाना।
आवारा हो न परवाना, ये करलो जिसका जी चाहे॥२॥
तलब तालब खुद मतलूब, बुतों की जुस्तजू क्यों है।
जनाबे इश्क़ रिंदानां, ये करलो जिसका जी चाहे ॥३॥
लूई बाजार उल्फ़तका, तमाशा होरहा दिलमें।
सरूरे जाम दीवाना, ये करलो जिसका जी चाहे॥४॥
ये हैगा नाज़ हर ख़रकह, शुग़ल अपना उछलता है।
तोहीदे बाम मरदाना, ये करलो जिसकाजी चाहे॥५॥
नजर से नज़र में आकर, चश्म में लाल लाली है।
यही इक़बाल शाहाना, ये करलो जिसका जी चाहे॥६॥
बदस्त आरद दिल मरा, पाय बर फ़लक बूदी।
अछूतानन्द मस्ताना, ये करलो जिसका जी चाहे ॥७॥

नज़म ॥ २३ ॥

लबे बाम दम खड़ा है, घड़ी पल में जान निकले।
क्या बेबसी है मामिल, मुंह से दंदान निकले ॥
तरसते वस्ल की ख़ातिर, तड़फते पड़े हजारों।
देखा तो दिल फँसे की, रुक रुक के प्रान निकले ॥२॥

बुते शोख के सितम का, गिल्ला क्या करूं मैं ।
मिलता नहीं वो गुमरा, थोथे पयमान निकले ॥३॥
करने पै क़तल मुझको, नेक नाम कर रहा है ।
लीये अजल खड़ी परवाना, लो ये ऐलान निकले॥४॥
गर जी को दहलाता हूँ, तो बेवफ़ा कहेंगे ।
ताने मिलेंगे खिलखिल, आशकाना शान निकले॥५॥
हैं राज़ी रज़ाये यार, तस्लीमे अशरफ़ हैगा ।
ज़रे तेग़ सरको खम कर, अच्छे अरमान निकले ॥६॥
है हिसाब ज़िन्दगी का, यूं हबाब पल न मारे ।
इस आसमां फटे से, क्या क्या सामान निकले॥७॥
क्या बेतरह का ग़म है, जिसमें न बाक़ी दम है ।
अछूता ये सितम है, खुद ही नादान निकले ॥८॥

गाना ॥२४॥

हैं गुनी न गुन की है बू,
बिन प्रान इन्सान हैं वो ॥

है जिनको नाहीं ज्ञान, नर देह में पशू समान ।
हृदय में नाहीं ध्यान, बिन गोहर सोप हैं वो ॥१॥
हैं गुनी न गुन की है बू, बिन प्रान इंसान हैं वो ॥
पढ़ पढ़ के भी न जाने, पण्डित हो वृथा बखाने ।
कोई कर्म धर्म न माने, बिन फल के पेड़ हैं वो ॥२॥
हैं गुनी न गुन की है बू, बिन प्रान इंसान हैं वो ॥

धन पाके भला न कीना, न किसीको दान दीना।
धन देख देख कर जीना, विन नीर सरवर हैं वो॥३॥
हैं गुनी न गुन की है बू, विन प्रान इंसान हैं वो॥
हैं दोस्त एतबार नाहीं, कोई क़ौल इक़रार नाहीं।
कभी दिलसे प्यार नाहीं, विन जानके बुत हैं वो॥४॥
हैं गुनी न गुन की है बू, विन प्रान इंसान हैं वो॥
अजब हुसन ग़ज़ब जवानी, बेमिसल सूरत लासानी।
नाहींजिनमें वफ़ा निशानी, विन तीर कमान हैं वो॥५॥
हैं गुनी न गुन की है बू, विन प्रान इंसान हैं वो॥
राजा महाराजा कहाते, दरबार शाही सजाते।
इंसाफ़से मुँह छिपाते, विन जलके बादल हैं वो॥६॥
हैं गुनी न गुन की है बू, विन प्रान इंसान हैं वो॥
अछूता फ़क़ीर आली, मुरशदी मुराद पाली।
हैं मारफ़त से खाली, विन तजल्ली चिराग़ हैं वो॥७॥
हैं गुनी न गुन की है बू, विन प्राण इंसान हैं वो॥

आसावरी टोडी ॥२५॥

आनन्द मगन हुआ मन मेरा।
परमानन्द अमृत रस पीकर अमर भया नर देरा॥

स्वयम् जोत स्वयम् झलकावे,
त्रिविध ताप भस्म हो जावे।
अंधकार अज्ञान नसावे,
भया प्रकाश उचेरा॥ आनन्द० १

न निरोध उत्पत्ती नहीं पावे,
मुक्त न बंधन रति सतावे ।
नहीं साधक न यती कहावे,
किधर गुरो कहां चेरा ॥ आनन्द० २
जीव अंश न ईश अविनाशी,
एक अद्वैत सर्व प्रकाशी ।
परमार्थ में काया काशी,
शिवोहम् शिव शिव हेरा ॥ आनन्द० ३
न विक्षेप न पुना एकाग्रत,
अनात्म धर्म समाधि अरु जाग्रत ।
अजर अमर पर पुरुष व्याग्रत,
अमरापुर है डेरा ॥ आनन्द० ४
ज्ञान ध्यान दोउ विसराने,
स्वयम् रूप आत्म दर्शाने ।
प्रकाश अक्रिया वेद बखाने,
है अछूता सर्व बसेरा ॥
आनन्द मगन हुआ मन मेरा ॥ परमा० ५

गाना ॥ २६ ॥

परमार्थ में निज रूप, मिथ्या भ्रम नचावत है ॥
पांच कोश ते आत्म न्यारा, जान सुजान ब्रह्म निर्धारा
ताते भिन्न जो जगत पसारा, बोलकूप भरमावत है ॥
परमार्थ० १

मिथ्या अधिष्ठानसे क्या घबरावे, रज्जुसर्प न काट न धावे।
ठूठ चोर न माल चुरावे, वृथा रार मचावत है ॥
परमार्थ० २

स्वप्नमें हो, राजा भिखारी, पाई निधी होत सुखारी।
सर काटे पर भया दुखारी, जाग्रत भ्रम नसावत है ॥
परमार्थ० ३

सब कुछ कर्ता तोउ अकर्ता न वह पुण्य पापसे डरता।
अछूता मरे न मारे मरता, अद्भुत रूप दिखावत है ॥
परमार्थ० ४

नज़म ॥२७॥

कर्म की गती को कोई क्या जाने,
ये हैं सब हीले ये हैं सब बहाने ॥
कोई योगी योग युक्त से कुमाता,
इन्द्री जीत यत का बीड़ा उठाता।
कोई भोगी भोगों में मन को लगाता,
जो देखा तो कुदरत के हैं सब निशाने ॥
कर्म की गती को कोई क्या जाने,
ये हैं सब हीले ये हैं सब बहाने ॥१॥
कहीं महल बंगले मिनारे खड़े हैं,
हीरे लाल मोती दरों में जड़े हैं।

फ़र्श मख़मली मेज़ कुर्सी अड़े हैं,
उठा डाले कुदरत ने ये सब ठिकाने ॥
कर्म की गती को कोई क्या जाने० ॥२॥
कहीं राजा राने बहादुर बहादुर,
खड़े हैं वज़ीर सिपह जंग नादर।
ख़ुदी के मकां में बन बैठे क़ादर,
इस कुदरत ने इकदम किये सब निमाने॥
कर्म की गती को कोई क्या जाने० ॥३॥
कहीं पर लुकमां अफ़लातूं कहाते,
धन्वंतर से पंडित जो मंत्र सुनाते।
ख़ुदाई का दावा ख़ुदा ख़ुद बताते,
न सके इस कुदरत का कोई पार पाने ॥
कर्म की गती को कोई क्या जाने० ॥४॥
कोई क़ौम आला से आला कहाती,
हर कौम डर डरके उंगली चबाती।
क़दम धरते धरती भी थरथराती,
वह कुदरत की मारी लगी ख़ाक उड़ाने ॥
कर्म की गती को कोई क्या जाने० ॥५॥
इस दुनियाँय दूं का कोई पार नाहीं,
सब सुखिया न दुखिया इकबार नाहीं।

धन जोबन किसीका सदा यार नाहीं,
ये कुदरत के यारो सभी हैं पैमाने ॥
कर्म की गती को कोई क्या जाने०॥६॥
इक ऐसे हज़ारों पदार्थ जो खाते,
कोई रूखे टुकड़े पानी से चबाते ।
इक पहनें पोशाकें इक जोड़े उठाते,
हैं कुदरत के ये खेल कोई क्या पहिचाने॥
कर्म की गती को कोई क्या जाने०॥७॥
है पापी कोई नित पाप कमाता,
कोई सन्त हो सत्संगी कहाता ।
है दुनियां ये रंग बेरंगी तमाशा,
ये कुदरत फ़लक को देती है ताने॥
कर्म की गती को कोई क्या जाने०॥८॥
ये जोबन जवानी हुसन है दीवाना,
मज़ा जिन्दगानी में है ये निशाना ।
जो करना है करले आखिर सब बेराना,
अछूता ये कुदरत के हैं कारख़ाने ॥
कर्म की गती को कोई क्या जाने,
ये हैं सब हीले ये हैं सब बहाने ॥६॥

नज़म ॥ २८ ॥

माशूकानां पुरजोश जफ़ा देखता हूँ,
चुलबुली चंचल अदा देखता हूँ ॥१॥

बचा ऐ खुदाया इन ज़ालिमों से,
ज़ुलम करना इनको रवां देखता हूँ ॥२॥
ग़ज़ब का लड़कपन हुसन है दीवाना,
मिज़ाज़ अल्ला नाज़ुक ख़फ़ा देखता हूँ ॥३॥
कभो दूबदू हो मुखड़ा दिखाते,
फ़लक फट पड़ा बला देखता हूँ ॥४॥
हँसना जो इनका था राज़ पिनहां,
क़तल करने आई क़ज़ा देखता हूँ ॥५॥
भोली भाली सूरत चुराती है दिल को,
ये धोका जो इन में वफ़ा देखता हूँ ॥६॥
रहम होता दिल में तो बढ़ कर ग़ज़ब था,
सितम पर मजमा फ़िदा देखता हूँ ॥७॥
न उछला कोई गिरकर बहर उलफ़त,
कुये जानां दीवार क़हक़हा देखता हूँ ॥८॥
सब कहते हुसन चन्दरोजा फ़ना है,
फ़ना पर जमाना फ़ना देखता हूँ ॥९॥
इस हुसन परस्ती से रहना अछूता,
इसी से दो अलम बक़ा देखता हूँ ॥१०॥

नज़म ॥ २६ ॥

हुआ दिल दीवाना ऐ जानां संभालो,
मेरी नाहीं सुनता ज़रा तुम बुलालो ॥

इधर उधर से मैं लाया भुलाकर,
　रिझाता हूँ मैं उसको चन्दा दिखाकर।
गया फिर मचल नाज़ अपने में आकर,
　वो जाता है भागा ज़रा तुम हटालो ॥
हुआ दिल दीवाना ऐ जानां संभालो,
　मेरी नाहीं सुनता ज़रा तुम बुलालो ॥१॥
क्या जाने कहां से धसा जनूं इसमें,
　या जंगल छोड़ आबसा मजनूं इसमें।
न यंत्र चले है न चले अफ़सूं इसमें,
　है जादू नज़र में ज़रा तुम चलालो।
हुआ दिल दीवाना ऐ जानां संभालो ॥२॥
　न है चैन दिल में न शब को है राहत,
तड़पने भड़कने की दम दम शिकायत।
　न इबरत किसी की न सुनता हिकायत,
शायद तुम से माने ज़रा तुम बुलालो ॥
　हुआ दिल दीवाना ऐ जानां संभालो ॥३॥
रकीबों से जिसको मुहब्बत है हरदम,
　न जीने की शादी न मरने का है ग़म।
फिरे है आवारा होकर मुझसे बेग़म,
　है हम से वो रूठा ज़रा तुम मनालो।
हुआ दिल दीवाना ऐ जानां संभालो ॥४॥

भला रे भला दमबाज़ ऐ दिला रे,
किया रुसवा हमको खुद आप जा मिला रे ।
जो था राज़ पिनहां वो हम पर खुला रे,
कुछ हो कसर बाक़ी तो वो भी निकालो ॥
हुआ दिल दीवाना ऐ जानां संभालो ॥५॥
कफ़े दस्त मलता हूँ हसरत से दम दम,
मेरे नैना से अश्क बरसें हैं छम छम ।
दिले सोज़ासे आहें निकलें हैं रम रम,
अबर बारां होकर ये सोज़हा बुझालो ॥
हुआ दिल दीवाना ऐ जानां संभालो ॥६॥
न दुख दे न दम दे न ग़म दे सितमगर,
ये फ़रियादो नारे न सुनते सितमगर ।
अछूता क्या शिकवा जो हैंगे सितमगर,
काटेंगे नाग काले दूध कितना पिलालो ॥७॥
हुआ दिल दीवाना ऐ जानां संभालो,
मेरी नाहीं सुनता ज़रा तुम बुलालो ॥

नज़म ॥ ३० ॥

ज़ेह क़िसमत ख़ुदा तालय, जो वफ़ा शआर होता ।
जहां उलट क्यों न जाता, जो ज़ाहिर दीदार होता ॥१॥
दिलो जां निसार होते, कुछ ज़रा इज़हार होता ।
इक नज़र पर फ़ैसला था, सौ वार बलिहार होता ॥२॥

मिला होगा दिल किसी को, बावफ़ा कुये जानां।
है पहलू में वसल यार, अगर दिल दिल्दार होता॥३॥
दुई का नक़ाब रुख़ पै, डाला खुद बखुद ने।
टुक होता शऊर इस में, तो क्यों ख़ाकसार होता॥४॥
ग़ैर हक़ न हो मशगूल, दिला हक़ जो है सो ये है।
कहीं जुदा जो हम से होता, शायद आशकार होता॥५॥
शौक पुरफ़िज़ा ये अपना, असूल मारफ़त हैगा।
अछूतानन्द ऐन उक़बा, जो फ़क़त बेदार होता॥६॥

गाना, भैरवी ॥ ३१ ॥

जैसी वा दिन बजाई बंसी रे कान्हा।
फेर बजा जाई हँस के॥

रास-बिलास करत सखियन संग, बिंद्राबन में बस के।
जाये पताल काली नाग नाथो, जमुना जी में धस के॥१
रे कान्हा फेर बजा जाई हँस के, जैसी०
मथुरा में कुबजा संग राचे, कंठ लगाई कस के।
दासी से पटरानी कीनी, चन्दन लाई घिस के॥२
रे कान्हा फेर बजा जाई हँस के, जैसी०
अछूता होकर कंस पछाड़ो, काम किये सब यश के।
प्रेम भाव के भूखे स्वामी, रसिकबिहारी रस के॥३
रे कान्हा फेर बजा जाई हँस के, जैसी०

नज़म ॥ ३२ ॥

सत् पुरुष आनन्द पाते हैं, सुख से गुज़र जाते हैं ।
मैल मन में नहीं लाते हैं, सुफल जन्म को करजाते हैं ॥१
क्षुधावन्त को भोजन कराते, नंगे तनपर वस्त्र उढ़ाते ।
गिर पड़े को पकड़ उठाते, गुप्तदान को कर जाते हैं ॥२
अतिथी की सेवा करते वो, हृदे में धीरज धरते वो ।
देख दुखी का दुःखहरतेवो, पर उपकार को करजाते हैं॥३
भलाकर कर दिलसेभुलाते, परउपकारकोमुखसेगाते।
निरादरनाहींकिसीकाचाहते,व्रतकठिनकोकरजातेहैं॥४
राहे रास्तपर जो चलता है, हराभरा सदा फलता है ।
निजस्वरूपसे नाहींहलताहै,उज्वल कर्मकोकरजातेहैं॥५
कार्य्य कारन हैगा सोना, वाचा विकार से क्याहोना।
अक्सरअन्तसोनेकासोना,उत्तमविचारकोकरजातेहैं॥६
कारणब्रह्मजगतका स्वामी,कार्यघटघट अन्तरयामी ।
अछूतानन्दसदाअपरिणामी,अभेदज्ञानकोकरजातेहैं॥७

गाना, राग, बरवा ॥ ३३ ॥

ज़िन्दगानी में जवानी, भई दीवानी यार वे ॥
मधु मतवाला पीकर प्याला, दृष्टि फ़लक पर तानी ।
बन शहबाज़ चढ़ीअबलक पर, न सूझे कोई सानी ॥
भई लासानी यार वे ॥ जिन्दगानी० १

ऊंच नीच नज़र न आवे, गावे है मन मानी।
भक्ष अभक्ष पदारथ खावे, या में रसना सानी ॥
भई मस्तानी यार वे ॥ जिन्दगानी० २
हो बदकार कुसंग में जाकर, बन बैठी दिलजानी।
निशि बासर लोलुपता कर कर, विषयन में लिपटानी ॥
भई नादानी यारवे ॥ जिन्दगानी० ३
सत्संगत में शान्ति पावे, पीकर अमृत पानी।
अछूतानन्द भले बुरे की, है ये मालिक ज्वानी ॥
भई शादमानी यारवे ॥ जिन्दगानी० ४

भजन ॥ ३४ ॥

हो दीनानाथ शरण तेरी आयो जी ॥
नाथ तुम्हारे हाथ स्वामी, घट घट के तुम अन्तरयामी।
फिर क्यों ऐसा भटकायोजी॥ हो दीना नाथ शरण० १
भव सागर में पड़ी है नैया, तुम बिन को है पार लगैया।
खा खा गोते घबरायो जी ॥ हो दीनानाथ शरण० २
आन लगा प्रभू दामन तेरे, सब अपराध क्षमा कर मेरे।
क्यों दिल से बिसरायो जी॥ हो दीना नाथ शरण० ३
हूँ बालक तुम पिता हमारे, पावन होकर पतित उधारे।
अछूता होकर भरमायो जी ॥ होदीनानाथ शरण० ४

नज़म ॥ ३५ ॥

दिले दुशमन बग़लमें कहां, फिर ऐसी जुस्तजू क्योंहै ।
यगाना और बेगाना कौन, दुईफिर दूबदू क्यों है ॥१॥
क्या ढूंढा देर काबे में, न कुछ का कुछ निशां पाया ।
न ज़ाहिर है ये पिनहां कौन, लासानी हूबहू क्योंहै ॥२॥
ये मिहरो सितम हैं किसमें, ज़ुलम ज़ालम क्या मज़लूम ।
किधर नेको बदीकबसे, फिर ऐसी आरज़ू क्यों है ॥३॥
है सुनता कौन कहेंकिससे, ज़बां और गोश नामुमकिन ।
फ़लक का आसमांहैकौन, फिर ऐसीगुफ्तगू क्यों है ॥४॥
गरदगर्दूं की गरदिश में, मकां है लामकां किस का ।
अछूता कीमकीं बाशद, न दानद फिरअदू क्यों है ॥५॥

नज़म ॥ ३६ ॥

हो दयावन्तकरदयापरम्, जीवअंशका पर्दा उठादीजो ।
पुनःदयादृष्टिऐसीकरनी, ममब्रह्मविदगुरूमिलादीजो॥१
देहधरेकेधर्म अधर्मसभी, कृपा कारकऔरकर्मसभी ।
येलोकलाजऔरशरमसभी, पुनमूलाअज्ञानमिटादीजो२
संसर्गके झगड़े दूरकरो, मम लोभ मोहसब चूरकरो ।
बन्धुवर्गफ़ैसलाहजूरकरो, यककैवल ज्ञानजलादीजो॥३
आसा तृष्णाकोमारदेउ, ममता मायाको जार देउ ।
जड़ईर्षाकीउखाड़देउ, सत्संतोषकाजलसाजमादेउ ॥४

षटउरमीदेहविकारीहै, नितनितप्रणामीव्यभिचारीहै।
विद्याअविद्याकीक्यारीहै,जीवनमुक्तिकापन्थबतादेउ॥५
स्वरूपानन्द प्रकाश करो, हृदयमें दृढ़ विश्वासकरो।
सब कार्य्य हमारेरास करो,हंब्रह्म का मंत्र सुनादेउ॥६
है सत् चित् आनन्द तुही, अद्वैत अखण्डानन्द तुही।
अजअमरपरमानंदतुही,अछूतानंदकाबाजाबजादीजो७

नज़्म ॥३७॥

लखूखा वेद शास्त्र, कुतुब हाय बे शुमार।
कहते कैसा है फ़लक, जिसमें लटक जहां रहा॥१॥
क़बल मनज़्ज़ा मुबर्रा, लासानी बता बता कर।
फिर है तक़रीर उनकी,आलम उसका निशां रहा॥२॥
जा करके बुतखानों में, कर हज़ारों प्रार्थना।
क़ाबे में सर झुकाकर, दर पर ईमां रहा॥३॥
माफ़ी के खुआतगार, बनकर गुनहगार।
वो है रहीम करीम, ऐसा उनका गुमां रहा॥४॥
आक़िल और जाहिल, मिल कर दुआयें मांगते।
हैगा रहबर वो कामिल, हर सू महरबां रहा॥५॥
ज्ञान का तलबगार, कहता सर्वज्ञ उसको।
इल्मकुल है वो ख़ालिक़ ये सब का बयां रहा॥६॥
ज़ोर का जो है तालिब, अनन्त शक्ति से पुकारे।
मुम्बा सरवरसे है सुख, क़ायम अमनो ईमां रहा॥७॥

दुश्मनों को फ़तह करना, असुर संहार करके।
खिरामे नाज़ में अवतार होकर शादमां रहा ॥८॥
ये सब ही हरीसों का, दार और मदार है।
खुलासा मतलब नामालूम, कि है क्या कहाँ रहा॥९॥
खला वो इच्छया रहित, मुतलक़ निर्दोष है।
अछूता न छूआ जाय, जिसका लामकां रहा ॥१०॥

गाना, दादरा, कहरवा ॥३८॥

होजाना फ़क़ीर छोड़ दे बाबा,
होजाना फ़क़ीर और क्या बाबा ॥

चार दिन का रैन बसेरा, है जगत बे पीर।
मन मारे तन बस करे, यही है अकसीर ॥
छोड़ दे बाबा होजाना फ़क़ीर १

आशिक़इश्क़ आप अपनेमें, ना होवें दिलगीर।
दिल लगी के मारे पड़े हैं, रोवें रांझा हीर ॥
छोड़ दे बाबा० २

जो दम गुज़रे सोई वाहवा, क्या करनी तदबीर।
शाकिर हैं शुकर आपका, कैसी है तकदीर ॥
छोड़ दे बाबा० ३

दिल दिलदार सदाहैहमदम, गैर न दामनगीर।
है न खुदी खुद में खुद की, वे खुद है तासीर॥
छोड़ दे बाबा० ४

मतलब के हैं यार दुरंगे, मतलब की तक़रीर।
बिन मतलब केकौन किसीका, मतलब हैगा पीर ॥
छोड़ दे बाबा० ५
रहें आज़ाद सदा हैं बेग़म, नाहीं शाहो वज़ीर।
हैंन किसीके कोईन हमारा,मुफलिस नाहींअमीर॥
छोड़ दे बाबा० ६
शाह शहन्शाह मूंड मुड़ाकर,डारी गलमें लीर।
लेकर फिरें फ़कीरी बाना, यही है आदि लकीर॥
छोड़ दे बाबा० ७
खुश रहो आबाद रहो जी, सदा ये दिल पज़ीर।
न बिसरो न याद रहो जी, अद्भुतानन्द फ़क़ीर ॥
छोड़ दे बाबा० ८

रागनी, पहाड़ी ॥३९॥

हँसके गुज़ारी जाना, सांई नाल नेह लाना।
राजा और राना सब नंगे पैर जावना ॥
प्रेम वचनका गीत सुनाना, देखदुखियाका दर्द बटाना।
दयाबीजको दिलमें जमाना, निरदै नहीं कहावना ॥
हँस के० १
नहीं कुछ लाया न लेजाना, मुफ्तका क्यों शोर मचाना।
मेरा मेरी करकर मरजाना, मुड़ कर नहीं आवना ॥
हँस के० २

होते न रखना देकर खाना, नेकी कम सिखलाते जाना।
मानुष जन्म वृथा न गँवाना, निष्फल नहीं जावना॥
हँस के० ३

स्वप्न में चन्दा दिखलाना, दारफ़ूनि में नज़र जो आना।
लालके लालच पीक उठाना, धोके में नहीं आवना॥
हँस के० ४

धर्म सत्यका बीड़ा उठाना, झूठ जबांपर कभी न लाना।
अद्भुतानन्दका फ़रमाना, असत्य को नहीं कमावना॥
हँस के ५

गाना॥ ४० ॥

वो भूले हम को बैठे हैं।
जिन्हें हम याद करते हैं॥

क्यों नहीं लेते हमारी ख़बर बन कर बेख़बर।
सद हैफ़ सितम अफ़सोस अलम,
हमें बरबाद करते हैं॥ वो भूले हम को० १

अजब है आशिकी निअमत, अता की इश्क़ने हम को।
जो आशिक़ हैं वो ग़म खाकर,
दिलको शाद करते हैं॥ वो भूले हम को० २

किया ज़ाइल ख़ुदी को, बेख़ुदी की ख़ाकसारी ने।
अजब जौहर है ये जिससे,
कुश्तहं फ़ौलाद करते हैं॥ वो भूले हम को० ३

जो पाले प्यार से जिसको, न कुश्तह तन करें उसको।
ये करते हैं बरबाद उस को,
जिस को आबाद करते हैं॥ वो भूले हम को० ४
खुदाही जाने ये माशूक़, तुदरत मआब है क्या चीज़।
दग़ा बद कर उसे देते,
जिसे उस्ताद करते हैं॥ वो भूले हम को० ५
ये हँस कर मारते ज़ालिम, निराली चाल है उनकी।
अछूता इन से हो कर रहना,
ये बेबुनियाद करते हैं॥ वो भूले हम को० ६

गाना ॥ ४१ ॥

उमरिया सुफल भई।
याने प्रभू चीना॥

मानुष जन्म जन्म है दुर्लभ, आत्म रङ्ग में भीना।
इन्द्रियां अचल भईं, याने प्रभु चीना ॥१॥
अभेद भक्ती है धर्म जीवका, ज्ञानसे निर्मल कीना।
नज़रिया उज्ज्वल भई, याने प्रभू चीना ॥२॥
सार अंस जगत में ये है, उत्तम जीव का जीना।
ऐश्वर्या अटल भई, याने प्रभू चीना ॥३॥
द्वैत अद्वैत से जो पर है, अछूता अमृत पीना।
उमरिया नवल भई, याने प्रभू चीना ॥४॥

लावनी ॥ ४२ ॥

आत्मा सब से प्यारा जी।
सत् चित् आनन्द जगत है जिस का उजारा जी ॥
सुनाऊं तुम को हाल सारा।
कर तफ़सील सुखकी, जैसे यह है आत्म प्यारा।
यही सब देह में है उजारा।
उत्तरोत्तर बली सबसे, यह है आत्म प्यारा ॥

शेर

आत्म सुख को मूढ़ भी, दूर करता था नहीं।
मगर होना जुदा दिलसे, मंज़ूर करता था नहीं ॥
इसके आगे और सुख, मशहूर करता था नहीं।
आत्म की चाहना को कोई, अबूर करता था नहीं ॥

दोहा

ध्यान में लाता था बशर, इस को ही दिन रैन।
बिना याही सुख के देखे, नहीं पड़े तन चैन ॥
और सुख दिल से बिसारा जी।
सत्चित् आनन्द जगत है जिसका उजारा जी ॥१
जगत में आदि द्रव्य प्यारा।
ऊंच नीच सब बग़ैर इसके फिरते हैं अवारा॥
है ज़र का अजब नज़ारा।
शाहओ वज़ीर लेकर अमीर बांधाजगत सारा॥

शेर

धन दौलत की खातिर, दर बदर जाते हैं सभी।
करकर कुकर्म नीच होकर, इसको कमाते हैं सभी॥
हजारों आफ़त सरपै लेकर, धन को लाते हैं सभी।
इक़बाल इज़्ज़त है इसी से, हर जापै पाते हैं सभी॥

दोहा

ज़र बग़ैर बेपर नर को, नहीं पड़ता आराम।
इसी फ़िकर में रैन दिवस, नहीं एक पल विसराम॥
फिरे है मारा मारा जी।
सत् चित आनन्द जगत है जिसका उजारा जी॥२
धन से है पिसर प्यारा।
पिसर का दुःख देखकर दिल होवे पारा पारा।
पुत्र आंखों का है तारा।
लख़्ते जिगर की ख़ातिर जगत सब फिरे मारा मारा॥

शेर

देख दुखिया पिसर को, माता पिता को ग़म हुआ।
गिर पड़ा आकाश फट कर, सर पर अजब आलम हुआ॥
ग़ैर हालत चश्मे नम, हर दर पै जा सर ख़म हुआ।
की बहुत तदबीर लेकिन, पिसर दुःख न कम हुआ॥

दोहा

लुटाने लगे घर बार को, दोनों हाथ पसार।
कर कर हज़ारों यत्न हीले, सर मार पुकार पुकार ॥
पिसर पर सब धन वारा जी ॥ सत्‌चित्‌ आनन्द० ३
पुत्र से है देह प्यारा,
बांधते हैं देह की खातिर, तीर तरकस कटारा ।
जो आया सामने पछारा,
देह के बल से बड़े बड़े, नर वीरों को मारा ॥

शेर

देह की रक्षा के ख़ातिर, कोट गढ़ बनाते हैं सभी।
ला ला के हज़ारों न्यामतें, इसको खिलाते हैं सभी ॥
लड़ लड़ के राजा राने, महा भारत मचाते हैं सभी।
गांधारी की कथा को, सभा में सुनाते हैं सभी ॥

दोहा

आपत काल में बेचते, नारी घर और माल।
पिसर फ़रोख्त करदिये, अती पड़ी जब काल ॥
देह का किया गुज़ारा जो ॥ सत्‌ चित्‌ आनन्द० ४
देह से है इन्द्री प्यारी,
बिन इन्द्री के सकल देह, होजाये हेचकारी।
इन्द्री भंग की है खुवारी,
शोभा बशर की इन्द्री जिसकी, है खुशनुमा सारी ॥

शेर

मार पड़ने के वक्त, सरको झुकाता था बशर।
नाक आंख और मुंह को, इससे बचाता था बशर॥
धौल लाठी ईंट पत्थर, पीठ पर खाता था बशर।
गिर पड़े मुंह को दबाकर, चूतड़ उठाताथा बशर॥

दोहा

है शुकर ईश्वर का बड़ा, बच गई है आंख।
बिगड़ जाता सब ठाठजी फूट जाती कहीं आंख॥
देह को इनका सहाराजी॥ सत् चित आनन्द० ५
इन्द्री से हैं प्राण प्यारे,
नखशिख तलक सब देह में, हैं यही पसारे।
हैं ज्येष्ठ श्रेष्ठ सारे,
खान पान को प्राण सामान, भाग करे न्यारे॥

शेर

बढ़ कर गुमान सबको हुआ, इस देह के दरम्यान।
आंख कान मुख नासिका, करें हैं गुमान गुमान॥
हम बग़ैर इस देहकी, बड़ी है मुश्किल पहचान।
सुन सुन खामोश हो रहे, जो मालिक थे जान॥

दोहा

प्राण कहिं हम चलते हैं, क्यों करते हो तकरार।
हुआ मृतक पलमें देह, नहीं लागी इक बार॥

यार जब प्राण सिधाराजी ॥ सत् चित् आनन्द० ६
प्राण से प्यारा आत्म जान;
कर विचार नर सोच समझ, यही ज्ञान सुजान ।
क्यों क्यों बनते हो नादान,
है स्वरूप तद्वत् यह तेरा जिस पर प्राण कुर्बान ॥

शेर

प्राण को जब आन कर, होता है दुख से तिलमिला ।
होकर उदास प्राण देह से, करते हैं दमदम गिला ॥
दस्त बस्ता खड़ा कहता, माफ़ कर होगा भला ।
इस देह दुखिया से निकलकर, आत्मसुखमेंजामिला ॥

दोहा ।

आत्म सुख में जा मिल, होकर स्वयं प्रकाश ।
अद्भुतानन्द अजर अमर, हैगा चिदा आकाश ॥
आत्मा सब को प्याराजी ॥ सत् चित् आनन्द० ७

गाना ॥४३॥

जब याद तेरी आती है ।
घर भूल जाता यार का ॥

मृगा को खेती खाती है, उत्तर बैनी उत्तर को बहाती है ।
खुश्की में नाव तिराती है, टुक खेल देखा करतार का ॥
जब० ॥१॥

पुरुष घर में नार कमाती है, उजली की बुरी खियाती है।
नकटी ही दिल को भाती है, क्या सौदा लुटता बाज़ार का॥
जब० ॥२॥
मेंढक हाथी को डराती है, रुई अग्नि को जलाती है।
पवन पर्वत को उड़ाती है, ये तमाशा होता इशरार का॥
जब० ॥३॥
है क़ैद बुलबुल ज़ाग़ आज़ाद, पिंजरे में हो रहा बाघ शाद।
हां हूँ का है न अन्त आदि, न क़फ़स खुलता प्यार का॥
जब० ॥४॥
गूङ्गे ही राग अलापते, ज़बां वाले उँगली चाबते।
अंधों के हो रहे ज़ाबते, नहीं पर्दा अछूता यार का॥
जब० ॥५॥

नज़्म ॥ ४४ ॥

आसार रोज़गार के कुछ और, ज़ाहिर ज़हूर हुए जाते हैं।
जो थे हमरक़ाब यार यारो, अब दूर हुए जाते हैं॥१॥
स्याह मू बेवफ़ा निकले, अब सफ़ेदी पासवां हुई।
ये बुढ़ापे के थे इज़हार, यार मशहूर हुए जाते हैं॥२॥
भुला दिया उन दिनों में, शबाब की ज़बरदस्ती ने।
ग़फ़लत कदे से देहर के, चूरा चूर हुए जाते हैं॥३॥
पड़े थे लाल डोरे, चश्म में चश्म लड़ाते थे।
अब अश्कों ने धो डाले, पी लिया सुरूर हुए जाते हैं॥४॥

होशो हवासो अक़ल ये मिल कर दग़ा करने लगे।
इनकी शिद्दत से अनासर भी, ये फ़तूर हुए जाते हैं॥५॥
इस पर भी न समझे, चोबदस्ती दस्त में लेकर।
क़दम के डिगमिगाने पर भी, दारे मनसूर हुए जातेहैं॥६
लग रही जीने की आस, मरने को बस धोका कहते।
दीदह दानिस्त होकर भी, कम शहूर हुए जाते हैं॥७॥
आखिर वक्त लगे पछताने, जब हुई हैरत तारी।
अछूता के श्री हुजूर में, अब मंजूर हुए जाते हैं॥८॥

रसिया ॥४५॥

ऐसो निडर निलज भयो कान्हा।
लेकर चीर कदम चढ़ झांके॥
हम अबला लाज की मारीं।
अरे रह रह जमुना जल अंग ढाके॥ऐसो०॥१
मन मानी तेरी नहीं होगी।
अरे रह रह इधर उधर क्या ताके॥ऐसो०॥२
करे अनीति रे मनमोहन।
अरे रह रह लोग गावेंगे साके॥ऐसो०॥३
घर में जा परख बुढ़िया को।
अरे रह रह क्यों उलटी जमुना हांके॥ऐसो०॥४
बनो अछूता इस करनी पर।
अरे रह रह कर दर्शन नैनां छाके॥ऐसो०॥५

नज़्म ॥ ४६ ॥

दुई का जब उठा पर्दा, न कुछ हमने जुदा पाया ।
जिसे कहते थे बन्दा हम, वोही हमने खुदा पाया॥१॥
जो पूछो दीदबाज़ी में, क्या तुमको हाथ आया ।
तो कहदूं नूरका जलवा, खुदा जाने खुदा पाया ॥२॥
नज़र में खुद नज़र होकर, मेरे दिल को हुस्नो जमाल ।
जोथाआईनासाफ़दिल,तजल्लीदिलकीदिलरुबापाया।३
खुदी में खुद हुए ग़ायब, न बाक़ी तलब तालिब था।
उठा हर चारसू पर्दा, हरशां में जलजला पाया ॥४॥
यहीं था दिल मेरा दिलबर, यही था दिलरुबा मेरा।
हक़ीक़त में हक़ीक़त का, हक़ीक़त में पता पाया ॥५॥
जुदाई मर्ज़ थी दिल को, दवाई खुद बखुद होकर ।
जो था दर्दे अलम जिगर, यही दरमां शफ़ा पाया॥६॥
कहां था ग़ैर हक़ कोई, हटा कर नक़ाब जब देखा ।
जोबुलहविस की अग़यार त्रू, वही गुल आशना पाया॥७
है हर कालिब में यही, तो फिर है क्या धोका ।
यही सूरत हैगा सनम, यही सूरते खुदा पाया ॥८॥
यही हरकत न समझे लोग, खुदा की खुद खुदाई को ।
हक़ीक़त में हैगा अछूता, मारफ़त में खुद मिला पाया॥९

नज़म ॥४७॥

सर दे चुके दरे जानां पै, जानां न जाना तो क्या।
दिल अपनी तोड़ निभा चुका, जानां न जाना तो क्या॥१
है राज़ पिनहां ये आशिकी, गो ज़ाहिरा में कुछ न हो।
है मसल दिल तो जानता, जानां न जाना तो क्या॥२
ये लहर दिल की दिलरुबा, न ग़ैर दिल का मुद्दआ कोई।
पर्दा उठा दिल ने दीया, जानां न जाना तो क्या॥३
इश्क आशिक माशूक खुद, है रमज़ आलम की यही।
दिल दे चुका जब फैसला, जानां न जाना तो क्या॥४
हिजर और वसल से बरतर, हैरत का ख़ाका उड़ गया।
दिल झड़ा होकर अछूता, जानां न जाना तो क्या॥५

नज़म ॥ ४८ ॥

ज़ुलम मज़लूमों पर ज़ालिम, बढ़ाना क्या भला होगा।
दिले सोज़ाँ तपे ग़म का, जलाना क्या भला होगा॥१
अगर करना क़त्ल होवे, सफ़ाई हाथ की करना।
रुकी शमशेर गर क़ातिल, चलाना क्या भला होगा॥२
जो थे पैमान हम से, हम को भी जानते हो।
ख़िरामे नाज़ शोखी से, भुलाना क्या भला होगा॥३
हैफ़ क़ैद में भी क़ैद, न ज़बां को हिला सके।
क़फ़स में तायरों का बन्द, दाना क्या भला होगा॥४

अशरफ़ सुने जहां में, ऐ बेदादी सैयाद ।
तिरछी निगाह कर नावक,लगाना क्या भला होगा॥५
अवार गाने इश्क़ में, होकर ख़ाक उड़ चुके ।
उफ़ उड़ गई ख़ाक का, उड़ाना क्या भला होगा॥६
क़बल था क़ौल हम से, कि हम हैंगे तुम्हारे ।
ग़ैरों को घर में ज़ाहिर, बुलाना क्या भला होगा ॥७
कीया वो जो न करना था, कीया था तुमने हमसे ।
कर करा कर शेख़ी का, दिखाना क्या भला होगा॥८
जफ़ा करने से ग़र गर्ज़, इम्तिहाने वफ़ा की ।
तो काह कब तलक ऐसा,आज़माना क्या भला होगा॥९
न ऐसा ज़लील करना, ख़ाना ख़राब करके ।
कुश्तह तन को खैंचकर,रुलाना क्या भला होगा॥१०
अछूता हो लगन से, ये बढ़ कर है हलाहल ।
बता ज़हरीली गांठों का, खाना क्या भला होगा ॥११

नज़्म ॥ ४९ ॥

सर ख़म हुआ ज़ेर तेग़, फिर उठाना है बड़ा मुश्किल ।
मुण्ड कटे हुएको रुण्ड पै,फिर लगानाहैबड़ा मुश्किल॥ १
इस कार मजाज़ी की धारा,बढ़कर ग़ज़ब हाय ग़ज़ब।
जो बह गया बहरे इश्क़,फिर तराना है बड़ा मुश्किल॥२
यही .जन्नत की हैगी गली,या हैअदमका यही बाज़ार।
जा करके कुए जानां, फिर आना है बड़ा मुश्किल ॥३

खाक हुए हज़ारों आशिक़, ख़ाकसारी में ख़ाक होकर।
उल्फ़तकीआतिशलगाकर, फिरबुझानाहैबड़ामुश्किल ४
यही लुत्फ है क़हक़ह दीवार, न बाक़ी नामोनिशां रहा।
जो गुम हुआ खुदबखुदमें, फिरजगानाहै बड़ामुश्किल॥५
दरे जाना पै जो गिरा, न रहा जिसको आना जाना।
इस नक़्श तायरदीवारका, फिरउड़ानाहैबड़ामुश्किल॥६
हैगी आईने में आब, न आईना आब देखेगा।
है मायनी में जो अछूता, फिर छूना है बड़ा मुश्किल॥७

नज़म ॥५०॥

गरद गरदूं की गरदिश से, ज़माना जा रहा है।
शरारे बर्क़ हस्ती का, नमूना दिखा रहा है॥१
गुलशने हस्ती में है, नज़ारा इक नज़र का।
गुल मुंह को झट दिखादे, पट खिज़ां आ रहा है॥२
उमर भर ये हाल गुजरे, एकसा क्यों कर हमदम।
गुलशन में फूल खिलकर, कब दोपहर तक रहा है॥३
पर्दा उठा कर दिल का, अक़्ल को नज़र में ला।
फ़लक बेपर्दा होकर, क्या नक़्शा जमा रहा है॥४
फ़िक्र दुनियाँ फ़िक्र उक़बा, फ़िक्र दुशमन फ़िक्र दोस्त।
ये हैं बखेड़े मुफ़्त के, क्यों जी सता रहा है॥५
ये है आशारा नफ़स की, आमद और रफ़त से।
बदन में दम जो आया, वही जाता रहा है।६।

जो जो यहां से चल गये, मालूम उनकी क्या ख़बर ।
वापिस न फिर के देखे, जो अदम को जा रहा है ॥७
मुर्दा कुछ सुनता नहीं, चिल्ला चिल्ला के रह गये ।
रोबरू हर दम तेरे ये, बज बाजा रहा है ॥८
मानिन्द हबाब लहजे में, हज़ारों होकर फट गये ।
इस बहर में है कौन, जो अछूता जा रहा है ॥६

नज़्म ॥ ५१ ॥

है जिसकी आत्मा बलवान, मन मुरादी वही होता है।
कर आत्म परमात्म यकता, बादी वह ही होता है ॥१
कभी द्वेष किसी में दृष्टी, ज़िनहार नहीं लाता है ।
स्वरूप से हैगा अनन्त, अनादी वह ही होता है ॥२
कर पाप पुण्य भुगतान, रंजो राहत में आकर ।
उपजे बिनसे बिनसे उपजे, सादी वह ही होता है ॥३
सृष्टि पूर्व नहीं नाम रूप, सत्ता मात्र मिदम् जगत् ।
जिसका यह विचार, आदि वह ही होता है ॥४
दुःख सुख से है निर्लेप, ज़हे तक़्वा सादके दिल ।
युग युग में हो अवतार, युगादी वह ही होता है ॥५
है ताक़त क्या ज़माने की, अदल बदल कर देवे ।
है धीर पुरुष सदा शाद, शादी वह ही होता है ॥६
मुन्तज़िर नहीं दिलका, नागवारा मज़ाहमत जिसको ।
जो शूरवीर मरदे मैदाँ फ़िसादी वह ही होता है ॥७

न देवे दाद किसी की, करता है जुलम बरपा ।
आख़र कार फ़िसादी जो, फ़रयादी वहही होता है॥८
पिता पितामह का धर्म, परम्परा सनातन का ।
महाजनमार्ग को छोड़, समाजी वह ही होता है ॥९
परप्रिया अपवित्र नार, है दग्ध घर बधू करें ।
भई विषयों में लोलुपा, परमादी वह ही होता है ॥१०
अछूता हो न लागे दाग, बरसात के पानी से ।
पुरु जौहर सदा खांडा, फ़ुलादी वह ही होता है ॥११

नज़म ॥ ५२ ॥

ज़हे ज़ाते हक्कुल यकीं, अजब रोशन सितारा है ।
करूं तारीफ़ क्या उसकी, हज़ारों से न्यारा है ॥१
गले जामा है मखमल का, सर पर पाग मलमलकी ।
दुपट्टा सांटली बांधा, कमर खासा कटारा है ॥२
जिधर चलता झमक करता, जहां देखो उसीतरफ़है ।
लबों की लाल लाली से, जगत सारा संवारा है ॥३
क्या हक़ीक़त शमसो कमर, आवे मुक़ाबिल रोबरू ।
तिल मिला कर आंख गुफ्तम, क्या अजब नजाराहै॥४
फ़रिश्ते तअज्जुब करते हैं, अल्ला अल्ला कह कह कर।
ये है किस की सफ़ाई, नक़्श कैसा उतारा है ॥५
लामकां को छोड़ कर, पर्दा नशीं बे पर्दा हुआ ।
तजल्ली से साफ़ ज़ाहिर, खुदा को तमांचा मारा है॥६

दस्तबस्ता पीरो पैग़म्बर, अर्शों फ़लक सर झुका खड़े।
खुदा खुदाई का दावा छोड़ माफ़ी,माफ़ी पुकारा है७॥
अछूता वो ख़ुसर व ख़ूबा, जज़बह दिले आशिक़ में।
जो है दिल्दार हरजाये, वोही दिलबर हमारा है ॥८

भजन ॥ ५३ ॥

जंगल रम जासी, ओ।
मेरा जिया राम ॥

चुन २ कंकर महल बनाये, अन्त जंगल के वासी।
भाई बन्धु कुटुम्ब परिवारा, संग न कोई जासी ॥
जंगल० ॥१॥

आत्मराम कभी नहीं ध्याये,जो हैं अलख अविनासी।
जन्म जन्म के पाप निवारें,जिनकी मुक्ति है दासी है॥
जंगल० ॥२॥

शंकर ध्यान धरत है जाको, इन्द्र रहत खवासी।
शेष मुखी ये जाप जपत है, तो भी पार न पासी ॥
जंगल० ॥३॥

ओम् सोम् खोजत डोलत, त्रिशना रहत आकासी।
निज नाम जाके हाथ न आवे,पड़ी काल जम फांसी॥
जंगल०॥४॥

अजर अमर परपुरुष अछूता, फूला फूल सुभासी।
आदि युगादि अगाध व्यापक,स्वयम् स्वरूप सुखरासी॥
जंगल० ॥५॥

नज़म ॥ ५४ ॥

लगन जिसने सत्य से, सत्य की लगाई होगी ।
होकर मुक्त इसलोक में, अमर अक्सीर बनाई होगी ॥ १ ॥
हो करके सत् स्वरूप खुद, बखुद स्वयम् ब्रह्म होकर ।
देश काल वस्तु परिछिन्न, अटल बस्ती बसाई होगी ॥ २ ॥
यक रंगी ये दो रंगी, न ज़ेरो ज़बर होना कभी ।
हर घट व्यापक एकोहम्, ये ऐसी यकताई होगी ॥ ३ ॥
जिस मुंह को अगर देखा, मुंह में मुंह अपना देखा ।
महव जब इतना हुआ, खुद की शनासाई होगी ॥ ४ ॥
होकर लामकां से आज़ाद, तन तनहा हो करके ।
खुद को भूला आपसे, जब असल तनहाई होगी ॥ ५ ॥
बग़ैर सैकल न होवे दूर, हरगिज़ कुदूरत आईना की ।
ये इतक़ा क़लब के लिये, न ज़िनहार सफ़ाई होगी ॥ ६ ॥
नहीं लाज़िम इनसां को, करना बुराई हर किसी की ।
है ज़ेबा भलाई भलों को, भला करना भलाई होगी ॥ ७ ॥
कर को कंगन भूलकर, भ्रम से नर भरमी हुआ ।
ज्ञान ही कंगन हुआ, और यही कलाई होगी ॥ ८ ॥
सुर असुर झगड़ते हैं, खुद रसाई के रस्ते को ।
अछूता ज्ञान होने पर, खतम फ़ौरन लड़ाई होगी ॥ ९ ॥

भजन ॥ ५५॥

रे मन काहू सों प्रीत न कीजे ।
बार बार बरजो नहीं माने, दोष कवन को दीजे ।
॥ रे मन० १ ॥
मन्द अन्ध फिरे बौराना, निज स्वरूप सों छीजे ।
॥ रे मन० २ ॥
आख़िर जौवन रूप गंवाया, न अछूता बालम रीजे
रे मन काहू सों प्रीत न कीजे ॥३॥

गाना ॥ ५६ ॥

तिफ्ल नादां को, हम समझा जायेंगे ।
समझाना सिखलाना, ये बता जायेंगे ॥ तिफ्ल १ ॥
मकतब में जाकर, पेपर को देकर ।
इबरत की हिकायत, ये लिखा जायेंगे ॥ तिफ्ल २ ॥
मालूम हैगी, जन्नत की हक़ीक़त ।
लेकिन दिल बौराना, को नचा जायेंगे ॥ तिफ्ल ३ ॥
मये बेहदत का, जाम लबरेज़ कर ।
सरे बाज़ार जा, नोश फ़रमा जायेंगे ॥ तिफ्ल ४ ॥
दिल रंगरेज़ को, देकर दिल को ।
खुद रंग में, जामा रंगा जायेंगे ॥ तिफ्ल ५ ॥
गगन महल की, जो है अटरिया ।
कपट किवड़िया, तोड़ दिखा जायेंगे ॥ तिफ्ल ६ ॥

तर्क दुनियाँ से तर्क हो कर ।
अछूता अछूता, हम कहा जायेंगे ॥ तिफ्ल ७ ॥

भजन ॥ ५७ ॥

चलना दूर मुसाफ़िर कैसे सो रहा ।
चलना दूर कमर को बान्ध ले,
नींद से हो बेदार ।
क़ार दरिया मारग कठिन है,
चलने का शोर घर घर हो रहा ॥च० १॥
आकर कोई खड़ा घाट पर,
कोई उतर गया पार ।
पकड़ पछाड़ा तसकर ने किसी को,
होकर ग़ाफ़िल गिरह गांठ खो रहा ॥च० २॥
कोई पीनस में चढ़ कर चले,
हाथी पर कोई सवार ।
कोई ज़ीन डाले घोड़े पर,
कोई थक कर मंज़िल में रो रहा ॥च० ३॥
लगन महूर्त मिलाते कोई दम दम,
चलते हैं शुभ वार ।
कोई कार सर्कार ज़रूरी,
चलने की ख़ातिर अकेला दम हो रहा ॥च०४॥

कोई मुफ़लिस चला खाली हाथ से,
किसी के सिर पर भार।
है अछूता कोई नक़द नारायन,
कोई निष्कामी परम बीज बो रहा ॥ ५ ॥
चलना दूर मुसाफ़िर कैसे सो रहा।

गाना ॥५८॥

ये फ़लकी है इसरार, यार तू किस पै भूला है ॥
अजान पतंग आशिक़ दीपक पर, देता बदन को जार।
है अचरज समझ बूझ कर, नर पागल हुआ ख़्वार॥
मूढ़ विषयों में झूला है ॥ ये फ़लकी० १ ॥
नार जगत में नरक निशानी, शूर वीर गये हार।
कर विचार भागे बहु ज्ञानी, हो करके लाचार ॥
अज्ञानी जिस पै फूला है ॥ ये फ़लकी० २ ॥
लक्ष्मी हुस्न शबनम के गौहर, एक छिनक के यार।
रङ्ग बरङ्ग फूलों में जौहर, है मौसम की बहार ॥
आख़िर घास का पूला है ॥ ये फ़लकी० ३ ॥
औरों को कंटक कर जाने, आप बना गुलज़ार।
होकर अछूता समझ दीवाने, जहां फूल तहां ख़ार ॥
गुल गुलाब में सूला है ॥ ये फ़लकी० ४ ॥

नज़म ॥ ५९ ॥

हूँ अंदलीब उस चमन का,
जिसमें हमरी इबारत है।
शोला हूँ तजल्ली नूर से,
ये सब हमरी शरारत है ॥ १ ॥
दस्त-ऐ-मन से तंग आकर,
खिला हुसीनों पै रंग होकर।
कूचह बकूचह दैरौ हरम,
लामकां हमरी इमारत है ॥२॥
मानी में हूँ दरिया क़ुलज़ुम,
ज़र्रह ज़र्रह खुद मौजों में।
हबिस में दिल चहचहाने से,
न कुछ हमारी हिकारत है ॥३॥
भरे हैं हमारे कीसे में,
बेबहा क़ीमती जौहर गोहर।
अर्शों फ़लक ज़िमीं दर तह,
हर जा हमरी तिजारत है ॥४॥
हूँ ज़ाहिर ज़हूर फ़ानूश रोशन,
पर्दा दर पर्दा हो करके।
अख़तरे ताबां बुर्ज यकीं मा,
ऐनुल हमरी इशारत है ॥५॥

उल्फ़त का लुत्फ़ है जलवा,
जल जलाल पै ला डाला।
अछूता हक़ है अनल हक़,
टुक ज़बां हमरी पुकारत है ॥६॥

नज़म ॥ ६० ॥

करम से हम तेरे महफ़ूज़, न जोर से नालां हम।
ऐश व मुसीबत हर दो, हाल में मस्त हैं हम ॥१॥
तौहीद अनल हक़ हम को, कलमा याद हो रहा है।
फ़ुरकत में हैं खुश दम, विसाल में मस्त हैं हम ॥२॥
हम मालदार तवंगर हैं, या बेज़र बेज़ार मुफ़लिस।
अफ़साल में अदबार में, इक़बाल में मस्त हैं हम ॥३॥
ज़बां पर है न शकवा, न अबरू में कभी ख़म।
हूँ राज़ी रज़ाये यार के, अफ़आल में मस्त हैं हम ॥४॥
गुदड़ी में गुज़ारी रात, या उरियां तन हो करके।
कम्बल दुलाई कफ़नी चादर, शाल में मस्त हैं हम ॥५॥
खाने को रूखा सूखा, तरो ताज़ा या गर्मागर्म।
तसलीम करके दिल में, जंजाल में मस्त हैं हम ॥६॥
न जीने में शाद शादां, न मरने का है ज़रा ग़म।
यकसां ज़िन्दगी मौत के, कमाल में मस्त हैं हम॥७॥
वाक़िफ़ न ज़माने से हैं, न वक़्त की कुछ ख़बर।
माहो पहर घड़ी दिन रात, साल में मस्त हैं हम ॥८॥

कहीं मिली खाट बिछाने को, या राख पर पड़ रहे।
मृगछाला टाट चटाई, खाल में मस्त हैं हम ॥९॥
झोली बग़ल में दबाकर, निकले हो फ़क़ीर फुक़रा।
बैठ या चल चले की, चाल में मस्त हैं हम ॥१०॥
अनार अंगूरो नासपाती, बेरो बादाम या तरबूज़।
सूखी दाल को चबा कर, दाल में मस्त हैं हम ॥११॥
बे खबर है तनो जां से, सैर करना हुस्न बुताँ की।
ग़मज़ा चश्म व रुख़े ख़तो, ख़ाल में मस्त हैं हम ॥१२॥
कुछ तलब न घरबार की, न तकिये बिस्तर की हविस।
गली गुलिस्तां बाज़ारो मैदां, चौपाल में मस्त हैं हम ॥१३
जहाँ में अजब हैं हम, हर आन में हैं खुर्रम।
अछूतानन्द जिमीं आकाश, पाताल में मस्त हैं हम ॥१४॥

नज़म ॥६१॥

है किस की शान पर इतना, नाज़ो मिज़ाज ऐ बुलबुल।
गुल जाते कह गया ज़ाहिर, ये झूठी खुदनमाई है ॥१॥
शहे गुज के तजम्मुल पर, हजारों शैदा हैं बुलबुल।
न देख सका फ़लक ज़ालिम, ये कैसी किबरिया है ॥२॥
न गुलो गुलिस्तां है अपना, अबस है बस गुमां बुलबुल।
न हैगा बागवां अपना, न अपने से रसाई है ॥३॥
शिकायत और गिला कैसा, गुलो गुलचीं का ऐ बुलबुल।
अदू है खुश इलहां तेरी, पकड़ पिंजरे में लाई है ॥४॥

क़फ़स में फ़ायदा क्या है, मचाना शोरो गुल बुलबुल ।
असीरे इश्क़ से कह दो, ता मर्ग मुश्किल रिहाईहै॥५॥
अछूता हो तोड़ कर हलके, गुलों के चमन में ऐ बुलबुल ।
आज़ादी हक़ है बरहक़, अनलहक़ की रहनुमाई है॥६॥

नज़्म ॥ ६२ ॥

कहते हैं ख़ुदा ख़ुदा जिसको,
न देखा है न भाला है ।
जो देखा तो फ़क़त आलम,
एक आदम का उजाला है ॥
वजूद अदम इन दोनों का,
फ़क़त आदम से नाता है ।
कुल मख़लूक़ात में अशरफ़,
नज़र आदम ही आता है ॥
रिंद कुतब और पीर औलिया,
मन्सब आदम ही पाता है ।
कुर्सी अर्श लामकां तलक,
ख़ुद आदम ही जाता है ॥
बनज़र हक़ ने ये दिखाया,
अल्ला से आदम आला है ।
जो देखा तो फ़क़त आलम,
एक आदम का उजाला है ॥१॥

ज़बानी गढ़त आदम की,
गाड ईश्वर खुदा कहाते हैं।
ज़ब ढूंढ़ने को जाओ,
तो ऊपर अर्श के बताते हैं॥
हवा पर गिरह लगा लगा,
ज़िक्रिशाये शोर मचाते हैं।
देकर उंगलियां कानों में,
सुबह शाम बांग सुनाते हैं॥
नमाज़ पढ़ते हैं मसजिद में,
दिल ज़न पर मतवाला है।
जो देखा तो फ़क़त आलम,
एक आदम का उजाला है॥२॥
पर्दा उठा कर जो देखा,
तो आदम ही नमूदार हुआ।
हैगा यही ख़ालिके राज़िक़,
रोफ़ो ग़फ़ूर हज़हार हुआ॥
हुक्म हाकिम में आदम का,
जारी सब कारोबार हुआ।
खुद बन के तिजारती आदम,
इधर उधर का व्योपार हुआ॥
बहीखाते मुहर स्टामों पर,
आदम का ही हवाला है।

जो देखा तो फ़क़त आलम,
एक आदम का उजाला है ॥३॥
महरो मोहब्बत लुत्फ़ो इनायत,
आदम में ही पाई जाती है।
हर तरफ़ हर चमन से,
गुले करम की बू आती है ॥
कहरो ग़ज़ब को ज़ब्त कर,
आदमियत को ख़िरद बताती है॥
जह तक़्वा इंसानियत का,
खुद आदम की खो जाती है॥
करामात ज़ाहिरा दिखा कर,
शाही जमशैद प्याला है।
जो देखा तो फ़क़त आलम,
एक आदम का उजाला है ॥४॥
इब्तदा यही है इन्तहा यही,
पसो पेश हर्गिज न है जिसका।
मर कर कम न जीकर ईजाद,
ये अजब तिलस्मात है जिसका॥
हज़ारों महफ़िल और मजलिसोंमें
बेशुमार शुमार है तिस का।
राम कृष्ण मुहम्मद और ईसा,
जिक्र करूं मैं किस किस का॥

कुदरत ने क़ादर को मार कर,
इश्क़ आदम से पाला है।
जो देखा तो फ़क़त आलम,
एक आदम का उजाला है ॥५॥
दोनों जहां में ज़ात को,
आदम के हैगी बरतरी।
है याद इसके फ़ज़ल में,
रस्म हैगी ख़लाइक परवरी॥
दाइम है ख़ासो आम पर,
लुतफ़ो इनायत हिफ़ज़ आबरी।
क्या तायर क्या हैवानों पर,
क्या जिन है और क्या परी॥
फ़रमां रवाई और अदल का,
शाही सरवर रिसाला है॥
जो देखा तो फ़क़त आलम,
एक आदम का उजाला है ॥६॥
दीनो दुनियां का है मालिक,
फिर करके यारो देखिओ।
मुहिब और पाक कहलाया,
आदम टुक इधर को देखिओ॥
क्या है मोहब्बत के चमन की,
खुशतर खुशबू फिर देखिओ।

क्या क़िस्मत का ज़बर तालय,
है अजब ये महबूब देखिओ ॥
इसकी लुत्फ़ का नौनिहाल,
आखिर ये वर्ग निराला है ।
जो देखा तो फ़क़त आलम,
एक आदम का उजाला है ॥७॥
एक दिन चमन में जाकर,
चश्म हैरत ज़दा वाकर ।
ये जामा सबर क़बा कर,
तायर हविस को उड़ा कर ॥
शौक़ अपनी राह नुमाकर,
दीद नज़ारा को रवा कर ।
रंगत चमन की दिखाकर,
नफ़ीरी खूबी की बजा कर ॥
ताज़गी गुलशने जहां में,
सिर्फ अछूतानन्द वाला है ।
जो देखा तो फ़क़त आलम,
एक आदम का उजाला है ॥८॥

नज़्म ॥६३॥

खाक का पुतला बना, फिर खाक में मिल जायगा ।
इस क़दर है किस तकब्बुर, पर तेरा ऊंचा मिज़ाज ॥

दुनियांमें रहना शाद हो, यही शादमानी है भला।
ग़मसे न कर सीना चाक, इकदम ज़िन्दगानी है भला॥
हर एक दम की है यही, दम बदम महमानी है भला।
अच्छा खुलक अच्छी तबियत, अच्छी खो अच्छा मिज़ाज
ख़ाक का पुतला बना, फिर ख़ाक़ में मिल जायगा।
इस क़दर है किस तकब्बुर, पर तेरा ऊंचा मिज़ाज॥१॥

ये आदमी है ज़ात आला, पकड़ इसका तू ज़रूर।
अर्श से ले ताबे फ़र्श, हैगा चमकता ये नूर॥
दुनियां में बहुत हैं औलिया, और बहुत हैंगे हजूर।
न जाईयो ज़िनहार, किसीके पास लेकर एहतयाज॥
ख़ाक का पुतला बना, फिर ख़ाक में मिल जायगा।
इस क़दर है किस तकब्बुर, पर तेरा ऊंचा मिज़ाज॥२

अगर तू हैगा भी सात, वलायतों का ज़बर पादशाह।
हशमत में आकर मत बना, अर्श से ऊंची बारगाह॥
इस बद मिज़ाजीसे नहीं, मिलती किसीको ख़ास राह।
इस मर्ज़ के मारे पड़े, फ़िल्लुल हक़ीक़त ला इलाज॥
ख़ाक़ का पुतला बना, फिर ख़ाक में मिल जायगा।
इस क़दर है किस तकब्बुर, पर तेरा ऊंचा मिज़ाज॥३

हज़ारों तर्ज़ के दुनियां में, महबूब होगये क़ज़ कुलाह।
मिस्ल फूल बदन जिनके, रुख़ पर बरसे नूरे माह॥
जाते जाते इत्तफ़ाक़न पड़ी, क़ब्र पर मेरी निगाह।

देखकर मैं रो दिया, कहाँ वो शौकत कहां वो ताज ॥
ख़ाक का पुतला बना, फिर ख़ाक में मिल जायगा।
इस क़दर है किस तकब्बुर, पर तेरा ऊंचा मिज़ाज ॥४
जनाब आली के तन को, लेकर संदूक में भरा।
मुफ़लिस आजिज़ ग़रीब का तन, ख़ाली माटी पर पड़ा॥
ख़ाक ने ख़ाक किये दोनों, क़ायम न साबित एक रहा।
मिल गये वो ख़ाक में, थे अर्श तलक जिनके राज ॥
ख़ाक का पुतला बना, फिर ख़ाक में मिल जायगा।
इस क़दर है किस तकब्बुर, पर तेरा ऊंचा मिज़ाज ॥५
अगर किसीको मिला होगा, ज़रदार अतलसका कफ़न।
और इक कोई योंहीं, पड़ रहा बेकस बिरहना तन ॥
कीड़े मकोड़े दोनों के, खा गये थे तन बदन।
सच तो है ये सखुन, देख कर आती है लाज ॥
ख़ाक का पुतला बना, फिर ख़ाक में मिल जायगा।
इस क़दर है किस तकब्बुर, पर तेरा ऊंचा मिज़ाज ॥६
गढ़ कोट तोप रहकला, रह गये तेग़ो कमान तीर।
ख़ाक में बाग़ो चमन, ख़ाक में मकाने दिल पज़ीर ॥
जो बना सो ख़ाक है, अक्सर है ख़ाक की खमीर।
अछूता दीदह दानिस्तह, बस है यहां का ये रिवाज ॥
ख़ाक का पुतला बना, फिर ख़ाक में मिल जायगा।
इस क़दर है किस तकब्बुर, पर तेरा ऊंचा मिज़ाज ॥७

नज़्म ॥६४॥

जहांमें क्या क्या खुसरु वो खूबां,
होकर मशहूर चले गये ।
खिरामे नाज़ शोखी में आकर,
कर कर फ़तूर चले गये ॥१॥
सरेदर्स इश्क़ दार पै दिल,
दर्दमन्द हो हो कर ।
मजनूं से लेकर हज़ारों आशिक़,
शाहे मंसूर चले गये ॥२॥
आब हयात कोह काफ़ में,
पीने सिकन्दर खुद गया ।
खुदी के नीचे सर को देकर,
हो करके चूर चले गये ॥३॥
हफ्त अक़लीम देते जिनको,
दस्तबस्ता होकर खिराज ।
फ़रिश्तों से ऊंचा था मिज़ाज,
ऐसे मग़रूर चले गये ॥४॥
कोई ज़ालिम करता ज़ोरो ज़फ़ा,
सहता कोई रंजो बला ।
नट खट उचक्के दग़ाबाज़,
इक दिन ज़रूर चले गये ॥५॥

फ़ाज़ल के फ़ज़ल में इल्तजा,
आबिद न.जूमी का मुद्दा।
मुल्ला भी लड़के पढ़ा पढ़ा,
उठा कर ग़रूर चले गये ॥६॥
कोई हरम कोई पूजता दैर,
.जन्नत पर जो डालें निगाह।
ज़र लुटा कर ख़ुदा की राह,
आला फ़िग़फ़ूर चले गये ॥७॥
पीरो जवां ख़ुर्दो कलां,
मुहताज बख़्शो और अमीर।
हसरतों को सर पर उठा,
होकर मज़दूर चले गये ॥८॥
था ख़ज़ाना ये नक़द उर्फ़ा,
फ़क़ीरी से पीरी लेकर।
सग़ीरी में अजब थी कबीरी,
लाकर ज़हूर चले गये ॥९॥
हुस्नो जमालो इल्मो हुनर,
बे तकल्लुफ़ हक़ रसा।
रहनुमा फ़ज़ल बारे बरमिला,
ख़ुदा मंज़ूर चले गये ॥१०॥
मैं ही हूँ जो हैगा कोई,
हर जाये ख़ुद ख़ुदा हूँ।

मए वहदत का अछूतानन्द,
बजा कर तंबूर चले गये ॥११॥

लावनी ॥६५॥

सन्त जन तरते हैं बेग़म,
हो रही दुनियां देख कर दंग।
आशा रूपी यह क़ार दरिया,
मनोरथ का अथाह नीर भरा।
है नाहीं जिस का पीछा आगा,
तृष्णा तरंगों की बड़ी अकुला ॥
सत्संतोष ने कर डालीं भंग,
हो रही दुनियां देख कर दंग ॥१॥
मोह रूपी मगर जहां तरते,
लोभ रूपी भंवर घोर पड़ते।
तर्कवादी नाना पंछी लड़ते,
काम रूपी मच्छ कच्छ अकड़ते ॥
धीरज से जीते कर कर जंग,
हो रही दुनियां देख कर दंग ॥२॥
बड़ा है दुस्तर कठिन गम्भीर,
बड़ी चिंता जिसके हैं तीर।
नाहीं गुरू न माने पीर,
जिसका वक्राकार शरीर ॥

शुक्ल सब्ज़ श्याम है रंग,
हो रही दुनियां देख कर दंग ।.२॥
मूर्ख गोते इस में खाते,
विन विचार नर बहे जाते ।
शुद्ध शील आत्म उतर जाते,
ज्ञानी ज्ञान से आनन्द पाते ॥
अछूतानन्द अहं सोहं,
हो रही दुनियां देख कर दंग ॥४॥

नज़म ॥६६॥

यत्र जीव तत्र ब्रह्म है, वाचा विकार कर हैंगे दो ।
ज्ञान विवेक विचार कर कर, ज्ञेय ज्ञाता कर हैंगे दो ॥१॥
कारण कार्य कार्य है कारण, जैसे भूषण स्वर्ण समान ।
क्रिया कारक विकार करके, नाम रूप कर हैंगे दो ॥२॥
पुरुष प्रकृती प्रकृति पुरुष है, माया ब्रह्म के रहत हज़ूर ।
जगत प्रपंच है लीला मात्र, नर नारायण कर हैंगे दो ॥३॥
एक बना दूजे के सन्मुख, एक एक हो गये ग्यारह ।
व्यष्टी समष्टि भेद द्रष्टी, द्वैताद्वैत कर हैंगे दो ॥४॥
मन को मन से तोलो गर तुम, होगा दो मन कभी नहीं ।
परमारथ में एक हैं हम, चर्म दृष्टि कर हैंगे दो ॥५॥
एक चैतन्य सर्व घट व्यापी, सत्यासत्य विलक्षण है ।
बुद्धि विशिष्ट बुद्धी उपहित, बुद्धि उपाधि कर हैंगे दो॥६॥

एक वृक्ष पर दो पुरुष हैं, उत्तर वेदान्त का यही विचार।
भोग भोक्ता साक्षी होकर, श्रुति प्रमाण कर हैंगे दो॥७॥
बट में बीज बीज में है बट, यों व्यापक है ब्रह्म अखंड।
पुरुष पुरुषोत्तम हैगा अछूता, अहं सोहं कर हैंगे दो॥८॥

गाना, दादरा ॥६७॥

न पायो मज़ा तेरी यारी में,
वनवारी विहारी गिरधारी यार।
तुम से यारी करी गोपीयन ने,
भस्म भई तन मन को जार॥ वन० १॥
तुम से यारी करी राजा बलि ने,
छल कर कीनो ज़ार बेज़ार॥ वन० २॥
राजा दशरथ जी तड़पत छोड़े,
गये बनखंड को राम सिधार॥ वन० ३॥
लाखों विरही फिरें दीवाने,
दिये छोड़ घर बार परिवार॥ वन० ४॥
धन्य धन्य हो संतन के स्वामी,
ऐसे अछूते निर्मोही सकार॥ वन० ५॥

नज़म ॥६८॥

हैगा पाप जगत में यार,
दुखाना यह दिल किसी का।
है घोर पाप बढ़ करके यार,
शर्माना यह दिल किसी का॥१॥

पुण्य कहते हैं लोग इसको,
सुख देना जी हर किसी को।
परम पुण्य प्यार करके यार,
खिलाना यह दिल किसी का ॥२॥

अधर्म बोलना मुख से झूठ,
दग़ाबाज़ी की बातें करना।
बढ़ करके यह अधर्म यार,
उलझाना यह दिल किसी का ॥३॥

सत्य बोलना है मानुष धर्म,
रहना जगत में धर्मी होकर।
आदि धर्म वेद प्रमाण यार,
रिझाना यह दिल किसी का ॥४॥

आशिक़ बनकर इश्क़ कमाना,
हो करके नाज़बर्दारों में।
चंचल चपल शोखी भरा यार,
उठाना यह दिल किसी का ॥५॥

क़बल तो मुहब्बत जिता कर,
नज़र से खुद नज़र मिला कर।
अच्छा नहीं नज़र में उठा यार,
गिराना यह दिल किसी का ॥६॥

हुस्न यकता में माहेजबीं को,
हम मकाबिल न आने देना।
कर मखौल यारों में बैठे यार,
झड़काना यह दिल किसी का ॥७॥
शबाब मस्ती में मस्त होकर,
दीवानेपन का मचाना शोर।
किलकिलाना ताली बजा यार,
खड़काना यह दिल किसी का ॥८॥
प्यार से बुलाना ओ प्यारे प्यारे,
करना चितवन से इशारत को।
ग़मज़ा नाज़ो अदाओं में यार,
फिसलाना यह दिल किसी का ॥९॥
अबरू कमान मिज़गां के तीर,
लेकर होश में आना ज़रा।
अछूता होकर न बनाना यार,
निशाना यह दिल किसी का ॥१०॥

लावनी ॥६९॥

दिल दिलदार हर दम हम दम,
इक दम के हम हमदम हैं।
एक के हैं बहु रूप,
बहु रूप में हम बेग़म हैं॥

अद्भुत रूप अनूप स्वरूप हमारा।
हूँ अचलो यम् सनातन सदा निर्धारा॥
कर खंड अखंड असंख ब्रह्मंड पसारा।
असङ्गो ह्ययम् पुरुषा सर्व से न्यारा॥
हम आदि युगादि अगाध व्यापक हम हैं।
एक के हैं बहु रूप बहु रूप में हम बेग़म हैं॥१॥
हैं हम सोसम्वेसम् अव्यक्त अनादि अविनाशी।
है नाद बिन्द पर धारी काया काशी॥
हैं हम वेद वेदान्त ओंकार प्रकाशी।
हैं हम परमार्थ अभेद अद्वैत विलाशी॥
हम ज्ञान विज्ञान सुजान अगम निगम हैं।
एक के हैं बहु रूप बहु रूप में हम बेग़म हैं॥२॥
है सत्यासत्य से विलक्षण लक्ष्य हमारा।
है विधि निषेध से न्यारा पक्ष हमारा॥
हैं अचिन्त्य अविकारी शुचिर्दक्ष हमारा।
है साक्षी सर्व से न्यारा भक्ष हमारा॥
हम उत्पति रहित निर्द्वन्द्व परमात्म हैं।
एक के हैं बहुरूप बहु रूप में हम बेग़म हैं॥३॥
हम तत्वा अतीत, हैं निरंजन स्वामी,
हम देश काल वस्तु, परिछिन बेनामी।

हम सत्यम् ज्ञान मनन्तं ब्रह्म निष्कामी,
हम हैंगे शान्त तेज अन्तरयामी ॥
हम अनपेक्षः उदासीन पुरुषोत्तम हैं ।
एक के हैं बहु रूप, बहु रूप में हम बेग़म हैं ॥४॥
हम अतः चराचर हैं सदा सुखरासी,
हैं हम पुरुष विदेही अमरापुर के बासी ।
हैं हम तुरिया अतीत मुक्ति हमारी दासी,
हैं हम निराकार निरगुन हम सन्यासी ॥
हम स्वयम् सम्बोध अछूतानन्द ब्रह्म हैं ।
एक के हैं बहु रूप बहु रूप में हम बेग़म हैं ॥५॥

नज़म ॥ ७० ॥

ये हफ़्त अक़लीम हैगी, बोरिया मेरे घर की ।
खड़ी करती है क़नाअत, दर्बानी मेरे दर की ॥१॥
फ़लक चूमे क़दम झुक कर, ये मेरी शान शाहाना ।
अक़ल होश चम चमकती, शह कुलाह मेरे सर की ॥२॥
ग़ैबदस्ती है ख़ज़ाना, सखी दिलके उड़ाने को ।
हर दम खुली रहती ये, चौखट अक्सीर ज़र की ॥३॥
तरो ताज़गी लाती है, फ़रिश्तों के रूह बदन को ।
है रवां नहर लबरेज़, आबे बक़ा ख़िज़र की ॥४॥
है सफ़ाई इस क़दर की, कि आंख तिलमिलावे ।
झाड़ू है झाड़ने की, बादे नसीम पर की ॥५॥

रोशनी जिसमें मुतलक़, तारीक बेनिशां है।
दिन रात झल झलाती, शमा शमसो क़मर की ॥६॥
हर क़िबल हक़ बरहक़, यही शुग़ल खुदपरस्ती।
दस्तावेज़ है बदस्ती, उल्मा के महज़र की ॥७॥
मये वहदत बरसे हर दम, साक़ी पैमाना खुद बज़म।
होकर खुदी से बेग़म, नहीं है खबर सहर की ॥८॥
रास्तगोई जबर दरबार, अछूतानन्द आली सर्कार।
अदल दायम बरक़रार, अदालत रोज़ महशर की ॥९॥

नज़्म ॥ ७१ ॥

दुनियां की उल्फ़तों ने, मुझे अर्श से उतारा।
गिरा ग़फ़लत में आकर, मेरा ये दिल पुकारा ॥
उल्फ़त ज़ालिम का शोर, था ज़मीं चर्ख़ सारा।
शमसो क़मर तड़पते, बुताने हुस्न कर नज़ारा ॥१॥
नज़र आया था बुते शोख़, ऐसा पुर नाज़ चंचल।
अजब सजधज निराली, मेरा दिल हुआ बेकल ॥
अदा थी चुलबुली जिसकी, आन में अजब छलबल।
अफ़सूंगर चश्मों से, बन्दा बना के मारा ॥२॥
उस शोख़ चंचल ने, हुस्न अपना जब दिखाया।
नज़रों में नज़र डाली, बेचैन मुझे तड़पाया ॥
गिरा यूं होके बे खुद, पड़ा मुझ पै भूत साया।
ढलकर चला अश्क, आंखों से जैसे पारा ॥३॥

दिल हुआ सद चाक़, बसद चाक गरीबां मेरा ।
मिसल हुआ रवां दरिया, दीदह जो गिरीयां मेरा ॥
बर्क़ की तरह तपां, दिल हुआ सोज़ां मेरा ।
देखो आन के ज़रा तुम, परेशां ये दिल हमारा ॥४॥
हिजर ने अब निहायत, बेदम दम किया मुझको ।
फिरता हूँ शक्ल बगुला, हो कर बैरान हर सू ॥
ऐ मेरे माहे जबीं, हमदम मेरे गुलरू ।
कौन शहर रौनक़ फ़रोज, किस घर को संवारा ॥५॥
क्या उस घड़ी यारो, अजब अहवाल था मेरा ।
फिरता हर गली कूचे, न मिलता ख़ास कर डेरा ॥
तलब आहों की सोज़श, जुस्तजू में अश्कों का फेरा ।
हर कोई पूछता था, क्यों ज़र्द मुंह तुम्हारा ॥६॥
कहूँ क्या हम नशीं तुमको, मेरा ये हाल दीवाना ।
तजल्ली पै उस शमा के. जलता हूँ मिसल परवाना ॥
निगाह में कुछ न आवे, न यगाना औ न बेगाना ।
सुनाऊं उसको अफ़साना, मिले गर वो मेरा प्यारा ॥७॥
रहनुमा सुनकर ये कहता, तुझे उसका पता देता ।
बले साथ मैं ले चलकर, घर दर उसका बता देता ॥
मुक़ाबिल में दू बदू ला, नज़र भरके दिखा देता ।
निकलता जब वो बाहर, देता तुझको कर इशारा ॥८॥
वलेकिन है बुते शोख़, सरकश बेवफ़ा वो ।
जफ़ाकश बे मुरव्वत, दम बदम कर्ता दग़ा वो ॥

हजारों दर पै आशिक़, ये करते हैं दुआ वो।
भला करना भला हो, भला होगा तुम्हारा ॥६॥
बढ़कर है संगी दिल, न दिल में कुछ लाता वो।
सितमगर है सितमकश, दिन ब दिन दूना सताता वो॥
हम मुक़ाबिल में किसी को, न ख़्वाब लाता वो।
वहदत में खुद कसरत, कसरत में चश्म तारा ॥१०॥
बस यकता यगाना है, न दुई की रखता वो।
महरो सितम से बरतर, लासानी बे मिसल वो॥
बेनिशां बेमज़ाजी, बे खुलक़ खुद बखुद वो।
है लामकां के ऊपर, अछूतानन्द का चौबारा ॥११॥

गाना ॥७२॥

तोता चश्म चितवन आज़ार,
जमाना दिल से खाली है ॥
यारों में यारी नहीं दीखे,
भाई वफ़ादारी नहीं सीखे।
उलफ़त बग़ैर लुत्फ़ सब फीके,
मुख देखे की लाली है ॥ ज० १
खुशनुमा शब क़मर दिखावे,
फ़लक क्या क्या खेल खिलावे।
दिन में खुद चांद लजावे,
रुख़ पर नक़ाब डाली है ॥ ज० २

खुसरव खूबां की उड़ गई नुरानी,
सर्वे चरागा रह गई निशानी।
आलम ज़वाल की है ये कहानी,
चाल में चाल निराली है ॥ज़० ३
अक्लमंद दर दर भटकाते,
चोर बटमार अशराफ़ कहाते।
चुगलखोर राजों को बहकाते,
तं जेब कमीनों की आली है ॥ज़०४
हैं बख़ील दौलतमंद होकर,
करें सख़ावत इक कौड़ी रोकर।
नेकी डर बैठी हाथ धोकर,
अब अछूता ही वाली है ॥
ज़माना दिल से खाली है ॥५॥

गाना ॥ ७३ ॥

ग़फ़लत से होना बेदार,
ज़माना दस्तबस्ती है ॥
है दुनियां अजब इसरार, आंख अपनी खोल ले।
हो आराम से आराम, दुःख दुख से तोल ले ॥
है नेकी से नेक नाम, बद से बदी मोल ले।
हाथों हाथ का सौदा, नक़दा नक़द की बस्ती है ॥
जमा०॥१॥

शोख़ी शरारत मकरोफ़न, कर कर जो दिखाया।
आइना की शकल बनकर, अक्स खुद नज़र में आया॥
गुल खिला उसका जिसने, गुल और का खिलाया।
मुश्किल आसां जो है, खुश उसी की हस्ती है॥
ज़मा० ॥२॥

अपने नफ़े की खातिर, मत और का नुक़सान कर।
साहब इदराक़ होकर, बदले की तरफ़ ध्यान कर॥
शाद कर तो और को, खुद शाद से गुज़रान कर।
.ज़ेरे आब के तबदीलमें, देख आसमां की पस्ती है॥
ज़मा०॥३॥

करना जो कर, दम तेरा, महमान है कोई आन का।
भला कर तू भला, मत, फ़िकना उठा तूफ़ान का॥
हर किसी के साथ में, बीड़ा उठा अहसान का।
अछूतानन्द हैगा मस्त, आलमे इसरार की मस्ती है।
.ज़माना दस्त बदस्ती है ॥४॥

नज़म ॥७४॥

हम ही अत्रायम् पुरुषः,
हम ही स्वयम् ज्योति तो हैं।
रवि हो जल करें आकर्षण,
हम ही हेम गलते तो हैं ॥१॥

हम ही रजगुण रचें विश्व को,
विष्णू सत में रहें अटल ।
तम संहार करत रुद्र हो,
हम ही भूत रचते तो हैं ॥२॥
हम ही पर अपर मन माहीं,
नैव किंचित् कर्त्तव्य करन ।
चित, बुद्धि, अहंकार, प्रकृति,
हम ही काम छलते तो हैं ॥३॥
हम ही वेदव्यास वेद रचि,
उत्तर वेदान्त नाना इतिहास ।
श्रवण मनन कर मुक्त कहाये,
हम ही विषय चलते तो हैं ॥४॥
हम ही भव का भार उतारें,
युग युग में अवतार धरे ।
राम कृष्ण नृसिंह आदि ले,
हम ही दुष्टों को दलते तो हैं ॥५॥
हम ही कर्त्ता स्वर्ग लोक में,
जा जा कर सुख भोग रहे ।
पाप कर्म के फल भोगन को,
हम ही नर्कों में जलते तो हैं ॥६॥
हम ही धर्मी धर्म पुण्य से,
अभय लोक को जाते हैं ।

अधर्मी नर्कों में लख कर,
हम ही हँसते रोते तो हैं ॥७॥
हम ही जो कुछ हैगा होगा,
बिन हमारे है और कौन ।
हैं हम ज्ञान उपाधि से पर,
हम ही अज्ञान बोते तो हैं॥८॥
हम ही रूप सकल रूपन में,
धरे रूप अरूप रहे ।
अद्वैत हो देते हैं सबको,
हम ही द्वैत हो लेते तो हैं ॥९॥
हम ही ब्रह्मा रचें विश्व को,
होकर हरी हम ही पालें ।
करें संहार होकर शिव शंकर,
हम ही अकर्ता करते तो हैं ॥१०॥
हम ही रवि हो करें प्रकाश को,
तम आवरण में हैं हम तम ।
डरें डरावें नाहीं डरते,
हम ही निडर डरते तो हैं ॥११॥
हम ही विकार सदा अविकारी,
हो कर पंच कोष ही हम ।
सकल विश्व के हो परिणामी,
हम ही सदा विस्तरते तो हैं॥१२॥

हम ही जीव कर्म रचे जग,
न हम रचना में आवें ।
माया ब्रह्म और जीव अनादी,
हम ही हरते भरते तो हैं ॥१३॥

हम ही जन्म रहित हैं अज,
जन्म धार हो अधार रहें ।
जीवन मुक्त विदेह देह भये,
हम ही जीते मरते तो हैं ॥१४॥

हम ही शिष्य गुरू हैं हम,
जिज्ञासू जिज्ञासा हमरी ।
करें उपदेश उपदेशक होकर,
हम ही बंध उधरते तो हैं ॥१५॥

हम ही वेद वेदान्त इक अक्षर,
कहें सम्पूर्ण अर्थों को ।
द्वैत अद्वैत दृष्टि भिन्न कर,
हम ही देखत फिरते तो हैं ॥१६

हम ही बहु मित्र एक अकेले,
प्रेम भाव पर से हैं परे।
सब हम और सब से न्यारे,
हम ही अभेद विचरते तो हैं॥१७॥

हम हीं राज काज में राजा,
अन्यायकारो हैं न्याय कर्ता।
करें भोग भोगों में भोग हो,
अछूता भोगों में तरते तो हैं ॥१८॥

गाना ॥७५॥

नाहीं पार है अपार का,
कोई अजब खेल कर्तार का ॥
इक पल ताल लबरेज़ लहरावे, कमलों की फुलवार।
घड़ी छिनक में नीर को खूटे, उड़े धूल खूंख़्वार ॥
अथाह समुंदर बहते दीखत, जिन का वार न पार।
निमेष एक में बह गया पानी, रह गया ख़ाली ख़ार॥
नमूना कुदरत के इसरार का, कोई अजब खेल कर्तार का १
गुल खिले गुलिस्तां में हर रंग, अजब मौज गुलज़ार।
हजारों बुलबुल चहचहातीं हैं, होकर मस्त सरशार॥
ख़िज़ाँ का मौसम जबके आया, पत्ता फूल न डार।
बाग़बां रो रो कर कहता, सुन बुलबुल बेज़ार ॥
अजब भेद परवर्दगार का, कोई अजब खेल कर्तार का॥२
इकना के घर हैंगे पुत्र, खेलें कर कर प्यार।
मातु पिता दिन रात खुशी में, करते जान निसार ॥
एक एक की खातिर तरसें, दिलको यही आज़ार।
इकना के घर एक अकेला, वह भी है मुर्दार॥
रोना है ज़ारो ज़ार का, कोई अजब खेल कर्तार का॥३

घड़ी पलक में राजा कहलाते, परजा के सर्कार।
हाथी घोड़े ज़र माल ख़ज़ाने, बहु कुटुम्ब परिवार॥
पल में मूंड मुडा करके, छोड़ दिया घर बार।
फ़लक का है दौर दुरंगा, अछूता है कर्तार॥
वाह अटल राज सर्कार का, कोई अजब खेल कर्तार॥४

गाना ॥ ७६ ॥

सर खम फ़लक़ रफ्तार का,
दौर चलता देख संसार का।
एक दिना प्रीति प्रीतम सों, तन मन देवे वार।
हाव भाव से करत कटाच्छ, था सिलसिला प्यार॥
मन पच्छी जब उड़ गया प्राणी, कहती प्रेत पुकार।
लोक लाज को त्याग पलक में, करन लगी व्यभिचार॥
यह चलन हुआ बदकार का, दौर चलता० ॥१
बाप बेटी और बहिन भैया, मिलकर हुए बदकार।
माता पुत्र विलोके कुदृष्टी, तोबा हा हा कार॥
बहुते बहिन बेटीसे कराते, ज़ाहिरा ज़ाहिर व्यभिचार।
घेरें नहीं आकाश क्यों धरती, जिनका धर्म आधार॥
ग़ज़ब काम कामना व्यवहार, दौर चलता० ॥ २
लड़की बेचना आजकाल में, खुले दस्तन व्यवहार।
करते सिफ़त सूरतवंती की, बाप खड़े बाज़ार॥
सौ लच्छण मेरी लड़की में, जिनका करो शुमार।

एक एक लक्षण की क़ीमत, नक़द रुपैया हज़ार॥
लेना देना सरे बाज़ार का, दौर चलता० ॥३
माल चुरावें अमानत में ख़यानत, बन बैठे साहूकार।
क़र्ज़ लेकर वापिस नहीं देवें, जो कहलाते सर्दार॥
करें दलाली टका की ख़ातिर, झूठों का बाज़ार।
लिख स्टाम्प झूंठ मूंठ का, नालिश पेश सरकार॥
फैसला गवाहों के इज़हार का, दौर चलता० ॥४
दो आने की पूरी खाकर, खड़े गवाह हज़ार।
गीता कुरान उठाने की ख़ातिर, अड़े पेश दरबार॥
हर एक शहादत देने में ऐसे, हर्फ़ बहर्फ़ पुरदार।
जिरह होने पर कहते हजूर, दीवानी लौ दरकार॥
न चले उज़र उज़रदार का, दौर चलता० ॥५
बन कर यार करें जो उल्फ़त, बाहें गले में डार।
यही लुत्फ़ है दोस्ती में, उम्र के कौल क़रार॥
आज बने जानी वो दुश्मन, कल जो थे दिल्दार।
ये करतब हैं कुदरत के, अछूता कहे ललकार॥
बाजा बजता बेतार का, दौर चलता देख संसारका॥६

गाना ॥७७॥

बुतों का संग छोड़ देवे,
छोड़दे छोड़दे छोड़ देवे।
ज़ाहिर को भोले भाले, बातिन में बड़े काले।
इनसे मुख मोड़दे मोड़दे मोड़ देवे॥ बुतों० ॥ २

ये हैं नहीं किसी के, न होंगे किसी के।
समझ कर दिल तोड़दे तोड़दे तोड़ देवे ॥ बुतों० ॥ २
इस कर्म की रेख पै, मारो चोट मेख पै।
अछूता से नेह जोड़दे जोड़दे जोड़ देवे ॥ बुतों० ॥ ३

नज़्म ॥ ७८ ॥

तलब तेरे दीदार की, कैसी यार लगी हुई।
मुक़द्दर के पहलू में, दुई दीवार लगी हुई ॥१
था फ़र्क़ जो दिलों में, नक़्श यही था फ़िराक़।
वहदत के हर्फ़ में, यही आज़ार लगी हुई ॥२
अहाते से फ़लक के, दौड़े गर हज़ार बार।
बाहर न जा सके, खुदी बदकार लगी हुई ॥३
वजूद ख़ाकी रूह खुदा, ये फ़ना न वो बक़ा।
किस ज़िन्दगी से मौत, कर इक़रार लगी हुई ॥४
हस्ती से कहते हैं, बढ़ कर अजब है अदम।
कौन आया देख फर, गर्म बाजार लगी हुई ॥५
मिसाल आईना मुसाहिब, मानी खुद बखुद खुदा।
फिर क्यों खुदा खुदाई की, तक़रार लगी हुई ॥६
क्या ताक़त कलाम में, हक़ को ज़बां कहे।
मुरगे लाहूती की, हैफ़ मिन्क़ार लगी हुई ॥७
खुदा ही हवैदा खुदा, कैसे मिला कैसे जुदा।
अछूता की बरकी तार, अजब हमवार लगी हुई ॥८

नज़्म ॥७९॥

लुत्फ़ बढ़ कर था उल्फ़ते खूबां ।
जो हिज्र में अगर जरना न होता ॥१
जीते जी का था मज़ा जहां में ।
जो इसमें अगर मरना न होता ॥२
खुर्मी पर कुरबान ऐ सादिके दिल ।
फ़लक से ग़म अगर करना न होता ॥३
ऐश इशरत तुवीं अता अजब था ।
अज़ीयतो मुसीबत अगर भरना न होता ॥४
बज़्म पुरजोश रहना हमदमों से ।
रहगुज़र में अगर गुज़रना न होता ॥५
हस्ती में हमी थे हस्त मुतलक़ ।
क़ज फ़लक पर अगर चढ़ना न होता ॥६
दीदबाज़ी शुग़ल क्या ही अजब था ।
ग़म्ज़ा नाज़ों से अगर लड़ना न होता ॥७
सैर दुनियाँ यक नज़ारा फ़ैसला था ।
उलझ कर कहीं अगर अड़ना न होता ॥८
हुस्न था तजल्ली नूर का जलवा ।
फिर क्यों घटता अगर बढ़ना न होता ॥९
अछूता रास्ती था इल्म रास्तबाज़ां ।
दग़ा के मसले अगर पढ़ना न होता ॥१०

नज़म ॥८०॥

हुस्न की तजल्ली देख, अख़तरे ताबां फट गया।
फ़लक देख शान क़द की, ज़ेरे क़दम चिमट गया॥
चंचल निराली चाल पर, ताऊस पायल पलट गया।
भोली भाली सूरत पर, दिल भोला रिपट गया॥१॥
क्यों लाये हो तबीत, तुम मेरे पास यारो।
ये इश्क़ का है कुश्ता, मिल मिल कर पुकारो॥
कहीं है इलाज इसका, क्यों अर्श को उतारो।
पहलू में जब कलेजा, तड़प कर उलट गया॥२॥
अफ़सोस सद अफ़सोस, जल गया दिलो जां से।
जीने की आस मेरी, उड़ गई दोनों जहां से॥
कफ़े दस्त मलता हूँ, क्या होता अर्मां से।
दिखाय गुल क्या बहार, जो ख़िज़ा में सिमट गया॥३॥
बुत की शोख़ी पर बशर, क्या क्या न कर गये।
बहर इश्क़ में बहकर, ल.खूख़ा ही मर गये॥
नसीब आशिकों के, आतिशे फ़ुरकतमें जर गये।
कुए यार में जिनका, सरो सामां लुट गया॥४॥
हस्ती का ख़ातमा ये, ऐ यारो बुत परस्ती।
दारे इश्क़ पर बसी है, कहीं आशिकों की बस्ती॥
कर दिल के हज़ार टुकड़े, दिलबर की ज़बर दस्ती।
ग़म्ज़ह नाज़ो अदा में, सबका सब बट गया॥५॥

क्या खूबां को खुदा ने, दीनी है ये अदा।
आंखों ही आंखों में, करते हैं दग़ा दग़ा ॥
ठूंठा दिखा गया, खा कर के नट कला ।
दिल से दिल छीनकर, पूछा तो कह के नट गया॥६॥
एक दिन करते सैर, रस्ते में मिल गया ।
ताली बजा के कहता, किधर तुम्हारा दिल गया॥
चाहा कि दामन पकडूं, शायद हमसे हिल गया।
था अनक़रीब हँसकर, वो इक दम उछट गया ॥७॥
ठिठक कर मैं रह गया, वो दूर जा खड़ा ।
हो करके तोताचश्म, हम से दूबदू लड़ा ॥
मत देख हमरी तरफ़, कैसी ज़िद पर अड़ा ।
मचल कर बोला तुझसे, हमारा प्यार घट गया॥८॥
ऐसा तो ग़ज़ब करना, न चाहिये दिलरुबा ।
फट पड़ेगा आसमां, अगर होगे तुम ख़फ़ा ॥
इस दिल के गुञ्चे का, उक़दा न कुछ खुला ।
हो करके शक्कर शीर, दिल कैसे फट गया ॥९॥
जीता हूँ मेरी जान, तुम्हारे ही प्यार से ।
बिस्मिल न करो यार, नाज़ के तक़रार से ॥
कुश्तह तन हूँ ज़फ़ा, खंजर की धार से।
सर से सौदा नहीं गया, पर सर तो कट गया॥१०॥
दिल जान से तुझ पर, सुबह शाम निसार हैं।
तुम आबेहयात हो, तो हम भी आबदार हैं ॥

अछूता होकर बग़ैर तेरे, दो आलम से पार हैं।
सुन करके उछल कर, गले से लिपट गया ॥११॥

गाना, काफ़ी ॥८१॥

घड़ी पल में मेला विछड़े,
चल देख तमाशा, जगत जाता॥ घड़ी०
नदिया किनारे जैसे नैया, क्या झूँठा क्या सांचा।
कोई मुड़ के न आता॥ घड़ी पल में मेला विछड़े॥१॥
साधक सिद्ध पीर औलिया, क्या पुख़्ता क्या काचा।
कोई ये भेद न पाता॥ घड़ी पल में मेला विछड़े॥२॥
जैसे पानी बीच बतासा, क्या अछूता क्या राचा।
कोई कुछ ले न जाता॥ घड़ी पल में मेला विछड़े॥३॥

नज़म ॥८२॥

जुदा जीवात्मा होना, गवारा कर नहीं सक्ता।
परम परमात्मा के बिन, गुज़ारा कर नहीं सक्ता॥१॥
देह और प्राण का संबंध, निमेष एक दिखाता है।
इस हेच हालत का ज़रा, सहारा कर नहीं सक्ता॥२॥
विषय विलास में फँसकर, भटकता क्यों फिरूँ हर दर।
इस दुष्टाचार को हृदा, हमारा कर नहीं सक्ता॥३॥
मिले गर तख़्त शहन्शाही, मुझे ज़िन्हार नहीं दर्कार।
स्वयम् सर्वज्ञ से हिस्सा, न्यारा कर नहीं सक्ता॥४॥

है धर्म इस अवस्था का, होना निर्दोष ही चाहिये।
सुफल इस जन्मको हरगिज, दुबारा कर नहीं सक्ता॥५॥
हुआ जब ज्ञान तब समझे, खुद आत्म ही परमात्म है।
दुईका बस अछूता मैं, इशारा कर नहीं सक्ता ॥६॥

नज़म ॥ ८३ ॥

काशी क्या जायें तेरे, प्रेम के योगी होकर।
किस को पूजें तेरे, दीदार के भोगी होकर ॥१॥
तुमने जुदा कर हमें, छोड़ दिया जुल्म किया।
हमने भी छोड़ दी, दुनियां तेरे सोगी होकर ॥२॥
हो शफ़ा मर्ज को क्या, तेरे तबीबों से भला।
कभी अच्छे भी हुए, विरह के रोगी होकर ॥३॥
अज़ल कुल नामसे छुपो, ऐसा तो मुमकिन है नहीं।
ढूंढ ही लिया हमने, तुमको वियोगी होकर ॥४॥
वो दिन भी आया लो, जिसके उम्मेदवार थे।
होचुके अछूतानन्द, आनन्द में योगी होकर ॥५॥

गाना ॥८४॥

मीठे मीठे बोलना जी ओ यार,
साजन चित के चोरा ॥
लोक लाज और तन मन वारूं,
कुटुम्ब परिवार और जान निसारूं।
प्रेम पंथ की डगर बहारूं,
नन्द महर के छोरा ॥ मीठे०॥१॥

मधुर बोल हित चित कर भावे,
कटु वचन हृदय को दुखावे।
काग करुणा न करण समावे,
कोयल कर रही शोरा ॥मीठे०॥२॥
प्रेम बचन परम प्रेम प्यारा,
वशीकरन मन्त्र यह हमारा।
कहत अछूतानन्द हर बारा,
तजदे बचन कठोरा ॥मीठे० ॥३॥

गाना ॥ ८५ ॥

है परम परमात्मा जी,
नहीं परवस किसी को करना ॥
पराधीन सपने सुख नाहीं,
सर्व स्वतन्तर कभी दुख नाहीं।
यही सांच झूंठ कुछ नाहीं,
जैसे को वैसा भरना ॥है० ॥१॥
पराधीन सदा दुख पावे,
नाहीं बचन कहत कुछ आवे।
हो आजुर्दा दिल पछतावे,
है बहतर इसको मरना ॥है० ॥२॥
सः आत्म देव सदा प्रकाशी,
जीवन मुक्त आत्म अविनाशी।
अछूतानन्द आनन्द विलासी,
कर विचार भवसागर तरना॥है०॥३॥

गाना ॥८६॥

होते उदासीन काहे यार,
करें बेड़ा राम तेरा पार ॥
एक राम का जगत पसारा,
एक राम घट घट रखवारा।
एक राम दशरथ घर बारा,
एक राम है न्यारा यार ॥ करें०१
ऋषी का यज्ञ सम्पूरण कीना,
शिला उड़ाय मुक्त वर दीना।
जीत स्वयम्बर सिया रंग भीना,
द्वार जनक पग धार यार ॥ करें०२
असुर संघार सिया सुध लीनी,
लंका छीन विभीषण दीनी।
काट शीश रावण गत कीनी,
ऐसे राम अवतार यार ॥ करें०३
करी सुग्रीव से मित्रताई,
मार कर बाली तारा दिलवाई ॥
मित्र की रीत प्रीत निभाई,
होकर सच्चे दिलदार यार ॥ करें०४
प्रह्लाद भगत का कष्ट निवारो,
चीर कर खम्भ हिरनाकुश मारो।

अद्भुत नर पशू देह धारो,
देख देवी देव बलहार यार ॥ करें० ५

कंस पछाड़ कर कृष्ण कहाये,
नन्द जसोदा घर माखन खाये।
इन्द्रदेव के गर्व घटाये,
गिरवर नख पर धार यार ॥ करें० ६

रही सूँड जल ऊपर जौ भर,
चिंघार उठा गजराज हरीहर।
सुन कर टेर धाये धरनीधर,
छिन में दीना उभार यार ॥ करें० ७

ध्रुव की तपस्या पर बलहार,
बैकुंठ धाम को दीना वार।
धन्य धन्य भगतन के सर्कार,
अछूतानन्द कहे ललकार यार ॥ करें० ८

गाना ॥८७॥

काहे करत गुमान रे नादान,
देह माटी का खिलौना है।

कर गुमान नाम रूप पर, नीर का वृथा बिलोना।
फूटा घट यदि बह गया पानी, कहो अब क्या होना है॥
देह० ॥१॥

खेलत खेलत खाकर ठोकर, टुकड़े भया खिलौना।
माटी टुकड़े हैं टुकड़े माटी, माटी का माटी बिछौना है॥
देह० ॥२॥
गिरवर धार कर नख के ऊपर, नन्द महर को छोना।
घायल होकर बन में भील शर, देख अर्जुन को रोना है॥
देह० ॥३॥
काल लक्षण राम लख कर, चित उदास गत होना।
करसों धनुषबाण गिरे आह कर, लगा पंकज का धोना है॥
देह० ॥४॥
कहत अछूता निज विचार कर, मिथ्या भ्रम को खोना।
जड़ चैतन्य की गांठ काटकर, परम पलंग पर सोना है॥
देह० ॥५॥

नज़म ॥८८॥

ऐ इश्क़ यार हज़रत, है आफ़रीन तुझ को।
क्या ख़ूब आज़ादों को, बंदा बना के मारा ॥१
बजुज़ हक़ नहीं है, कोई जिस्मो जां में।
सदाए अनलहक़ ने, ख़ुदा कहला के मारा ॥२
पुकारा दार पर मनसूर, बर हक़ ही अनल हक़ है।
क्या इन्साफ़ दार ऊपर, हक़ ने चढ़ा के मारा ॥३
उठा ग़फ़लत का पर्दा, ख़ुद बनके आशिक़ माशूक़।
इश्क़ हूं इश्क़ के, कूचे में जगा के मारा ॥४

ज़ाहिर दिखा के नूर, चमका चौदह तबक़ में।
जलवा भड़क बन शोला, खुद को जला के मारा ॥५
उठा करता है दरिया, मौजो हबाब बन बन।
पानी का ये तमाशा, उठा उठा के मारा ॥६
अज़ सर रुख़े ख़ूबां, तजल्ली हुस्न खिलकर।
खुद बन के दीदबाज़, दीदार दिखा के मारा ॥७
है दोस्त दोस्त का, रहज़न अजब क्या इसरार।
अफ़सोस मुहब्बत ज़ालिम ने, खंजर चला के मारा ॥८
ज़िक्रिया दरज़ेर आरा, हो गया टुकड़े सितम।
बंदानिवाज़ हो कर, आरा खिंचा के मारा ॥९
दायम ज़िक्र में तेरे, उनको न बख़्शा ऐ करम।
अपार ज़बर क्या शोख़ी, घर में बुला के मारा ॥१०
कहते हैं वेद अकर्त्ता, स्वयम् अछूता बरी है।
यही वजह जगत मफ़रूज़, मफ़रूज़ डरा के मारा ॥११

गाना ॥८९॥

दूजा कोई नहीं है,
देखा जगत सब छान।

आया भला, भला जगत सब, मुख दर्पन यह ज्ञान।
जहां चैतन्य ब्रह्म है तहां, धूम वन्हि प्रमान ॥दूजा० १
हर घट रमता राम रमेती पशू पच्ची इन्सान।
जैसे जल में फैन बुद्बुदा, लाख चौरासी खान ॥दू०२

एक पुरुष अविगत अविनाशी, परम पद निर्वान ।
शुद्ध बुद्ध द्रष्ट कर देखा, अटल अचल धर ध्यान ॥दू०३
वाचा विकार कटक कुण्डल भये, स्वर्ण समता पिछान ।
कारण जन्य जगत है जो, स्वयम् अछूता भगवान ॥दू०४

गाना ॥९०॥

रमता राम है जी, सभी रूप भगवान ॥
हस्थी चींटी आदि व्यापक,
एक अखंड सुजान ॥ रमता० ॥१॥
अनादि स्वरूप सर्व प्रकाशत,
स्वयम् जोत झकाना ॥ रमता० ॥२॥
परमानन्द आनन्दमय सागर,
परम पद निर्वान ॥ रमता० ॥३॥
वेद बखाने दिव्य दृष्टि से,
अछूता की पिछान ॥ रमता० ॥४॥

गाना ॥९१॥

कर विचार संसार यार, धोका की टट्टी है ॥
मोह मयी प्रमाद मदिरा पीकर भया दीवाना ।
मूर्ख प्रानि ये जगत जो, यार मदिरा की हट्टी है ॥
कर० ॥१॥
कर कुकर्म अमी रस चाखे, कैसे बने यह सौदा ।
छाछ कुलछन नारि के, यार हंडला की खट्टी है ॥
कर० ॥२॥

बालू भीत बनाई रच पच, मूढ़ अंध अज्ञाना।
बह जायेगी एक छिनक में, यार नदिया की मट्टी है॥
कर० ॥३॥
ऐसे ही है जगत व्यवहारा, अछूता का यह कहना।
बंधो हुई आंखोंके ऊपर, यार अविद्या की पट्टी है॥
कर० ॥४॥

गाना ॥९२॥

चला जाता है रे जहान,
कोई मुड़ के आता है नहीं॥

कोई राजा राना अमीर है, कोई सत् पुरुष फ़क़ीर है।
बहते नीर की यह तासीर है, पीछे फिरके आता नहीं॥
चला० ॥१॥
वाक़िफ़ हैं सब इस हालसे, है नाज़ उन्हें किस ख़यालसे
छुटकरके पन्छी जालसे, दाना फ़न का खाता है नहीं।
चला० ॥२॥
दिल पर मेरे है यह लिखा, न कुछ लाया न ले जायेगा।
वह भला भला जो कुमायेगा दुःख जगतमें पाता है नहीं॥
चला० ॥३॥
जो चल दिया जहां में भला, सब टल गई सिरसे बला।
वापस न आकरके भला, कुछ भेद बताता है नहीं॥
चला० ॥४॥

जिसनेदिलजहांसेउठालिया,बसेजागबलासे या हुआ।
अछूता की हैगी यह सदा, जड़ चैतन का नाता है नहीं॥
चला० ॥५॥

गाना ॥६३॥

क्या अजब असार संसार,
कुछ सार दिखाता है नहीं ॥
कोई आता है कोई जाता है,
कोई लेता है कोई दाता है।
कोई डराता है कोई हंसाता है,
कोई आंख मिलाता है नहीं ॥क्या०॥१॥
कोई पढ़ता है कोई पढ़ाता है,
कोई रोता है कोई गाता है।
कोई मन मगन कोई चिल्लाता है,
कोई ज़बां हिलाता है नहीं ॥क्या०॥२॥
कोई मात पिता कोई भ्राता है,
कोई नाती पुत्र का नाता है।
कोई दोस्त कोई दुखाता है,
कोई सम्मुख आता है नहीं ॥क्या०॥३॥
रहे अछूता देह मर जाता है,
जो कुछ नज़र में आता है।
सब स्वप्न का सा तमाशा है,
कोई साँच बताता है नहीं ॥क्या०॥४॥

गाना ॥९४॥

बिन सत्य स्वरूप अद्वैत के,
कुछ नज़र में आता है नहीं ।
है सत्य स्वरूप केवल तूई, तेरी बास है तू फूल जुई ।
स्वयम् तेरे प्रकाश में, कहीं द्वैत दिखाता है नहीं ॥
बिन० ॥१॥
जब तक न जाना आत्मा, तब तक जुदा परमात्मा ।
आत्म ज्ञान से परमात्मा, फिर जुदा दिखाता है नहीं ।
बिन० ॥२॥
है सर्व व्यापक परमात्मा, कहो कहां जुदा जीव आत्मा ।
जब हो हुये सर्वज्ञ स्वयम् ,जीव अल्पज्ञ दिखाता है नहीं॥
बिन० ॥३॥
है सत्य अद्वैतानन्द यही, पर पुरुष परमानन्द यही ।
द्वैगा यही आनन्द ब्रह्म, भव भय दिखाता है नहीं ॥
बिन० ॥४॥

गाना ॥ ९५ ॥

प्यारे कान्हा सुनाना गाना आन जी ।
मटक मटक करके मटकाना इठलाना कान्हा जी ॥
हमरे आंगन में जी आना, बाहीं गले डाल हँसना हँसाना।
मधुर मधुर बंसी का बजाना, इठलाना प्रान जी ॥
प्यारे० ॥१॥

बृन्दावन में रास रचाना, गोपी ग्वाल संग मंगल गाना।
थई थई ताल पै नाच नचाना, इठलाना जान जी ॥
प्यारे० ॥२॥
राजा कंस का सीस उड़ाना, इन्द्र जीत ब्रज इन्द्र कहाना।
छू, छू, करके अछूता बतलाना, इठलाना चान जी ॥
प्यारे० ॥३॥

गाना ॥६६॥

नर चेत नर तन पाकर,
खोता फ़ज़ूल क्यों है।

देह धरे का कुछ धर्म कर, उज्वल होके शुभ कर्म कर।
दिव्य दृष्टि में हो बेदार, सोता फ़ज़ूल क्यों है ॥
नर० ॥१॥
दोस्त का है दोस्त रहजन, हर उंगली जिसकी पुरफन।
रुसवा कूये जानां में, होता फ़ज़ूल क्यों है ॥
नर० ॥२॥
स्वयम् स्वरूप मनसे भुलाना, मैं, तू, का जाल फैलाना।
दुई का बीज वहदत में, बोता फ़ज़ूल क्यों है ॥
नर० ॥३॥
निष्काम सदा हो रहना, अछूतानन्द का ये कहना।
सन्तोष में मगन हो, रोता फ़जल क्यों है ॥
नर० ॥४॥

नज़्म ॥९७॥

किसने जहां बनाया, जलवा दिखाने के लिये।
ज़ाहिर जहूर में आना, फ़ना हो जाने के लिये ॥१
जब होना नमूद चाहा, खिला होकर रंग हुस्न।
है वही शोला तजल्ली, खुद जल जाने के लिये ॥२
ये नाज भरे हैं बुत, इठलाते हुए आते हैं।
इनसाफ़ ज़ुरूर आते हैं, इन दिन जाने के लिये ॥३
क्यों बेफ़ायदा ये तुम, करा करते हो जमा।
मालक की है करामत, ये माल खाने के लिये ॥४
रसाई में रखना था, भलाई से कारोबार।
नहीं आते जहां तुम, दुनियाँ ले जाने के लिये ॥५
रहम करते बुत अगर, मगर करते क्यों कर।
हज़रत ने खुद भेजे, दिलों को जलाने के लिये ॥६
बारे नाज़ बुतों से, दब जाते गर्दं गर्दूं।
न होते पैदा आशिक़, गर नाज़ उठाने के लिये ॥७
देते हैं आशिक़ जान, रहमत के कूचे में।
होते हैं खुद फ़ना, बक़ा हो जाने के लिये ॥८
थी पड़ी आशिक़ की, ख़ाक कूये जानां में।
क्यों बनी ऐ बाद सबा, तू ख़ाक उड़ाने के लिये ॥९
हर रोज़ सरे शमा, वो जलता है परवाना।
क्या हिम्मत मरदानगी, बुज़दिल भड़काने के लिये ॥१०

लुत्फ़ लतीफ़ ज़बां में, गुफ़तगू शीरीं का ।
मगर असली असूलमाना, अनलहक़ गाने के लिये ॥११
बहम मिलते बर्ग शाख, दम बदम सुबहू शाम ।
हो रहा ये तमाशा, अछूता बताने के लिये ॥१२

❀ वेद सिद्धान्त ❀

चौपाई ॥९८॥

वाचा विकार जीव ब्रह्म दोई ।
ज्ञान प्रकाश स्वयम् अद्वैत सोई ॥
जीव से परे ब्रह्म नहीं मानो ।
ऐसे वेद सिद्धान्त जानो ॥
जीव स्वयम् आनन्द बखानो ।
प्राप्ति सुख कैसे तुम मानो ॥
नित्य प्राप्ति जो हैगी वस्तु ।
ताकी प्राप्ती असम्भव अस्तु ॥
ढूंढे सुख व्याकुल हो जाके ।
कंठ मणीवत भूल भुलाके ॥
हुआ वेद प्रमाण यह ज्ञाना ।
कंठ मणीं का भ्रम उड़ाना ॥
अधिकारी बिषग सम्बन्ध प्रयोजन ।
चव शास्त्रकार अनुबंध वलोकन ॥

साधन चव सहित सो अधिकारी ।
मल विक्षेप आवरण निस्तारी ॥
विवेक वैराग संपति शमादि ।
अरु मुमुक्षुता साधन युगादि ॥
आत्म सत्य जग ताते प्रतिकूला ।
ज्ञान विवेक साधन को मूला ॥
ब्रह्म लोक लौं भोग जो त्यागी ।
वेद बखाने ताहि मुनि वैरागी ॥
शम दम श्रद्धा समाधान उपरामा ।
छठी तितिक्षा भिन्न भिन्न नामा ॥
मन विषयन तें रोकन शम कहिये ।
दम रोकन इन्द्रियन को चहिये ॥
वेद गुरु वाक्य में श्रद्धा विश्वास ।
समाधान मन का विक्षेप नास ॥
साधन सहित कर्म त्यागे सब ।
विष सम विषयनको देखे जब ॥
नारि देख न मन मचलावे ।
यह लक्षण उपराम कहावे ॥
ताप शीत क्षुधा तृषा सहान ।
कहत शितिक्षा ताहि सुजान ॥
समाधि मूंद आंख मख कान ।
सविवेक चव, नव साधन जान ॥

ब्रह्म स्वयम् है मोक्ष को रूप ।
यहि मुमुक्षता कहत मुनि भूप ॥
श्रवणादिक ज्ञान के साधन ।
तत् त्वंपद अर्थ को शोधन ॥
अन्तरंग आठ यज्ञादिक बहिरंग।
अन्तरंग धार के तजो बहिरंग ॥
बोध्य बोधक संबंध कहावत ।
प्राप्य प्रापकता फल दरसावत ॥
जीव ब्रह्म एकत्व बुद्धि चहित ।
ग्रंथ विषय यह मुनिवर कहित ॥
आनन्द प्राप्ति प्रयोजन है जानि ।
जगत समूल अनर्थ की हानि ॥
जगध्वंस की नहीं करनी आस ।
चाहत विवेकी त्रिविध दुःख नास ॥
ब्रह्म अनुभव है सुख अनूप ।
चाहत विवेकी शुद्ध ब्रह्म स्वरूप ॥
पढ़े सुने ग्रन्थ अनुबंध चार ।
ज्ञान सहित लहै मोक्ष अपार ॥
वेद अर्थ भले प्रकार पिछाने ।
ब्रह्म स्वरूप आत्म को जाने ॥
भेद नाश कर बुद्धि पावे यद ।
अद्वैत अमल शुद्धि ब्रह्म पद ॥

है वेद सम बानी सो गुरुदेव ।
शुद्ध मन से करे शिष्य सेव ॥
मुख प्रसन्न गुरु देव देखे जब ।
जोड़ कर विनती करे शिष्य तब ॥
भो भगवन हम अज्ञान मति छीन ।
जन्म मरन के हम सदा अधीन ॥
कर्म उपासन हैं बहु प्रकारी ।
करत करत जग पांशी डारी ॥
कोई उपाय गुरुदेव दयाला ।
भव दुख मिटे कहो ततकाला ॥
पुनि चाहत परमानन्द स्वरूप ।
ताको कहौ उपाय मुनि भूप ॥
लखि गुरुदेव शिष्य मोक्ष चहित ।
जीव ब्रह्म भेद भाव गुरु कहित ॥
परमानन्द मिलाप शिष्य चहै ।
जन्मादिक दुख नाश कर लहै ॥
परमानन्द स्वरूप, नहीं दुख तोमें ।
अज अविनाशी ब्रह्म तु मोमें ॥
क्यों विषयन संग आनन्द माना ।
अब उतर कहो गुरुदेव सुजाना ॥
आत्म स्वरूप से बुद्धि बेमुख ।
चाहे सदा विषयन को सुख ॥

इस कारण चंचल बुद्धि मानी ।
सुख आभास की करती हानी ॥
जब पावे परमात्म को संग ।
तब विक्षेप बुद्धि को भंग ॥
होकर आनन्द प्रतिबिंब प्रकाशत ।
क्षण में पुनि बहु चाह विनाशत ॥
होत चंचलता की अति हानी ।
आनन्द प्रतिबिंब भयो ज्ञानी ॥
जब बुद्धि भई विषय संग बहरी ।
एक निमेख आत्म सुख ठहरी ॥
आत्म सुख यह सदा प्रकाशत ।
विषय सुख किंचित नहिं भाशत ॥
विषयन का होना यदी प्राप्त ।
आत्म सम्मुख बुद्धि एकाग्रत ॥
वहि आनन्द है परमानन्दा ।
वह अंधा माने विषयानन्दा ॥
बखान्यो प्रभु तुम परम आनन्दा ।
मेरो रूप सो मैं आत्म आनन्दा ॥
नहीं मोमें भव बन्धन लेशा ।
आप कह्यो सुखमय उपदेशा ॥
शंका यामें मोको यह भासे ।
ताते तव वच हिय नहिं राखे ॥

जो भगवन् नहीं जग कछु खेद।
प्रत्यक्ष प्रतीति किया क्यों भेद॥
अज्ञान तें मिथ्या है प्रतीत।
जग स्वप्न नभ नील की रीति॥
रज्जु भुजंग मिथ्या है जैसे।
भाष्या भव आतम में तैसे॥
भासे सर्प रज्जु में कैसे।
संशय में मन बुद्धि है ऐसे॥
आत्म ख्याति पुनि असत् ख्याति।
अन्यथा ख्याति अरु अख्याति॥
सुने चारि मत भ्रम कठोरा।
करे कौन ये कठिन व्योरा॥
ख्याति अनिर्वचनी है सत्यम्।
युक्तिहीन मत चारों भ्रम॥
यह मिथ्या परतीत जग अपार।
सो भगवन् कहो कौन अधार॥
तव निज रूप तैं मिथ्या संसारा।
रज्जु भुजंग अधिष्ठान आधारा॥
जगत मित्था दृष्टा कहो कौन।
अधिष्ठान आधार दृष्टा न तौन॥
मिथ्या वस्तु जो है कल्पित।
अधिष्ठान जड़ चैतन जगत॥

है अधिष्ठान जड़ वस्तु जहां।
द्रष्टा होवे तातें भिन्न तहां ॥
होय जहां चेतन आधारा ।
होवे तहां न द्रष्टा न्यारा ॥
चेतन स्वप्न में अधिष्ठान निर्धार ।
द्रष्टा अभिन्न तैसे जगत विचार ॥
इमि मिथ्या संसार दुख भान ।
ताकी निवृति कहां शिष्य सुजान ॥
मिथ्या यद्यपि जग गुरुदेवा ।
मैं तद्यपि चाहूँ तिहि छेवा ॥
होवे जातें यह जग हाना ।
उपाव सोई भाखो भगवाना ॥
सुनो शिष्य साधन जो पूछियो ।
निश्चय रंचक न खेद जग भियो ॥
अहं ब्रह्म जग मोमें नाहिं ।
ब्रह्म स्वयम् उपाय कुछ नाहिं ॥
कर्म उपासन तैं न जग नाश ।
अंधकार नशे न बिन प्रकाश ॥
जो कुछ भो भगवन् तुम भाख्यो ।
सत्य सब जानि सो हिये राख्यो ॥
जग निदान बखान्यो अज्ञान ।
ताको भक्षक पिछान्यो ज्ञान ॥

ज्ञान स्वरूप वर्णन पुनि कीना ।
जग अज्ञान सो मैं भल चीना ॥
पुनि भाख्यो तूं ब्रह्म स्वरूप ।
यह न लख्यो मैं भेद अनूप ॥
पुण्य पाप का कर्त्ता हूँ मैं ।
सुख दुख भोग भरता हूँ मैं ॥
अनेक भांति जग यह भासे ।
ज्ञान चहूँ अज्ञान जो नासे ॥
जो स्वरूप यातें विपरीत ।
कहत ब्रह्म ताकों मुनि नीत ॥
कैसे एकता कहो मैं मानूँ ।
रूप विरुद्ध हिये यह जानूं ॥
वृक्ष एक पर सम द्वै पच्छी ।
भोगे फल इक दूजो स्वच्छी ॥
भोग रहित असंग परकाश ।
वेद शास्त्र को यह विश्वास ॥
कर्म उपासन बहु पुनि भाखत ।
जीव ब्रह्म द्वय यातें राखत ॥
ऐ शिष्य यह विचार हमारा ।
होत शंका यातें निस्तारा ॥
घटाकाश में जल आकाशा ।
मेघाकाश अरु महा आकाशा ॥

चारि भेद हैं नभ के जैसे।
पुनि चेतन को पिछानो तैसे ॥
जीव कूटस्थ ईश ब्रह्म चार।
इनका भेद शिष्य करो विचार ॥
पिछाने जब इनका तू रूप।
निज शंका पडें सब कूप ॥
यातें सुन इनको अब भेद।
सुनत नाशे जन्मादिक खेद ॥
जलपूरित घट को अवकाश।
पण्डित कहें ताकूं घटाकाश ॥
जल पूरित घट में नभ आभास।
घटाकाश युत भाषत जलाकाश ॥
जो जल में आकाश लखाई।
सो गंभीरता प्रतीत व्है भाई ॥
जल में व्योम आभास सुजान।
बिन रूप शब्द ते प्रतिध्वनि भान ॥
जो अवकाश मेघ में आभास।
कहत इन दोनों कूं मेघ आकास ॥
जल वर्षत मेघ अनन्त रूप।
उदक सहित इहि हेत अनूप ॥
दक नहिं नभ आभास बिन ऐसे।
इमि प्रतिबिंब समेत नभ जैसे ॥

है व्यापक नभ एक रस रूप ।
महाकाश कहत बुद्धि अनूप ॥
मति व्यष्टि अज्ञान सहत जो ।
अधिष्ठान चैतन्य कूटस्थ सो ॥
घटा आकाश सम मानिये जैसे ।
सो कूटस्थ अजन्य कहो तैसे ॥
काम कर्म बुद्धि में प्रतिबिम्ब ।
चेतन जीव जल नभ सबिम्ब ॥
अधिष्ठान कूटस्थ आभासबहाल ।
रक्त पुष्प से स्फटिक होइ लाल ॥
बुद्धि माहिं आभास फल भोगत ।
पुण्य पाप नहिं चेतन में योगत ॥
मिथ्या घट संग नभ बहु क्रिया ।
घटाकाश सदा शान्त अक्रिया ॥
अथवा व्यष्टि अज्ञान में है जो ।
चेतन आभास है सदा सो ॥
अधिष्ठान कूटस्थ युत जो रूप ।
जीव कहते ताको मुनि भूप ॥
चित छाया माया संयुक्त ।
मेघ व्योम सम ईश मुक्त ॥
अन्तर बाहिर एक भरपूर ।
नभ सम ब्रह्म नेरे न दूर ॥

चतुर्भांति चेतन प्रकाशत ।
मिथ्या जीव तामें भाशत ॥
पुण्य पाप फल भोगे जीव ।
चित्कूटस्थ कहै सो शीव ॥
कर्म फल चेतन में अयोग ।
सो असंग भिन्न जातें भोग ॥
अहं ब्रह्म यातें यह जानो ।
कूटस्थ शब्द अहं पिछानो ॥
ब्रह्म शब्द को भाख्यो अर्थ ।
महाकाश सम लक्ष्य सामर्थ ॥
नाहीं जोलों अहं ब्रह्म जाने ।
दीन दुखित भय तोलों माने ॥
कहूँ अवस्था सात सुनो सुजान ।
हैं आभास कीन हीं चेतन की जान ॥
अज्ञान आवरण जान्यो तुम एक ।
द्विविध भ्रांति पुनि ज्ञान अनेक ॥
शोक नाश हर्ष अति अपार ।
सप्त अवस्था कहैं निर्धार ॥
जन्म मरण गमनागमन बखान ।
पुण्य पाप सुख खेद यह जान ॥
निज स्वरूप में होवे ये भान ।
वेद बखाने भ्रांति यह ज्ञान ॥

जन्म मरण सुख दुख नहिं मोमें।
स्वयम् कूटस्थ अजन्म हूं मैं ॥
संशय रहित स्वरूप अद्वय ज्ञान।
उपजे हिय मोद हर्ष पिछान ॥
कहीं अवस्था सात सुनो सुजान।
सो आभास की ऐसे कर ज्ञान ॥
ब्रह्मते है आभास न्यारा।
कियो अस तुम पूर्व निर्धारा ॥
सो अहं ब्रह्म जाने कहो कैसे।
भिन्न आपको माने ब्रह्मते ॥
जाने जो मिथ्या तौ ज्ञान।
जेवरी होइ भुजंग समान ॥
अहं शब्द सुन करो विवेका।
नाशैं शंक कलंक अनेका ॥
यद्यपि ब्रह्म हूं ऐसा व्है ज्ञान।
बुद्धि सहित अभास कूं जान ॥
आभास कूटस्थ ये दोनों रूपा।
आत्म जानों शब्द आनूपा ॥
ता आत्मा शब्द मैं ग्रहण कर।
सोई अहं शब्द का अर्थ कर ॥
अहं वृत्ति में भान जो कैये।
साक्षी और अभास दो लैये ॥

एक समय या क्रम तें भान ।
याको करहु प्रकाश सुजान ॥
एक समय होवें ये भान ।
साक्षी अरु आभास सुजान ॥
दूजो चेतन को विषय भासत ।
साक्षी स्वयम् प्रकाश प्रकाशत ॥
इन्द्रिय बिन संबंध ब्रह्म ज्ञान ।
कैसे है प्रत्यक्ष कहो बखान ॥
इन्द्रिय बिन प्रत्यक्ष नियम न जान ।
बिन इन्द्रिय प्रत्यक्ष सुख दुख ज्ञान ॥
अहं ब्रह्म भान निरावरण ब्रह्म रूप ।
भेद भ्रम नाश कहते मुनि भूप ॥
सत्य विभू प्रकाश अनूपम् ।
परकाशत रवि चन्द स्वरूपम् ॥
स्वयम् साक्षी बुद्धि का सोहम् ।
अछूतानन्द शुद्ध रूप ब्रह्म सोहम् ॥

नज़म ॥९९॥

जग प्रपंच से आतम न्यारा ।
है स्वयम् ब्रह्म स्वरूप हमारा ।
दीखे भिन्न जो जगत पसारा ।
मिथ्या भुजंग रज्जु में फुंकारा ॥

अधिष्ठान को मिथ्या से क्या डर।
सिर काटे नहीं स्वप्न कटारा ॥
कर्त्ता हर्त्ता अछूता हो करके।
निर्गुण निर्विकार निराधारा ॥

नज़म ॥१००॥

जग प्रपंच आकाश पुष्प है।
कहां है ईश कर्त्ता जो कहावे ॥
अज्ञान साक्ष्य विषा साक्षी का।
साक्ष्य होय तो साक्षी लखावे ॥
दृश्य नाहिं दृक् का कथन क्या।
दीद दीदा न दीदा क्या दिखावे ॥
होय बंध तु मोक्ष कर्त्तव्य है।
बिन बंध मोक्ष मिथ्या हो जावे ॥
सत् जनक कैसे है असत् का।
अज्ञान होय तु ज्ञान बन आवे ॥
मिथ्या जान छोड़ कर्त्तव्य सब।
अछूतानन्द अछूता मटकावे ॥

गाना ॥१०१॥

तेरी फुरकत में प्यारे।
मेरे जिगर पै चलते आरे।
दिन में डोलत द्वारे द्वारे। गिनती बैठ रैन भर तारे॥
कभी आरे आरे आरे ॥ मेरे जिगर पै चलते आरे ॥१

संग भई बदनाम प्यारे। तुम बने कुबजा प्यारे ॥
भला वारे वारे वारे ॥ मेरे जिगर पै चलते आरे ॥२
अछूता ढूंढ फिरी जग सारे। न मिले दिल चुरावन वारे॥
उफ़ हारे हारे हारे ॥ मेरे जिगर पै चलते आरे ॥३

भजन ॥१०२॥

सुमरन करले आनन्द कन्द का,
परम यही है सार यार ॥
श्रीमदपुरी पै मदनमोहन है। दर्शन पाकर ब्रजचंदका
परम यही है सार यार ॥ सुमरन० ॥१॥
कर में ब्रह्मज्ञान किरपान ले। बंधन काटो जमफंद का
परम यही है सार यार ॥ सुमरन० ॥२॥
परमधाम यह देह मानुष है। जामें बास अछूतानंद का
सुमरन करले आनन्दकन्द का ॥३॥

गाना दादरा, ताल ॥१०३॥

कोई सखी नन्द लाला ले आवे ॥
दोउ कर जोड़ बिनती कर कर।
जैसे बने तैसे परचावे ॥ को०१
मीठे मीठे बोल भीने प्रेम रस।
बार बार हमरा सनेह जतावे॥को०२
प्रान बचावो कोई जतन कर।
मुख मांगे जो ही फल पावे ॥को०३

दिन नहीं चैन रात नहीं निद्रा ।
अछूता भवन खाने को धावे॥को०३

गाना ॥१०४॥

हिल मिल करनी गुजरान,
यही सार है संसार में ।
भूलो समाधि अरु जाप, भूल जाना पुण्य पाप ।
कौन हर कौन आप, जब लागी ताड़ी यक सारमें॥हि०१
विरह जो संयोग भये, सोग उलट भोग भये ।
सरजन ये योग भये, नफ़ा है इसी व्योपार में ॥हि०२
जब जाना तुम ने दूजा, तब चाहित है पूजा ।
यहां एक है न दूजा, क्या धरा चार विचार में॥हि०३
जल में तुरंग जैसे, है जीव अरु ब्रह्म तैसे ।
लाख रूप हैं जो देखे, देखो एक अछूता कर्तारमें॥हि०॥

गाना ॥१०५॥

उठ जाग सोने वाले,
तेरा साथ जारहा है ॥
सुत मात पिता अरु भाई, नहीं होंगे तेरे सहाई ।
मोह नींद कैसे कर आई, चेत कोई चिल्ला रहा है ॥
उठ० ॥१॥
गफ़लत से होजा दाना, क्यों बनता है दीवाना ।
अजल तीरका देह निशाना जिस पै तू इठला रहा है॥
उठ ॥२॥

बड़भागी कांधे पर चढ़ा है, कोई बेकस आजज पड़ा है।
जो जन्मा सो मरा है, रंग ज़माना दिखा रहा है ॥
उठ० ॥३॥
क्यों करता है मेरा मेरा, सब पड़ा रहेगा डेरा।
है चिड़िया रैन बसेरा, अछूता तुझे जगा रहा है ॥
उठ ०॥४॥

लावनी ॥१०६॥

मेरे नूर से पुरनूर जहान, यही नूर जो हैगा खुदा।
वो बेहूदा है जो कहता, तू खुदा से हैगा जुदा ॥
बे तअल्लुक ऐन ज़ात मैं, ताऐउन से निहायत दूर हूँ।
जलवा हूँ मैं बेशरर, खुद बखुद मैं नूर हूं ॥
मूसा हूं कहते हैं जिसे, आप ही कोहेतूर हूँ।
खुद ही अनलहक़ हूँ, खुद दार खुद मनसूर हूँ ॥
इस नगीने दिल पै मेरे, साफ़ तो ये हैगा खुदा।
वो बेहूदा है जो कहता, तू खुदा से हैगा जुदा ॥१॥
ग़म न हमको ज़िनहार, न है ग़मख्वारी से काम।
न कभी ज़ारी से मतलब, न है बेज़ारी से काम ॥
ख्वाब ग़फ़लत से मुझे, न है बेदारी से काम।
न जनूं से कुछ है ग़र्ज़, न है हुशियारी से काम ॥
इस मेरी हस्ती से खालक़, खलक़ को हैगा मुद्दआ।
वो बेहूदा है जो कहता, तू खुदा से हैगा जुदा ॥२॥

काम नहीं रखता हूँ मैं, कभी किसी ऐमाल से।
हूँ बरी मैं सुबह शाम, अच्छे बुरे अफ़ाअल से॥
छुट गया हूँ कभी का, मैं दुनियां के जाल से।
कौन है जो है आगाह, हमनशीं मेरे हाल से॥
मैं हूँ आलमे आलिमुलग़ैब, अनलहक़ मेरी हैगा सदा।
वो बेहूदा है जो कहता, तू खुदा से हैगा जुदा॥३॥
योगियों के दिल में सदा, जिसका हरदम है ध्यान।
ज्ञानियों के मन में भला, जिसका हरदम है ज्ञान॥
मारफ़त वालों का है जो, हक़सादक़ दीनो इमान।
हैगी ज़बर ये शान मेरी, फ़लक भी है इसीकी शान॥
अछूता का आलम है हाहुत, बक़ा बक़ा न हैगा फ़ना।
वो बेहूदा है जो कहता, तू खुदा से हैगा जुदा॥४॥

नज़्म ॥१०७॥

तोहीद जज़बे इन्सान में, तेरी शकल नज़र आती है।
हर तसव्वुर तसबीर में, तेरी शकल नज़र आती है॥१॥
ज़या तेरे नूर से है, पुरनूर आरज़ो समा।
आलमे इमका में, तेरी शकल नज़र आती है॥२॥
अहल बातिन की नज़र, है मासवा वहम महज़।
लेक फ़हम क़ासर में, तेरी शकल नज़र आती है॥३॥
आलमे रोया की माहीयत, से ये उक़दा खुला।
हर क़लब अनासरमें, तेरी शकल नज़र आती है॥४॥

चश्म में तमाशाबीं, चश्मबीना तेरी नजर।
वहदत और कसरत में, तेरी शकल नजर आती है॥५॥
हस्ती की है मुनहसर, जात तेरी से बका।
जाहिर व बातिन में, तेरी शकल नजर आती है॥६॥
अब अदम कहैं इसे, या कोई इसको ऐन जात।
इन दोनों हालतों में, तेरी शकल नजर आती है॥७॥
है खुदा किससे जुदा, कौन खुदा से है जुदा।
ज़ात मुतलक़ मासवामें, तेरी शकल नजर आती है॥८॥
शौक़ दिल मये वहदत, हिज्र और वसल से बरतर।
काबे व बुतखाने में, तेरी शकल नजर आती है॥९॥
खुद ही खुदा ग़म हुआ, बुतों को देकर खुदाई।
इसलिए ज़ाहिर बुतों में, तेरी शकल नज़र आती है॥
खुदा तमाशा गर है, तमाशाबीना भी है खुदा।
अछूतानन्द आनन्द में, तेरी शकल नज़र आती है॥

नज़म ॥१०८॥

स्वयम् ईश्वर चित चैतन्य प्यारे।
मुक्ति दाता खुद कहाया है॥
यहां चैतन्य तहां ब्रह्म स्वयम्।
माहावाक्य श्रुति ने गाया है॥१॥
जब आत्म ज्ञान से देखा।
सर्वत्र सत्ता समान रूप प्रकट॥

जो था बीज वासनाओं का ।
ज्ञानाग्नि ने जलाया है ॥२॥
ये ज़ाहिर दीदबाज़ी का ।
चन्द रोज़ा दीदार ऐ ग़ाफ़ल।
हैगा बक़ा वही जिसने ।
दिल में दिल्दार पाया है ॥३॥
करोड़ों मर गये जोधा ।
निशां से बेनिशाँ होकर ॥
न ढूंढे से पता उनका ।
न किसी को मुख दिखाया है ॥४॥
इस दुनियां दार फ़ानी में ।
देह किश्ती मिसाल कागज़ की ॥
जान मिथ्या वेद ने करतव्य ।
ब्रह्म अछूतानन्द बताया है ॥

नज़्म ॥१०९॥

हो क्यों करके सफ़ा, ये क़लब तुझको हासिल।
जागुज़ीं शबो रोज़ दिल में, हैगा दुनियां का खियाल॥१॥
धंदे दुनियावी बहुत, जानके झगड़े बेहद।
कभी है ग़म आक़ारब, और कभी यारों से मलाल॥२॥
याद अलाही में कभी, जो मसरूफ़ होवे दम के दम।
खुदा से रहता है तेरा, वहां भी दुनियां का सवाल॥३

जा करके मांगी हेच दुनियां, ख़ुदा की खुद दरगाह में।
तुझ सा कोई है नहीं, आज दुनियां में बद इक़बाल ॥४॥
न रहे दुनियां से तअलुक़, जो मांगे हक़ से बरहक़।
हक़ अछूता है न जिस में, दुनियां दूं का दुक ख़ियाल ॥५

त्रेवट, रागनी, देस ॥११०॥

दिल कान्हा चुरा कर चल दिया।
न लीनी ख़बर न दिल दिया॥

है बेवफ़ा नामे फ़गन, है दरपै जिसके चह ज़क़न
चाहमें गिरा कर चल दिया, न लीनी ख़बर न दिल दिया
दिल० ॥१॥

देकर के दम दम बाज़ ने, घायल किया तेग़े नाज़ ने।
बिसिमिल बनाकरचलदिया, न लीनी ख़बरन दिलदिया
दिल० ॥२॥

इक आन में भला आन कर, ले तेग़ सर पर तान कर
सर जुदा मेरा कर चल दिया, न लीनी ख़बर न दिल दिया
दिल० ॥२॥

बे ख़बरसा लाला बन गया, कहता ये किसने ज़ुलम किया
अछूता बता कर चल दिया, न लीनी ख़बर न दिल दिया
दिल० ॥४॥

गाना ॥१११॥

सूरत जाकी सांवली, मीठे वाके बोल।
हमसे काहे करत मखौल ॥
हम को योग भोग कुबजा को,
यह मिला प्रीत का मोल ॥सूरत०१
योग न्यामत मित्र की ऊधो,
यह घर घर देवो तोल ॥ सूरत०२
प्रीत कठिन मरनो है भलो,
यह विष पीनी ले घोल ॥ सूरत०
जाइओ ऊधो कहिओ अछूता सों।
यह भली निकली पोल ॥
सूरत जाकी सांवली, मीठे वाके बोल ॥

लावनी ॥११२॥

प्यार तेरे का कोई इन्सान,
कैसे करे इतबार वे साइयां।
क्या अजब मोयां होयां नूं,
पड़ती ग़ज़ब की मार वे साइयां॥
बक़ा कहें या फ़ना कहें,
आबहयात या ज़हर कहें।
ज़ुल्म कहें या रहम कहें,
मिहर करम या क़हर कहें ॥

मुहब्बत कहैं या नजात कहैं,
क़फ़स क़ैद या सैर कहैं।
नुदरत कहैं या कुदरत कहैं,
वफ़ा या जफ़ा बहर कहैं॥
विदेह कहैं या अमर पुरुष,
खुशग़वार या ग़म ख्वार वे साइयां।
क्या अजब मोयां होयां नूं,
पड़ती ग़ज़ब की मार वे साइयां॥१॥
एक धरे हाथ पीठ पर,
एक शवाब में चूर रहें।
एक रंजीदा खुद शकल देख,
एक हुसन में मामूर रहें॥
एक शरम हया में डूबे,
एक दिखाते ज़हूर रहें।
एक दुखिया दुख में चिल्लाते,
एक सुख सम्पत भरपूर रहें॥
एक ठोकरें खाते दर दर,
एक हाथी पर असवार वे साइयां।
क्या अजब मोयां होयां नूं,
पड़ती ग़ज़ब की मार वे साइयां॥२॥
एक गोशे में खुद परस्त,
एक सर धुनते तेरी याद में।

एक वसल की मौज मनावें,
एक रोते हिज्र की फ़रयाद में।
इक नाम रटें दर्द जिगर में,
इक डूबे इश्क़ बे बुन्याद में।
एक खाल उतारें खुद दस्ती,
कुमवै अजनी कह दिलशाद में॥
एक से अनलहक़ कहला कर,
पकड़ चढ़ाया दार वे साइयां।
क्या अजब मोयां होयां नूं,
पड़ती गज़ब की मार वे साइयां॥३
फ़ासक़ करते घर में सदा,
बैठे बिठाये ऐश बहारां।
आशिक़ बेचैन तेरी फ़ुरक़त में,
नारे मारते फिरें बाज़ारां॥
राजा बलि पाताल में डाला,
बामन बन छल करे हज़ारां।
ज्ञानी ध्यानी, और भगत प्रेमी,
भूखे प्यासे जो फिरते हारां॥
कहो जी क्या नाज़ करतव्य पर,
खुद अछूता सरकार वे साइयां।
क्या अजब मोयां होयां नूं,
पड़ती गज़ब की मार वे साइयां॥४

नज़म ॥११३॥

अमीरी को गिरा कर नज़र से,
दिल पसंद फ़क़ीरी हमने की ।
हरकस से इख़लाक़ ख़ुलक़,
ये दिल पज़ीरी हमने की ॥
छोड़ करके ऐश अशरत,
आराम के सामान सब ।
हो हुये जब रिंद मशरब,
ये ख़ाक अकसीरी हमने की ॥
न दीया दीरार भूखे,
उठ चले दर से तसलीम ।
हरगिज़ न कहना कि बेकसों की,
ये दस्तगीरी हमने की ॥
बुत नहीं मिलते इबज़ में,
मिलता हैगा जब ख़ुदा ।
बेवफ़ाई भी बुतों की,
ये नज़ीरी हमने की ॥
ज़ाहिरा तजल्ली रुख़े सनम पर,
है ख़ुदा ख़ुद नूरे ख़ुदाई ।
देख सनम का रुतबा आला,
ये बग़लगीरी हमने की ॥

इश्क़ मेरे में फ़र्हाद मजनूं,
देख आये वो सर झुका।
कल के लड़के देख आखिर,
ये उनकी पीरी हमने की॥
इश्क़ में मनसब मिला,
जिस दिन हमको तक़दीर से।
आह नक़दी का है ख़ज़ाना,
ये सहरा जागीरी हमने की॥
मुद्दत गुज़ारी जाना हमने,
भूल गया खालक हमको।
दिल में है दिलदार की सूरत,
जब यादगीरी हमने की॥
अंधा भी दामन पकड़ कर,
पहुँचे मनज़िल मक़सूद पर।
इसलिए आला रहबर की,
ये दामनगीरी हमने की॥
अधर्म से जब गर्द गर्दू,
थरथराते वो डिगमगते।
धर्म के रक्षा की ख़ातिर,
ये मुलकगीरी हमने की॥
सर बरहना की पादशाहत,
हैगी तीनों जहान में।

इस शहनशाहे अछूता की,
ये आज़म वज़ीरी हमने की ॥

नज़म ॥११४॥

लामकां हैगा तो है दर कहां,
कुफ़्र का पर्दा उठा चुके हैं।
है ज़ाहिर ज़हूर ज़ाहिर दुई,
बातिन का झगड़ा मिटा चुके हैं॥
दर गया तो लो ये घर गया,
हाथों में जो कुछ था गया।
रह गया था खुद इश्क़ बाक़ी,
बहरे तौहीद में बहा चुके हैं॥
हूराने बहिश्ती क्यों दिल लुभाएं,
यहां और वहां है क्या धरा।
हिज्र व वस्ल से होकर फ़ारग़,
दिल दोनों जहां से उठा चुके हैं॥
देखा हक़ीक़त में जब ग़ौर करके,
न कुछ गया न कुछ हाथ आया।
शरीअत, तरीक़त, मारफ़त, तीनों,
ये झूठे झमेले उड़ा चुके हैं॥
हो करके खालिस मिटाई कुदूरत,
दुई का ये उठा करके पर्दा।

फ़ानूश में देख शमा बे पर्दा,
इसी तर्ज़ नक़्शा जमा चुके हैं ॥
सूरत यही और सूरत यही है,
सनम व ख़ुदा में है क्या तफ़ावत।
इस आईना तौहीद वारी में,
मुंह को मुंह दिखा चुके है ॥
आने की ख़बर न मालूम जान,
कहां से आये किस गाम जाना।
न आज तक बताया किसी ने,
हजारों से हम पुछवा चुके हैं ॥
बाप बेटा और बहन भाई,
दोस्त दुश्मन हैं ख़्वाब ख़ियाली।
ये हैंगे सब झूठे करश्मे.
ख़ुद को ख़ुद बता चुके हैं ॥
सरसब्ज न करेगा फ़लक,
भुन गया आतिश में जो दाना।
हम भी ज्ञान की आतिश से,
बस फ़ेल अपने जला चुके हैं ॥
मिला होगा कोई किसी को,
बावफ़ा जेह मुक़द्दर से।
न मिला करोड़ों बार हम भी,
इस मुक़द्दर को आजमा चुके हैं ॥

छोड़ बैठे हविस दो जहां की,
हो करके स्वयम् अछूतानन्द ।
इस दिल को खेल खिलाने को,
शौक़ अपना दिलवर बना चुके हैं ॥

नज़्म ॥११५॥

चर्खे मितमगर ने किया सितम,
राम को बनवास दिखाने का ।
राज के बदले हुआ हुक्म,
श्री रघुवर को बन जाने का ॥
बसती में नहीं धरें क़दम,
हुक्म बन रहने का है ये ।
खाल छाल तन पर धारें,
कंदमूल फल खाने का ॥
कैकई बचन सुन राम मुस्कराने
नहीं रंज न दिल में हिरासा ।
भला भारत को मिली अजुध्या,
हमें हुक्म जंगल के बसाने का ॥
लखन ने सुनकर किया कोप,
उड़ादूं छिन में चौदह भवन ।
किसका हौसला है सन्मुख,
मैदान जङ्ग में आने का ॥

लिया पकड़ हाथ राम ने,
बिगड़ा रंग लखन को देख।
सुनो भाई है धर्म हमारा,
पिताजी के वचन निभाने का ॥
दिया उतार सब ठाठ राजसी,
किया फ़क़ीरी राम ने बाना।
यही वक़्त राम बोले लखन जी,
धर्म में क़दम बढ़ाने का ॥
शूरवीर रहें सदा शाद,
आपत को सुख बतलाते हैं।
धीर पुरुष नहीं है भाई,
दुख में मन दहलाने का ॥
चले राम होकर के अछूता,
सिर्फ़ जानकी लखन ले साथ।
पुष्प बरसावें देवी देवता,
देख बदला रंग ज़माने का ॥

नज़्म ॥११६॥

सृष्टि पूर्व नहीं नाम रूप,
एक सत्य कर्ता मौजूद था।
लेकिन उस नक़्क़ाश के दिल में,
नक़्श का नक़्शा मौजूद था ॥१॥

जहां नहीं था जिस वक्त,
और जमीं आसमां न था।
दूरो दराज लामकां तलक,
खाला में उजाला मौजूद था॥२॥
आलम था ईजाद वहदत में,
जहूर मुनव्वर नजर में होकर।
पर्दे में बेपर्दा फ़ानूस,
ये नूरे जिया मौजूद था॥३॥
खेंच लाया है शौक मेरा,
कहते हैं जानां जिस को।
कत्ल खातिर दिलरुबा की,
ये दिल मेरा मौजूद था॥४॥
इतकाद से क्योंकर न दिखा,
दीदार करके उस जानां का।
हुस्न हक़ जौहर हसीनों का,
रुख पै चमकता मौजूद था॥५॥
मुक़द्दर अपना लिखा लाया भोग,
घटे बढ़े नहीं पाव रत्ती।
फ़िकर से रहना हो बेफ़िकर,
वो कर्म दाता मौजूद था॥६॥
नहीं साथ कुछ ले जायगा,
होश कर ऐ बेखबर।

आया था जिस वक़्त नादान,
तेरे पास क्या मौजूद था ॥७॥
छुप के करता रहा गुनाह,
ज़ाहिर बना आबद की शकल ।
ये कैसा पर्दा दिखाया तू ने,
दीदह दिल तेरा मौजूद था ॥८॥
शहर छोड़ क्या ढूंढे है तू,
ऐ ग़ाफ़िल ग़ार जबल में ।
जहवा गाहे देख बग़ल में,
लगा आसन बैठा मौजूद था ॥९॥
फ़ैज़ रसाई क्यों न पाया,
उठा के दरमियां से पर्दा ।
गञ्ज वहदत घर में ज़ाहिर,
देख ले गड़ा मौजूद था ॥१०॥
क्यों न हुए आज़ाद आरिफ़,
पीके ज़ौक मारफ़त का शरबत ।
साथ तेरे वाक़िफ़ ये रहबर,
स्वयम् अछूता मौजूद था ॥११॥

नज़म ॥११७॥

हर उलफ़त में अफ़सोस, हम बहे जाते हैं ।
हज़ारों तरह के रंज दिल पै सहे जाते हैं ॥१॥

दिल लगी से बढ़ कर, कोई है न बुरी बला।
दिल किसी से न लगाना, हम कहे जाते हैं॥२॥
इश्क़ के कूचे में, कुछ नहीं सिवाय हसरत।
दिल लगा के पछताना, हम कहे जाते हैं ॥३॥
हैगी बेवफ़ा चमकती, रग रग में बुतों के।
दिल समझ करके देना, भला कहे जाते हैं॥४॥
लोग कहते हैं बुतों को, दे दिया क्यों ये दिल।
खुद दिया दिल किसने, छीन लहे जाते हैं॥५॥
नाजबरदारों पर जुलम, ओ सितमगर बाज़ आ।
मुबारक नाज़ो अदा तुझे, दुआ दहे जातेहैं॥६॥
बढ़कर बढ़े इक़बाल, कभी हो न बाँका बाल।
तेरी हाफ़िज़ दुआ मेरी दिल से कहे जाते हैं॥७॥
किसी का न सबर ले, डर फ़लक से ऐ ज़ालिम।
मुद्दत से तेरे मज़लूम, जुल्म सहे जाते हैं ॥८॥
निगाहे क़हर ही से, कभी देख तो लिया कीजे।
दर पर तेरे सुबह शाम, ऐसा कहे जाते हैं ॥९॥
होगये हज़ारों शहीद, तिरछी तेरी निगाह से।
क्या फूटे हैं नसीब, हम रहे जाते हैं ॥१०॥
खुदपरस्ती अछूता दाएम, बुतपरस्ती नहीं काएम।
दिल उठा दोनों जहां से, साफ़ कहे जाते हैं॥११॥

नज़म गाना ॥११८॥

दिल ख़ूब इतक़ाद से भरले ।
फिर दिल चाहे सो करले ॥
दोस्त दुश्मन भलाई बुराईसे, कुफ़र होवे दूर यकताईसे।
फ़क़त क़लब की सफ़ाई से, मुलाकात सांई से करले॥
दिल ख़ूब इतकाद से भरले, फिर० ॥१॥
वेदमें जीव ब्रह्म इकहोना, हैगा जगत ये तेरा खिलौना।
फिर किसकी ख़ातिर रोना, हाथ दिल अपने पर धरले॥
दिल ख़ूब इतकाद से भरले, फिर० ॥२॥
विद्यासेदीपकज्ञानजगाना, नामअज्ञानअंधकारमिटाना।
त्रिविध ताप जड़से उड़ाना, भवसागर निर्भय तरले॥
दिल ख़ूब इतकाद से भरले, फिर० ॥३॥
ऐश बहारां ख़ूबां से करके, पी मय जाम भर भरके ।
उड़ामज़ोदिन रात ज़रके, पकड़ कान ज़मानाके कतरले॥
दिल ख़ूब इतकाद से भरले, फिर० ॥४॥
मुक्ति मार्ग द्वार खुला है, तुई सत् से सत्य तुला है।
तेरे हाथसे अमृत घुलाहै, खड़े देवते हाज़र नज़र ले ॥
दिल ख़ूब इतकाद से भरले, फिर० ॥५॥
हूरां से भोग करे तू, नाना रूप से संकट हरे तू ।
इच्छा रहत सबसे परे तू, चाहे कर्म अकर्म तू करले॥
दिल ख़ूब इतकाद से भरले, फिर० ॥६॥

है बैकुण्ठ ये तेरा बनाया, कल्पवृक्ष भी है तेरीछाया।
है पदमाकर भी तेरा साया, तू अछूता चाहेसो करले ॥
दिल ख़ूब इतकाद से भरले, फिर० ॥७॥

नज़म ॥११९॥

शग़ल में मशगूल अपने सदा हम।
खबर न किसी की न है कोई हमदम ॥
दुनियां का दिल में न आया कभी ग़म।
लामकां का कहो अब खयाल क्या है ॥१॥
नज़र में न आये अब तक हमारे।
बुते शोख़ के वो फितना नज़ारे ॥
ये हैं हुस्न के चन्दरोजा शरारे।
रह गुज़र दुनियाँ का जमाल क्या है ॥२॥
क्यों राहे तलब में फिरता है बेकार।
है रहबर नहीं राहे हक़ में दरकार ॥
शौक़ शग़ल का है हक़ बरक़रार।
हुई मफरूज़ फ़र्ज़ों का जलाल क्या है ॥३॥
अदल है जबर ये बढ़कर सरासर।
जलते ख़ौफ़ से परियों के हैं पर ॥
क्या ताक़त इंसान हिलाये जरा सर।
खोले मुँह फ़रिश्ता की मजाल क्या है ॥४॥
हमने ये जाना बने तुम नूर की मूरत।
उड़े देख करके जहां की क़ुदरत ॥

नज़र भरके देखी जिसने तेरी सूरत।
खुदा खुद हो जाना फिर मुहाल क्या है ॥५॥
हैगी सादिक़ जिसके दिल में सबूरी।
फिर क्यों किसी की बजाये हजूरी॥
न है लातमा में ये देखी ग़यूरी।
सबर अकसीर से बढ़ कर माल क्या है ॥६॥
अजब खुद परस्ती न जिस में तसव्वर।
यही खुद परस्ती राहे हक़ रहबर॥
हैगा हक़ जिस में न ज़ेरो ज़बर।
तौहीद में हिज्र व विसाल क्या है ॥७॥
न बुतखाने में कभी सिर झुकाया।
गोशे में बैठ न ज़बां को हलाया॥
न दस्त क़ादर के दर पर फैलाया।
करना किसी और से सवाल क्या है ॥८॥
मेरा ये क्या मुँह जो मागूँ खुदाया।
खुद बखुद ही देता क्या मागूँ ख़ुदाया॥
खुदाई तक देता अगर मागूँ खुदाया।
हर जाये खुदा खुदा का सवाल क्या है ॥९॥
हैंगे लातमा जहां में मरदे फ़क़ीर।
जो हैं लासानी जो हैं बे नज़ीर॥
तनहाई जिनकी है जोहर अकसीर।
कहो अकसीर से बढ़ कर माल क्या है ॥१०॥

करना सख़ावत ये मरदों का काम।
नेकी से मुल्कों में हो नेक नाम॥
दरिया कब उतरे पीओ सुबहू शाम।
घटे माल दाता का मजाल क्या है॥११॥
मुनअम मूज़ी तू क्या ले जावे उठा।
ये रहे माल तेरा धरा का धरा॥
न कीया खर्च तूने इसे राहे ख़ुदा।
धरना माल शरै में हलाल क्या है॥१२॥
किसी को हाथ से न दिया पर न दिया।
ख़ुद ख़र्च आपसे न किया पर न किया॥
उड़ा करके मजा न लिया पर न लिया।
बुरा ऐसा तेरा ये ख़याल क्या है॥१३॥
हवैदा ख़ुदा ख़ुद जहां ख़ुद ख़ुदाई।
बग़ैर ख़ुद के ढूंढ़ा कौड़ी न पाई॥
जब रास्ती में हुई ख़ुद रसाई।
सचाई में देखा कीलो काल क्या है॥१४॥
ये चाल दुनियां से हैगी निराली।
ख़िरामे नाज़ में न देखी न भाली॥
हर क़दम पर तर्ज बांकी निकाली॥
थर्राया फ़लक ग़जब चाल क्या है॥१५॥
अजब हक़्क़ानी के हैं लनतराने।
हक़ीक़त में कहां ये होंगे फ़साने॥

खुदा कब करेगा भला झूठे बहाने।
लासानी शकल की मिसाल क्या है ॥१६॥
चमका हक़ सादिक़ जब हमारा सितारा।
वो अख़तरे ताबां डर डर कर पुकारा॥
करे शमशो क़मर क्या ताक़त नजारा।
हैगा खुदा हैरां ये कमाल क्या है ॥१७॥
न रहे क़ाबिल हम दो जहां के।
जहां के क्या न रहे दिलो जां के॥
निशां कब रहा गये बे निशां के।
गुमनाम का जनूब व शुमाल क्या है ॥१८॥
गुजरती है मेरी भला जिस तरह से।
गुजरे हर किसी की भला इस तरह से॥
मुझ पर है रहमत आज हर तरह से।
है किस को मालूम काल हाल क्या है ॥१९॥
हैगा वो गदा बहुत ही बद इक़बाल।
खुदा से सदा मांगे दुनियां का माल॥
गोशे में रियाजो का करता सवाल।
ऐसे बद से देखा बदतर हाल क्या है ॥२०॥
जहां से चला जाना न करना है देरी!
गोया किसी रमते राम की है फेरी॥
पूछें हैं ग़ाफ़ल ऐ भला जान मेरी।
कहो ऐसा तेरा ये हवाल क्या है ॥२१॥

क्या पूछो तुझे क्या बताऊं हमदम ।
गया हूं गुज़र दो जहानों से इक दम ॥
न बाक़ी दर्द न दरमां का है ग़म ।
तायरे लाहूती को कहो जाल क्या है ॥२२॥
ज़र आगे धरें या धरें तेग़ सर पर ।
दोनों हम बराबर मुवाहद के दर पर ॥
है बुनियाद जिन की तौहीद के घर पर ।
यगाना बिगाना उन्हें ख़याल क्या है ॥२३॥
भूला अज़ीज़ों को होकर दीवाना ।
भूला यगानों को होकर मस्ताना ॥
भूला ख़ुदा को देख कर बुतखाना ।
अछूता ही जाने कि ये कमाल क्या है ॥२४॥

नज़म ॥१२०॥

ग़ाफ़िल कहते हैं अपने आप,
ख़ुद दिल में दिल्दार नज़र आया ।
मिसाल आईना के रोबरू,
ख़ुद अक़्स दीदार नज़र आया ॥१॥
अबस है ऐसी तकरीरो तहरीर,
अजब तर्ज़ के लोग निराले ।
तौहीद मनज़ज़ा लासानी बताकर,
फिर कहते ग़फ्फ़ार नज़र आया ॥२॥

जरा अक़्ल को दिल में जगह दो,
वो हैगा जुदा बेगाना क्या।
जो था तसव्वुर मफ़रूज़ फ़र्ज़ी,
वो बन कर इसरार नज़र आया॥३॥
ग़फ़लत क़दे के दहर में,
खुद कांधे पर सवार होना।
आंख नज़ारा करे ग़ैर का,
न अपना इज़हार नज़र आया॥४॥
है अछूता मुर्ग़ लाहूती,
ये इशारत है एक रमज़।
नासूती का है ये रुतबा,
खुली आंख अग़यार नज़र आया॥५॥

नज़म ॥१२१॥

खुद खुदा गाड ईश्वर औलिया,
वो जो हैं मुझ में नहीं।
सिफ़त निजात नेचर और माया,
वो जो हैं मुझ में नहीं॥१॥
फ़र्शो अर्श ले लामकां तलक,
दारफ़ानी की है धार दुनियां।
सार असार हैंगे इसरार,
वो जो हैं मुझमें नहीं॥२॥

मालूम किसको हैं ये कब के,
बनाए किसीके या खुद बखुदहैं।
कोटान सृष्टि ब्रह्मण्ड नाना,
वो जो हैं मुझ में नहीं ॥३॥
खुद उक़दा खुद उक़दाकुशाई,
दोस्त दुश्मन रहज़नो रहबर।
पैमां वफ़ा बेवफ़ा में इन्कार,
वो जो हैं मुझमें नहीं ॥४॥
हिंदू सिजदा बुत को करते,
ज़ाहिद करते तौफ़ हरम का।
कुफ़्र करामात और फ़ुक़्र फ़क़ीरां,
वो जो हैं मुझमें नहीं ॥५॥
कौन शहूद है कैसा शाहिद,
मशहूद हैं कहते किस को।
हिसाब है किश मशाहिदे में,
वो जो हैं मुझ में नहीं ॥६॥
ज़बां पर लुत्फ़ जान तन में,
मुद्दआ ठहरे दिल में होकर।
कुलो जुज़ में हैगी तफ़ावत,
वो जो हैं मुझ में नहीं ॥७॥
महरो मुहब्बत दिल जोई मुरव्वत,
जफ़ाओ ज़ुल्म दग़ा हसदनार।

अबरे करम कहीं बकें ग़ज़ब है,
वो जो हैं मुझ में नहीं ॥८॥
जुदाई हैगा नाम मज़ाजी,
बस हक़ीक़ी बस्तगी को कहते।
हक़ीक़त में मारफ़त के झमेले,
वो जो हैं मुझ में नहीं ॥९॥
ग़ैर नहीं मा मौजूदगी में,
दो जहां से उठा के दिल को।
बग़ैर अछूतानन्द के टुक,
वो जो हैं मुझ में नहीं ॥१०॥

गाना ॥१२२॥

दिल यह मेरा तेरा,
कैसे एक होगा यार॥
तुम कहते हो तेरा मेरा, मैं कहता हूँ मेरा तेरा।
मेरा तेरा खुद उलझेरा, कौन करे सुलझेरा यार॥
दिल० ॥१॥
तुमतो हमसे नाज़ करते, हम तुमको न्याज़ करते।
दिल में दिल अंदाज़ करते, क्यों करते हेरा फेरा यार॥
दिल० ॥२॥
हम तुम हैंगे यकताई, कहने को हैगी दोताई।
मनको मनसे तोलो भाई, है नीचा कवन उचेरा यार॥
दिल० ॥३॥

पांचपचीसों का यह देरा, अज्ञान रैन अहंकार लुटेरा।
करो विचार सम्हालो डेरा,अब देखो भया सबेरा यार॥
दिल० ॥४॥
न पैमाना न है साक़ी, मय तौहीद न तू मैं बाक़ी।
एक अछूता छोड़ तलाफ़ी, ऐसे है सुलझेरा यार॥
दिल० ॥५॥

गाना ॥१२३॥

मेरा तेरा तेरा मेरा,
कैसे दूर होवे यार ॥ कैसे दूर होवेरे॥
मेरा तेरा जगत पसारा, मेरा सुत तेरा परिवारा।
काम क्रोध लोभ अहंकारा, कैसे चूर होवे यार॥मेरा०१
तुमशहन्शाहो अभिमानी,ख़ाकनशीं हमख़ाकनिशानी।
हमरी अर्ज़ तुमहो लासानी,कैसेमंज़ूरहोवेयार॥मेरा०२
तुम सर्वज्ञ सर्व हो व्यापी, मैं इक देशी बन्दा ख़ाकी।
अंधकार की मूरति थापी,कैसे नूर होवे यार॥मेरा०३
अछूतानन्द वेद विलासी, जीवानन्द भरमें चौरासी।
जो कहलाता औगुन रासी, कैसे हज़ूर होवे यार॥
मेरा तेरा तेरा मेरा,
कैसे दूर होवे यार॥

गाना ॥१२४॥

दाता कैसी नज़र डाली, मैं भई मतवाली।
एक नज़रमें बेड़ा पार है, ऐसे हो तुम ख़याली॥मैंभई०१

जिधर देखूं उधर तुही तू है, तुही है मेरा वाली॥मैं भई०२
आ बसे हो मेरे ही दिलमें, औरों से कर खाली॥मैं भई०३
कोई नहीं महरम मेरे दिल से, लोग बजावत ताली॥मैं०४
करता धरता होकर अछूता, ऐसे हो जनाब आली॥मैं०५

लावनी ॥१२५॥

कर रहा तमाशा क्या ज़माना,
खान पान और भोग चरम।
जिस की ख़ातिर बहुतों ने,
दिया छोड़ सनातन धरम॥
बहुत बन बैठे हैं समाजी,
अयोगक पंथ सिखलाने लगे।
तीर्थ व्रत में क्या धरा,
मासूमों को वो फिसलाने लगे॥
हैगा फ़जूल ये पुण्य दान,
देकर लेक्चर चिलचिलाने लगे।
दग्ध नारि उत्तम बता कर,
अनर्थ का जाल फैलाने लगे॥
विषय विलास का पीकर जाम,
दिया छोड़ महाजन शर्म॥
जिसकी ख़ातिर बहुतों ने,
दिया छोड़ सनातन धर्म॥१॥

नमाज़ रोज़ा करके तर्क,
गिरजा में सर झुकाने लगे।
क़ाबा खुदा का घर नहीं,
कुफ़्र का कलमा पढ़ने लगे॥
वो जो क्रिश्चियन बन बैठे,
आप को सालवेशन बताने लगे।
सिर नंगा टोप बग़ल में,
वो जैंटिलमैन कहाने लगे॥
बाप दादा से होकर बाग़ी,
दिया छोड़ कुलीन कर्म्म।
जिस की ख़ातिर बहुतों ने,
दिया छोड़ सनातन धर्म्म॥२॥
कर कर ख़ुशामद नीच जो,
मुनसिफ़ का मन्सब पाने लगे।
जिन के ज़ुल्मों से मज़लूम जो,
आजिज़ ग़रीब तड़पाने लगे॥
ग़ैरत जुदा जो पापात्मा,
ज़ाहिरा वो माला फिराने लगे।
ज़रदार मग़रूर कर ग़रूर,
हर दम बेदमों को सताने लगे॥
अबे तबे का बोल बोलें,
दिया छोड़ कलाम नर्म।

जिसकी ख़ातिर बहुतों ने,
दिया छोड़ सनातन धर्म ॥३॥
जो ख़ानदान थे जावदान,
हो ख़मीदा शराफ़त दिखाने लगे।
कर याद बुज़ुर्गों का गुमान,
राहे रास्त सीधा बताने लगे॥
थे रहम दिल जो मर्दे फ़क़ीर,
दर्दी का दर्द बटाने लगे।
जो थे ज्ञानी होकर आज़ाद,
अछूता पतङ्ग उड़ाने लगे॥
अभय परमपद को पाकर,
दिया छोड़ अज्ञान भ्रम।
जिसकी ख़ातिर बहुतों ने,
दिया छोड़ सनातन धर्म॥४॥

गाना ॥१२६॥

फ़लक का है दौर दोरङ्गा,
क्या क्या रंग बरसाता है।
ताज़ा ताज़ा रंगतें, बदलता रहता है मुदाम्।
इस चमन जारे जहां में, क्या क्या चंग बजाता है
॥ फ़लक० १॥

आलम से इख़्त्यार की, हरचन्द सुलह मिल ।
मगर अपने साथ शबोरोज़, क्या क्या जंग मचाता है॥
॥ फ़लक० २ ॥
शबाब की मस्ती में, नक्कारख़ाने की कब तमीज़ ।
फ़ितनेल हराते आंखों में, क्या क्या भंग पिलाता है॥
॥ फ़लक० ३ ॥
हैगा इश्क़ आशिक़ ख़ुद, अछूना हैगा सब ज़हूर ।
लामकां पर खैंच कर, क्या क्या पतंग उड़ाता है॥
फ़लक का है दौर दोरङ्गा, क्या क्या रंग बरसाता है॥४॥

नज़्म ॥१२७॥

हम से पर्दा न कर ऐ पर्दानशीं देख लिया ।
अब्र में छुपता है क्यों माहे जबीं देख लिया ॥१॥
ये अजब पर्दा है जलवा तुम्हारा हर जा ।
आपका हमने सनम नक़्शनगीं देख लिया ॥२॥
आप का ज़िक्र तो हैं शेख़ व ब्रहमन करते ।
क्या उन्होंने तुम्हें रस्ते में कहीं देख लिया ॥३॥
कोह पर तू न मिला और न मिला सहरा में ।
तुझको दरिया में भी ऐ गोशहनशीं देख लिया॥४॥
काबे में क्या है रखा हर जगह तेरा है ज़हूर ।
गोशह दिल में मेरे तू है मकीं देख लिया ॥५॥
तूर पर क्या था गया आग जो मूसा लेने ।
दिल में अपने भला क्यों उसने नहीं देख लिया ॥६॥

तीर्थ जातरा हैं सिर्फ़ तसल्ली के लिये ।
लोग देखेंगे कहां हमने यहीं देख लिया ॥७॥
ज़ब्त इनफ़ास से क्या सहरानशीं क्या हैं ।
जब किया तेरा तसब्बुर तो यहीं देख लिया ॥८॥
हवस दम क्या है फ़क़त नक़्श दुई मिट जाना ।
मिट गई हस्ती मोहूम वहीं देख लिया ॥९॥
इक क़यामत तेरे चहरे में नज़र आती है ।
जब कभी मैंने तुझे चींबर ज़बीं देख लिया ॥१०॥
अछूता सिर्फ दीदार से सेरी नहीं होती है ।
क्या हुआ तुझ को ज़रा जुहरह ज़बीं देख लिया ॥११॥

नज़म ॥१२८॥

आजिज़ किया बेकस बनाकर,
अफ़सोस इस बेख़बरी ने ।
अश्क आंखों से लगा जब टपकने,
तब इश्क़ की ख़बर पड़ी ॥१॥
इश्क़ की आग न लगाये लगे,
न बुझाये बुझे जिनहार ।
दिल का ख़ाका जब उड़ गया जल कर,
तब आतिश की ख़बर पड़ी ॥२॥
भोली भाली सूरत को देखकर,
दीवाना हुआ बावला सा

उड़ाने लगा ख़ाक जब सर पर,
तब सूरत की ख़बर पड़ी ॥३॥
दिया साक़ी ने भर कर जाम,
छुप कर तलुफ़्फ़ से ।
दस्तार भूली जब यादे सर गई,
तब बादा की ख़बर पड़ी ॥४॥
है मुहब्बत का ये क़ार दरिया,
बे किनार न तह जिस का ।
बह चला जब लहरों में आकर,
तब बहर की ख़बर पड़ी ॥५॥
आप ही आ बस बना कर क़ालिब,
पर्दा दर पर्दा हो करके ।
फँस करके जब लगा करने तोबा,
तब मैमार की ख़बर पड़ी ॥६॥
ये है तिलस्म अजब क्या जाने,
जादू किस जादूगर का ।
इतना समझे जब कुछ न समझे,
तब जादू की ख़बर पड़ी ॥७॥
अगर हम जानते बस था भला,
कि ख़ुद पसन्दी न करते ।
किसी बुत ने जब न देखा ख़ुदा,
तब ख़ुदा की ख़बर पड़ी ॥८॥

जुदा कब ख़ुदा मेरी बद गुमानी,
दिखाती फिरे दैरो हरम ।
जुदाई में ला जब अवारा किया,
तब जुदा की ख़बर पड़ी ॥९॥

अर्शो फ़लक ज़मीं दर तह,
है हाज़िर बाश हर जाये ।
है वस्ल जब कुल में कुलका,
तब कुल की ख़बर पड़ी ॥१०॥

ज़ाहिर भी ये रंग तेरा है,
बातिन भी तेरी है बू ।
हर हर में हैगा जब तुही तू,
तब हर की ख़बर पड़ी ॥११॥

था जो मालो मनाल लुटा चुके,
रह गये ख़ालिस ख़ला होकर ।
आला हुए जबकि नक़्द नारायण,
तब ख़ला की ख़बर पड़ी ॥१२॥

महव हरशै में है अछूतानन्द,
है हरशै से ख़ुद बरी ।
तसव्वुर में आकर जब न ठहरे,
तब अछूता की ख़बर पड़ी ॥१३॥

नज़म ॥१२९॥

दुनियां को हेच कहना, हेच माना कुछ तो है ।
संसार असार हैगा, सार जाना कुछ तो है ॥१॥
यकता यगाना हैं हम, कहते तौहीद जिस को ।
कहने से ज़ाहिर आया, फिर बेगाना कुछ तो है ॥२॥
कोई लामकां को कहता, हैगा मकां हमारा ।
था कलमा येही इज़हार, घर बनाना कुछ तो है ॥३॥
वहदत में हर्फ़ दुई, हरगिज़ न आ सके ।
सरासर दुई को गाना, ये बहाना कुछ तो है ॥४॥
शमा जो तन जलाया, आशिक के इश्क में ।
तजल्ली पै हो परवाना, खुद जलाना कुछ तो है ॥५॥
है शहीदे नाज़ बुलबुल, गुलों पै चहचहा कर ।
होकर मस्त सरशार, खार खाना कुछ तो है ॥६॥
हैं गुल खिले हजारों, हर यक अदा निराली ।
बाग़े बहार आकर, खिल खिलाना कुछ तो है ॥७॥
क्या अंजुमन है फूला, पीरो जवान गुलफ़ाम ।
चन्द रोज़ा ज़िंदगी का, ये जमाना कुछ तो है ॥८॥
आशिक माशूक होकर, शौक़त के जख़्म खाकर ।
लैला मजनूं का यारो, टुक फ़िसाना कुछ तो है ॥९॥
उलफ़ते जानां का लुत्फ़, है अछूतानन्द हक्क़ानी ।
हो हक़ीक़ी या मजाज़ी, गज़ल गाना कुछ तो है॥१०॥

गाना ॥१३०॥

क्यों करता है तकरार,
यार इक दम का गुजारा है॥

देख लो ये अजब तमाशा,
क्या जाने झूठा कि सांचा।
ज़ाहिरा पानी बीच बताशा,
यार इकदम पसारा है॥ क्यों०१

हयात का आना क़ज़ा का जाना,
न यहां घर न वहां ठिकाना।
है संसार ये स्वप्न बहाना,
यार इक दम का सहारा है॥क्यों२

रहो जी शाद दिल्दार प्यारे,
हँस बोलो ये सखुन हमारे।
जो दीखें सो रूप तुम्हारे,
यार इकदम का नज़ारा है॥क्यों०३

है करश्मा हुसन का झूठा,
वह कौन जिससे नहीं रूठा।
अछूता होकर दिखावे ठूंठा,
यार इकदम का उजारा है॥ क्यों४

नज़्म ॥१३१॥

अगर हम न होते तो होता न कुछ,
किया हमने दुनियां में पैदा ख़ुदा।
इसी बाइस आला कहाये ख़ुदा से,
मेरे दिलने दिलबर बनाया ख़ुदा ॥१॥
हवैदा किया था ख़ुदा फ़क़त हमने,
बग़ैर हमरे इकला वो रोता ख़ुदा।
न लेता ख़बर इसकी आकर कोई,
खड़ा सरको अपने वो धुनता ख़ुदा ॥२॥
बक़ौल हम ख़ुदा से पहले दो साल,
न था जिस वक़्त कुछ कीलो काल।
न शम्सो क़मर थे न चौदह तबक़,
न आदम अदम और नहीं था ख़ुदा ॥३॥
न ज़ातो सिफ़ातो न हस्बो नसब,
न महरो सितम था न लुत्फ़ो ग़ज़ब।
न इल्मो अमल था न सुहबत आलमा,
न बीबी हव्वा थी न बाबा ख़ुदा ॥४॥
अजब मफ़रूज़ फ़र्ज़ी तसव्वुर में आया,
हमारी ये हैगी सब दुनियाँ माया।
फ़क़त एक हर जा हमारा ही साया,
बग़ैर हमरे कहांसे कहो आया ख़ुदा॥५॥

कहीं मुल्को मालिक कहीं इमलाक हम,
कहीं पर ज़मीं खला अफ़लाक हम।
कहीं आबो आतिश कहीं खाक हम,
कहीं वली मुरशद बने आला खुदा ॥६॥
न होते अगर हम न इज़हार होता,
ज़हूरे दो आलम न ज़िनहार होता।
न तू बतू होते न एतबार होता,
खुलासा ये मतलब इन्सां हैगा खुदा॥७॥
हमारी अक़्ल से कुल आक़िल कहलाये,
हमारे फ़ज़ल से कुल फ़ाज़िल कहलाये।
हमारे इल्म से कुल आलिम कहलाये,
हमारे नूर का यक शरारा खुदा ॥८॥
हमारे ही सिजदे से मसजूद आलम,
हमारे ही मक़सद से मक़सूद आलम।
हमारे ही अबूदत से माबूद आलम,
हमारे हक़ ने हक़ दिखाया खुदा ॥९॥
यही अर्श कुरसी पर हक़ दिखाया,
यही बुतख़ाने में खुद बुत सजाया।
यही नूर रोशन अर्श पर चढ़ाया,
अजब हैगी मेरी ये माया खुदा ॥१०॥
नज़र ग़ौर देखा न इतलाक़ मुझ में,
न अर्ज़ो समा है न आफ़ाक मुझ में।

न इल्मो अमल है न अख़लाक मुझमें,
न है जीव ईश्वर न माया ख़ुदा ॥११॥
बस गुमनाम हूं न मेरा निशाँ,
नहीं इतनी ख़बर कि हूं मैं कहाँ ।
है ये क़िस्सा हमारा एक तुरफ़ा बयां,
हैरत ज़दा हूँ मुदआ कैसा ख़ुदा ॥१२॥
मिला मुझको ब्रहमन किया राम राम,
आगे आया मुसलिम तो कीना सलाम ।
अछूता कहे सबसे हम दम कलाम,
अगर है तो यही आदम प्यारा ख़ुदा॥१३॥

नज़म ॥१३२॥

देखे ज़मीं के ऊपर, फलक पै मिज़ाज जिनका ।
अबरू खिचे कमां हो, गोया हैगा राज जिनका ॥१॥
शह हुस्न हसीनों पै, करामत है ख़ुदा की ।
जनाब इश्क़ दस्तबस्ता, सरख़न मोहताज जिनका॥२॥
नाम दार शाह ज़माना, लासानी हैं बने जो ।
मलायक क़ुरबान उन पर, ज़बर तालैताज जिनका॥३
उलफ़ते ज़ख्म का मज़ा, घायल ही जानता है ।
ज़ख़मी शौक़ से हैं, क्या हो इलाज जिनका ॥४॥
वहदत के कूचे में, क्या हक़ीक़ी क्या मजाज़ी ।
यकता नजर में लावें, अछूता रिवाज जिनका ॥५॥

नज़्म ॥१३३॥

दिले नादां समझ लेना, मेरी इक बात थोड़ीसी।
होना बेदार अरे ग़ाफ़िल, रही अब रात थोड़ीसी॥१॥
विषय भोगों में ऐ मूरख, गंवाये तीनों पन तूने।
गुज़रता है ये चौथापन, है बाक़ी हयात थोड़ी सी॥२॥
अजल का जब पयाम आया, यहांसे कूच होने का।
न देगी फिर ज़रा मोहलत, अजल बद ज़ात थोड़ीसी॥३
यह धन दौलत न जायेगा, तुम्हारे साथ दुनियाँ से।
है खूबी ये जो कर लेना, दर पर ख़ैरात थोड़ीसी॥४॥
जहां में दुश्मनी व बुग्ज़, बदी करने से क्या हासिल।
निकोई हो सके करना, किसी के साथ थोड़ीसी॥५॥
राह मक़सूद पर सीधा, मिसाले तीर जाने दे।
बदल दे ओ फ़लक ज़ालिम, टेड़ी आदात थोड़ी सी॥६
गुले पज़ मुर्दा है क्यों दिल, तरावत की सदा लाना।
है काफ़ी गर करें प्रभु, करम बरसात थोड़ीसी॥७॥
बहारे बाग़ दुनियां दीदनी, ऐ दोस्तो देखो।
अछूता की रमज़ समझो, ऐ मेरे भ्रात थोड़ीसी॥८॥

नज़म ॥१३४॥

राधा के वैद्य नूरे चन्द, मिटा दे पीर थोड़ी सी।
तसव्वुर में मेरे आकर, दिखादे तसवीर थोड़ी सी॥१॥

मेरे इस ग़रीबख़ाने को, कभी तो याद में लाना।
क़दमे मुबारिक से मेरी, जगादो तक़दीर थोड़ीसी ॥२॥
किया उपदेश अर्जुन को, बनाया छिन में ब्रह्म ज्ञानी।
श्रीमुख ब्रह्म विद्या की, सुनादे तक़रीर थोड़ी सी ॥३॥
अमर पदवी दी धुरू को, दिखाया अटल हर युग में।
दया कर ऐसी हम को भी, लादे अकसीर थोड़ी सी॥४॥
जगादे मूरछा मेरी, पड़ा हूँ अज्ञान जड़ होकर।
ऐ स्वामी घोट सरजीवन, चुवादे नीर थोड़ी सी ॥५॥
उभारे पतित पावन हो, बतावें वेद सब तुम को।
सचाई वेद वाक्यों की, मिलादे नज़ीर थोड़ी सी ॥६॥
भटकता हूँ सदा दर दर, तलाशे यार में आकर।
दिले दरपन में प्रगट हो, बंधादे धीर थोड़ी सी ॥७॥
सदा भगतन के कारण तुम, लिये, अवतार सुरगुन हो।
अछूता ब्रह्म मिलने की, बतादे तदबीर थोड़ी सी॥८॥

गाना ॥१३५॥

प्रभू आन बचैयो,
हिरना को खेती खाये जात।
एक बात ऐसे अचरज की, मेंढक हाथी लड़ात।
मार लात गिराया हाथी को, चैंटी खैंचे जात ॥
॥ प्रभू० १ ॥

एक बात ऐसे अचरच की, बाज़ को चिड़ियाँ डरात।
मूसे मार बिलैया डारी, पड़ी पड़ी तड़पात ॥
॥ प्रभू० २ ॥
एक बात ऐसे अचरच की, बंध्या सुत को दौड़ात।
ससे सींग का धनुष बना कर, गगन पुष्प किया घात॥
॥ प्रभू० ३ ॥
एक बात ऐसे अचरच की, मरीचका जल बरसात।
भरी गगरिया होकर अछूता, तोभी अलख रिसात ॥
॥ प्रभू० ॥

गाना मल्हार ॥१३६॥

मुरलिया बाजी गिर की ओट।
विष भरी तान बंसी की सुनकर,
गिरत पड़त लोट पोट ॥ मुरलिया १ ॥
लोक लाज गृह काज विसर गये,
प्रीत निगोरी का खोट ॥ मुरलिया २ ॥
कल न पड़े दैया मैं करूं क्या,
कैसी लग गई चोट ॥ मुरलिया ३ ॥
बनो अछूता गिरधर नख ऊपर,
कीनी अबला घोट मोट ॥
मुरलिया बाजी गिर की ओट ॥४॥

गाना ॥१३७॥

न भये किसी के कारे,
कागारे जारे जारे।
क्या कहूँ कागा कहत बने नहीं, प्रेम प्रीत है कठिन।
विरह फांस लागी पसरी में, पीर न कोई उतारे॥
॥ कागारे० १ ॥
वा छैला छल छन्द नन्द का, नहीं माने कोई जतन।
हम अबला बलहीन कहावें, देव ब्रह्मादिक हारे॥
॥ कागारे० २ ॥
जाइयो कागा कहियो वासे, तन में लागी अग्नि।
भस्म भई हूँ विरह की झरसे, भला भला बाहवारे॥
कागारे० ॥३॥
जग जाने जो हमसे कीनी, किस मुख करें कथन।
हम से अछूते यार कुबजा के, दिन में दीखत तारे॥
कागारे० ॥४॥

गाना ॥१३८॥

हम से तोड़ो नाहीं प्रीत, हे रे हांरे कान्हा॥
हमसे तोड़ो नाहीं प्रीति॥
फिरते हो न्यारे मतवारे अलबेले कान्हा,
भये किसी के नाहीं मीत॥

औरन संग पिया हँसत खेलत हो,
हम से करत गुमान ।
हँसकर हमको तरसाना, ये भलों की नाहीं रीत ॥
विदेशी कान्हा,
हम से तोड़ो नाहीं प्रीत ॥

गाना, कानड़ा ॥१३६॥

मेरा तुम से प्यार,
क्या तुमने नाहीं जाना रे ।
कहता हूं मैं दास होकर सहता दुःख उदास होकर ।
पड़ा तेरे दर पै प्यारे, क्या रहता हूँ निमानारे ॥
मेरा० ॥१॥
इक नगरीका वास होकर, सदा सदाका पास होकर।
जान बूझ न बोलो प्यारे, क्या बीच में बहानारे ॥
मेरा० ॥२॥
तुम अमृत मैं प्यास होकर, गुन गुनी इक रास होकर।
दिलमें हो दिलदार प्यारे, क्या अछूता पर्दा ताना रे ॥
मेरा० ॥३॥

गाना, कानरा ॥१४०॥

मैं तो तेरा यार,
कभी तुमने न पहचाना रे ॥
भाई बंधु कुटुम्ब सबछोड़े, केवल नैना तुमसे जोड़े।
लागी लगन दर्श दिखारे, कभी हँस के हँसाना रे ॥
॥ मैं तो० ॥ १ ॥

तड़पत प्रान मेरे बिन तेरे, उठत गिरत लखों परडेरे।
तोबा तोबा दुहाई रामरे, कभी ऐसा न दुखाना रे ॥
॥ मैं तो० २ ॥
डोलत दिन में द्वारे द्वारे, गिनता बैठ रैन भर तारे।
सुनो टेर प्रण पालन हारे, कभी अछूता न तरसाना रे॥
॥ मैं तो० ३ ॥

गाना ॥१४१॥

यार कभी ये ज़माना न होगा,
हिल मिल हँसना हँसाना न होगा।
अजल दौर जब सन्मुख आया,
पीछे को हटना हटाना न होगा ॥यार०१॥
दारफ़ानी पै क्या नाज़ करना,
जिस पे चढ़ना चढ़ाना न होगा ॥यार० २॥
गनीमत है ज़िन्दगी चंद रोज़ा,
इक पल बढ़ना बढ़ाना न होगा ॥यार०३॥
छोड़ो हविस तुम बनो अछूता,
जिस में घटना घटाना न होगा ॥यार०४॥

गाना ॥१४२॥

कोई माने न माने हमारी बात,
मैं कहता मैं कहता यार ॥

जैसे घन की हीरा चोट कर, नहीं होता बेज़ार।
ऐसेही दुःख को संतोषकर, मैं सहता हूँ मैंसहता यार॥
॥ कोई० १ ॥
जैसे बहे तूंबी गंगधार सर, नहीं डूबे ज़िनहार।
ऐसेही भवसागरके ऊपर, मैं बहता हूँ मैं बहता यार॥
॥ कोई० २ ॥
जैसे जलमें रहत नीलोफर, तायर तसवीर दीवार।
ऐसे ही अछूतानंद होकर, मैं रहता हूँ मैं रहता यार॥
॥ कोई० ३ ॥

गाना ॥१४३॥

कोई जाने न जाने, हमें है क्या॥
सोयम् आतम सर्व प्रकाशत,
तिस पर और बखाने है क्या ॥कोई० १
चिमगादड़ को खुद ही अंधकार,
सूरज पर दोष ताने है क्या ॥ कोई० २
सत् असत् से ब्रह्म अछूता,
जगत् निर्वचनी को माने है क्या॥कोई०३

नज़म ॥१४३॥

ये कैसे जाल पसरे हैं, फँसे हैं लोग क्यों आकर।
वो फ़लक आँखें बदलता है, बसे हैं लोग क्यों आकर॥१
है गुल कैसा गुलिस्तांका, वफ़ा बुलबुल क्यों चहचहावे।
वो ख़िज़ां कहता चमन कैसा धँसे हैं लोग क्यों आकर॥२

है तमाशा कि हैगा क्या, बतावे कौन कैसा है ।
वो देखे क्या दिखावे कौन, हँसे हैं लोग क्यों आकर॥३
जो होना हो रहा क्योंकर, करे इसका तदारुक कौन।
वो अछूता ब्रह्म पर कमरें, कसे हैं लोग क्यों आकर ॥४

गाना, मांड ॥१४५॥

नित नित लेवां थ्हारो नाम थ्हारो नाम,
थ्हारो नाम छै जी, प्रेम छको म्हाने प्रभू मिलोरे।
अमृतपान किये नैना नित मद भरे,
भर भर देवे म्हारो शाम म्हारा शाम म्हारो शाम छै जी॥
॥ प्रेम छको० १ ॥
जित देखूँ उत नाचे कानूड़ा छै जी,
बल बल जाना म्हारो काम म्हारो काम म्हारो कामछै जी
॥ प्रेम छको० २ ॥
ब्रज मण्डल में जमना किनारे छै जी,
धन्य धन्य गोकलया रूड़ोगाम रूड़ोगाम रूड़ोगामछै जी
॥ प्रेम छको० ३ ॥
छैला अछूता वाला छूवा न जावे छै जी,
रम रम रमेती याको धाम याको धाम याको धाम छै जी
॥ प्रेम छको० ४ ॥

नज़म ॥१४६॥

नज़र दौलत हैगी जिन के,
फिर उनका कहना है क्या ।

जो चाहें कर दिखावें,
जर फ़िशानी हो तो ऐसी हो ॥१॥
अब है सानी कौन उसका,
मालिक की जिस पर महर नज़र।
किया वो अदना से आला,
महरबानी हो तो ऐसी हो ॥२॥
थर थराता है ये सब आलम,
पलकों के इशारे से।
बग़ैर इरशाद न हिले पत्ता,
हुक्मरानी हो तो ऐसी हो ॥३॥
सैर करते जिन के अदल से,
गुर्ग बकरी बे ख़ौफ़ यक जा।
अमन व अमां का बजे डंका,
सुलतानी हो तो ऐसी हो ॥४॥
इल्मो अमल व सुहबत आलिमा,
तहम्मुल ग़ौर व ख़ुश तबीअत।
हिम्मत मरदानगी है जिस में,
खान्दानी हो तो ऐसी हो ॥५॥
गुज़रते हैंगे आठों अय्याम,
ऐशो इशरत में सदा।
न आवे खम अबरू में कभी,
शादमानी हो तो ऐसी हो ॥६॥

शहज़ोर बाज़ू ज़ाहिरा रुस्तम,
है चहरे पर तजल्ली शबाब।
सज धज निराली अजब जोबन,
जवानी हो तो ऐसी हो ॥७॥
हुस्न यकता में हरगिज़,
न आवे मुकाबिल में क़मर।
जिसे से लजावें चौदह तबक़,
नूरानी हो तो ऐसी हो ॥८॥
गिर पड़ा होकर बेहोश,
तड़पे अर्श कुरसी पर।
सूरत न देख सका मूसा,
लासानी हो तो ऐसी हो ॥९॥
जो आवे याद दिल में,
किसी दिलबर प्यारे की।
रहे दर नज़र में हरदम,
निशानी हो तो ऐसी हो ॥१०॥
है लज़्ज़त जिस ज़बां में,
मज़ा है उस की बातों में।
नक़्श दिल पै होवे जिस का,
कहानी हो तो ऐसी हो ॥११॥
न जावे ख़ाली दोनों हाथ,
कार.कुन दर पै आ करके।

निगाह हर एक के हक़ पर,
क़द्रदानी हो तो ऐसी हो ॥१२॥
है फ़रिश्ते की ताक़त क्या,
जो झांके दर की तरफ़।
न चैंटी जा सके अन्दर,
दरबानी हो तो ऐसी हो ॥१३॥
करे हाज़िर जो कुछ हाजिर,
फ़ौरन महमान नवाजी में।
न होने दे जरा तकलीफ़,
महमानी हो तो ऐसी हो ॥१४॥
चार हाथों की खोर ले,
फैलाना पांच हाथों को।
अक़ल पर जिसके पड़ा पर्दा,
नादानी हो तो ऐसी हो ॥१५॥
हक़ीक़ी इश्क़ हैगा तौहीद,
बस गाना है हक़ बर हक़।
न आवे लफ्ज़ दुई ज़िनहार,
हक्क़ानी हो तो ऐसी ॥१६॥
हैंगे फ़ना और बक़ा,
हर दो यहीं के मुवाहिसे।
अछूता हो दो अमल के,
जाविदानी हो तो ऐसी हो ॥१७॥

गाना ॥१४७॥

नहीं लीनी खबरिया, भूले बैठे हैं।
माधो निर्मोही माधोबन को सिधार,
करके हम से टेड़ी नज़रिया ॥भूले० १॥
कुबजा के संग आप मगन भये।
हम को बतावें योग डगरिया ॥भूले०२॥
हूक उठत तन कूक पुकारूं।
फूंक सुनाई विरह बांसरिया ॥भूले०३॥
भूल गये अछूता बन बैठे।
खायो माखन फोड़ी मलरिया ॥भूले०४॥

नज़म ॥१४८॥

है क़ुरबान इश्क उन पर, जो आशिक़ हक़ सादिक़ हैं।
क़दमों की खाक झाड़े, झाड़ू जानां ज़ुल्फ़ पेचांका ॥१॥
हैं भटकते हज़ारों फिरते, मजाज़ी इश्क़ में आकर।
पड़ा है जिनके ऊपर, हाथ जानां ज़ुल्फ़ पेचां का ॥२॥
है हर उक़दा पै मुश्किल, दिखावे पेच दर पेच।
न राहे रास्त पर आवे, दिल जानां ज़ुल्फ़ पेचां का॥३॥
है अछूता ये इश्क़ हक़ीक़ी, बुते शोख़ लामकां का।
न हरगिज़ छूआ जावे, पेच जानां ज़ुल्फ़ पेचां का॥४॥

गाना ॥१४६॥

कलियां संग करते रंग रलियां,
क्यों करे कान्हा जी छल बलियां।
छू छू अबला भये अछूते, प्यारी कुबजा हम से रूठे।
भूल भुलैयां क्यों कर भूले, ब्रज बरसाने की गलियां॥१
कलियां संग करते रंग रलियां॥

गाना ॥१५०॥

न तू न कोई तेरो, किधर आया कहां जाता है।
क्या जाने क्या बना है, ये कैसे आन तना है।
सुना लोग सभी ये कहते, गर्भ कुंड से आता है॥
॥ न तू० १ ॥
क्या राजा क्या राना है, क्या भोगी सिध दाना है।
सब देखत देखत रहते, दिग काल इसे खाता है॥
॥ न तू० २ ॥
क्या अछूता क्या सना है, क्या मुक्त क्या हना है।
दुःख सुख को ज़ाहिरा सहते, है कौन किसे गाता है॥
॥ न तू० ३ ॥

काफ़ी ॥१५१॥

नी तैंनूं तरस ना महरी,
भुन देनी फकीरांनूं दाणें।
पिछूं आया नूं भुन भुन देनी एं।
खड़े नी फकीर निमाणें॥ नी तैंनूं०१॥

लोगां दे दाणें कणक ते छोले ।
फ़करां दे जौं नी पराणें ॥नी तैंनूं० २॥
खड़े नीं खड़े नूं होयां अकालें ।
तूं नी बैठी मौज माणें ॥ नी तैंनूं ३ ॥
निगह महिरां दी असां बल नाईं ।
अछूता रब ना पैछाणें ॥
नी तैंनूं तरस न आवे, भुन०॥४॥

गाना ॥१५२॥

तूं साडा दिल मोड़ दे, वे,
मोड़दे मोड़दे मोड़दे वे ।
किया क़त्ल सानूं ऐ सतमगर,
दो नैनां दे बाण मार कर ।
ख़ौफ़ न खाना, रब नाईं जाना,
खूनी अखीयां होड़दे होड़दे होड़दे, वे ॥तूं०१॥
इश्क़ चवाती छाती नूं जलाती,
जफ़ा जिगर नूं भुन भुन खाती।
दिल सोज़ां सताना, मुख नू छिपाना,
ऐंडी चोरीयां छोड़दे छोड़दे छोड़दे, वे ॥तूं २॥
विरह कटारी साइयां डाडी मारी,
सीने दे बिच धस गई सारी ।

अछूता तरसाना, तरस ना आना,
प्रीता कचीयां तोड़दे तोड़दे तोड़दे, वे ॥
तू मैडा दिल मोड़ दे, वे ॥३॥

झजोटी ॥१५३॥

हुणबस कर जी, कुज यस कर जी ।
दीदार दिखा दीजो हँस कर जी ॥

तुसी दिल मेरे बिच बसदे ओ,
सानूं होर का होर क्यों दसदे ओ ।
इस इश्क़ के कूचे में धस कर,
हुण कहां जावोगे नस कर जी ॥हुण० १॥

हो जाहिर अखीयां बिच छिपदे ओ,
सानूं सौ कोसों से दिसदे ओ ।
ये लुत्फ़ देखा इश्क़ बाज़ी में,
तेरे प्यारे प्यार में फस करजी ॥हुण० २

कर घायल फिर क्यों खिचदे ओ,
साडे दिल नूं मुड़ मुड़ घिसदे ओ ।
होकर अछूता ये करना ज़ुल्म,
मारी विरह कटारी कस कर जी ॥
हुण बस कर जी कुज यस कर जी॥३॥

झजोटी ॥१५४॥

इस इश्क़ नचाया नाच,
कर कर प्यार थैया थैया ॥
इश्क़ डेरा साडे घर आ लाया।
प्रेम प्याला भर भर के पिलाया॥
फिर क्यों दर्द कलेजा सिलाया।
रोवाँ कर पुकार मैया मैया ॥ इस इश्क़०१॥
मनादी आशिकाना ढोल बजांदीहै।
ये मनज़ल दूर गति मांदी है॥
बहर इश्क़ कर पकड़ डुबांदी है।
मेरी वार वार नैया नैया ॥ इस इश्क़०२॥
रहना हो अछूता इश्क़ बाजी से।
क्या हकीकी और क्या मज़ाजी से॥
तुम होवो आज़ाद लगन साज़ीसे।
मेरी मानो ज़रूर भैया भैया ॥
इस इश्क़ नचाया नाच।
कर कर प्यार थैया थैया ॥

गाना ॥१५५॥

हो गये हज़ारों मजनूँ,
मजनूँ बना बड़ी दूर का ॥
बादशाह ने हुक्म फ़रमाया,
लैला का आशिक मजनूँ आया।

फौरन देदो जो कुछ मांगे,
जिस दुकान से मजनूँ ॥
होगये हज़ारों मजनूं ॥१॥
भूखों के मज़ा हाथ आया,
मुफ्त माल ले ले कर खाया।
टोल के टोल फिरें शहर में,
छोड़ शरम और लजनूं ॥
हो गये हज़ारों मजनूँ ॥२॥
लैलाको खंभे पर बिठलाया,
गिर्द में गर्म लोहा बिछवाया।
है आशिक खम्भे पर चढ़े,
नहीं जावे हाजी हजनूँ ॥
हो गये हज़ारों मजनूं ॥३॥
कहीं इश्क़ की दार बतावें,
इक दूजे से मुँह छिपावें ॥
लाल लोहे की लाली को,
लगे देख देख कर भजनूँ ॥
हो गये हज़ारों मजनूँ ॥४॥
आशिक़ मजनूं जबके आया,
देख लैला को शोर मचाया।

दौड़ चढ़ा फौरन खम्भे पर,
मिल बैठे सजनी सजनूँ ॥
हो गये हज़ारों मजनूँ ॥५॥
जनाब इश्क़ यारो अजब है,
अग्नि पानी होजाय ग़ज़ब है।
लगे आंच कब सांच को,
है कौल अछूता मजनूँ ॥
हो गये हज़ारों मजनूँ,
मजनूँ बना बड़ी दूर का ॥६॥

प्यारे ये बात तहक़ीक़ात करनी ज़रूरी है कि हिन्दुस्तानियों के मग़ज़ में ही मज़हब का भूत क्यों ज़यादा सरायत कर चुका है और दीगर दुनियां में क्यों इस क़दर मज़हबी ख़ब्त नहीं है।

प्यारे इस पर एक बात याद आई "रात के वक्त, एक घोड़े ने घास खाते खाते "फुर" करी, मुत्तसिल एक कुत्ता पड़ा सो रहा था यों ही आवाज़ जो कान में पड़ो तो चौंक कर भौं, भौं, कर पुकारने लगा, हमजिन्स की आवाज़ सुनकर एक और दूसरा कुत्ता भी बड़े जोर से भौं, भौं, कर शोर मचाने लगा, यहां तक कि

जब आवाज़ बुलन्द हुई तो तमाम शहर के कुत्ते आपे से बाहर होकर वैसा ही शोर मचाने लग गये, जब ऐसा शोर हुआ तो तमाम शहर दलदला उठा, एक आदमी बोला अजी क्या है दूसरा एक आदमी घबरा कर चौंक उठा और बोला शायद कोई चोर होगा, उधर से एक और आदमी ज़ोर से पुकारा चोर, चोर, दौड़ो, दौड़ो, आओ, आओ, ये है, वो है कहां है, किधर है, अजी पकड़ियो जाने न पावे, अभी तो था देखो देखो कहीं निकल न जावे, आफ़रीं चोर तो किसी आदमी ने आंख से न देखा, और न किसी ने कुछ निशान पाया, न मालूम क्या था, वो जो कुछ था, या नहीं था, न किसी को मिला, न किसी ने देखा, न किसी के हाथ आया, आफ़रीं बसद आफ़रीं ये कि संसार फुरकी में आकर फुर, की तलाश में दस्त, व, पा, मारने लगा, अजब, न देखा न भाला, क्या करे उजाला, ~~मगर~~ मगर तिस पर भी वो चोर हर एक सिफ़त का मख़-ज़न बन गया, संसारी जीव शरन और रहबर कामिल उसे कहता है, इसीलिए ज़ोर का तालिब उसको अनन्त सुख का भंडार मुम्बे सरूर बतलाता है, और ज्ञान का तलबगार सर्वज्ञ व

इल्म कुल वग़ैरा नाम धरता है, वैराग्य पसंद व त्याग न्याय का चाहने वाला न्यायशारी, गुनाह की माफ़ी मांगने वाला रहीम, करीम, दयालू और नजात का मुतलाशी परमहित उपदेशक, सर्वज्ञ और निरदोष कहकर उस से मदद मांगता है, ग़रज़ेकि जिस को जिस चीज़ की ज़रूरत हुई वह उसको वैसे ही नाम से पुकारता है, हत्ताकि दुश्मनों पर फ़तह चाहने वालों ने उसे जन्म व मरण से रहित और राग, व द्वेष से मुबर्रा ऐसी सिफ़तों में लाकर असुर संहार के लिये अवतार लेने वाला तक भी बतलाया है, इस अम्र की बहस दर असल हो भी सकती है या नहीं कि बेनिशां का और राग, द्वेष से मुबर्रा का ख़्याल क्या ख़्याल में लाया जासकता है।

शैर

अगर मुंह में ज़बाँ होती, तो ख़ुद तशवीह भी करती।
भला तशवीह क्या उसकी, जो ख़ुद मफ़रूज़ फ़र्ज़ीहै॥

दृष्टान्त

एक राजा ने ये हुक्म दिया कि जो कोई ऐसी नई बात आकर सुनावे जो हमने क़बल कभी न सुनी होतो उसको एक लाख रुपया इनाम दिया जायेगा,

बहुत लोग मुद्दत से आकर बातें सुनाते थे मगर किसी की बात पूरी मंजिल पर न पहुँची क्या नई न इकरार में आई, उसी शहर में एक साहू-कार जमाने की गरदिश में आकर मुफलिस हो गया था, यहां तक कि रोटी कपड़े से भी मुहताज हो गया, औरत रोज़मर्रा शिकायत करती थी कि अजी हमारा गुजारा किस सूरत से होगा, सेठ जी खामोशी से कभी कहते थे, क्या जाने जैसा होगा देखा जायगा, एक रोज़ सेठानी ग़रीबी की मजबूरी से खुद पानी भरने को गई, रास्ते में ये बात उसके कान में पड़ी कि राजा साहब का आम पर यह हुक्म जारी है कि जिस किसी की खुशी हो आकर कोई नई बात हुजूर में सुनावे, नई होने पर इनाम पावे, वह सेठानी जलदी से वापस घर में आकर सेठ जी से कहा कि राजा जी का ये हुक्म जारी हो रहा है, सेठ जी सुनकर खुशी से बोले कि लो अब मौक़ा आमिला, जल्दी से रोटी बनाओ, सेठानी जी विचारी तंग आरही थीं झट पट रूखी सूखी रोटी बना कर सेठ जी के आगे ला रक्खी, सेठ जी फ़ौरन रोटी खा कर एक पुरानी बही बग़ल में दबा कर घर से चल दिये, हजूरी दरबार में हाज़िर होकर

राजा साहब से अर्ज गुज़ारिश की, कि हुजूर वाला से ये खाकसार गुलाम क़दीमी अर्ज पेश करना चाहता है, राजा साहब का इरशाद हुआ कि कहो क्या अर्ज है, सेठ जी ने फ़ौरन बही खोलकर एक,दो, पन्ने इधर उधर करके आदाब से अर्ज किया कि हुजूर के बुज़ुर्गों ने डेढ़ लाख रुपया बशर्त क़र्ज के दुकान पर से मंगवाया था, वो रुपया अब तक सर्कार से वापस खाकसार गुलाम को अता नहीं हुआ जी, अगर हुजूर पुरनूर पर रोशन हो तो रक़म दिलाने का हुक्म फ़रमाया जावेजी, और अगर हुजूर पर ये बात ज़ाहिर न हो तो एक लाख रुपया इनाम का ये खाकसार हक़दार ठैरा जी, बात के सुनते ही राजा साहब की अक़्ल चक्कर में आकर हैरान की हैरान रह गई, दिल ही दिल में, खयाल के पापड़ बेलने लगे, कि अगर इस को सुना हुआ कहूँ तो डेढ़ लाख रुपया देना मंजूर करना पड़ेगा, लाचार न सुनी बात राजा साहब को मन्जूर करनी पड़ी, इनाम का हुक्म फ़रमाकर बोले कि सेठ जी आफ़रीन तुमको वसद आफ़रीं तुम्हारी अक़्ल को! हमारा खयाल ग़लत फ़हमी पर था कि हमारे शहर में अक़्लमन्द आदमी कम होंगे, मगर अब यक़ीन में

आया कि आप से हज़रत दाना आदमी उम्मेद करता हूँ कि शायद अभी तो और भी बहुत होंगे, उसी वक़्त एक लाख रुपया सेठ जी को इनाम दिला दिया गया।

दोहा

सांची कहूँ तो है नहीं, झूंठी कही न जाय।
नेती नेती गायकर, गिरह गाँठ से जाय॥

बहुत मूर्ख नेती नेती कहते फिरते हैं कि शास्त्र कुछ नहीं बतलाता, जब शास्त्र ही नेती गायन करता है तो फिर कर्म और उपासना और शास्त्र में सर को खपाना बे अर्थ ही है। मनमाने गीत गाना और मनमानी मौज बहार उड़ाना चाहिये जी। देखो अरे नादान फूल के तोड़ने में जब काँटा लग जाता है तो बहुत पछताना होता है और कहना होता है कि ज़रा देख कर फूल न तोड़ा, प्यारे दूसरे के कहने पर इतना खाली हो बैठना इसमें सार हासिल कुछ नहीं होगा, ख़ुद ज़रा शास्त्र को देख कर और अपने अनुभव को लक्ष्य में ख़ूब जमा कर खाली होना तो ज़रूरी शास्त्रकार ने वाजिब कहा है मगर वाचक ज्ञानी होना मूरखों का काम है उनका यह ख़याल

नादानी पर है। विद्वान लोग शास्त्र को खूब देख कर और शास्त्र के ही ज़ोर से ज़ाहिर बातिन को खोल डालते हैं कि देखो सफ़ाई हमारे घर की ये है, उस विद्वान की बात हर एक के दिल में जगह पकड़ बैठती है, हर एक को क़बूल करनी पड़ती है, मूर्ख की बात किसी के दिल में जगह नहीं पा सकती, देखो जरा, प्यारे रोटी खा कर क्रिया की निवृती तो ज़रूरी है, मगर बिना खाये रोटी क्रिया से निवृत होना बहुत मुश्किल नजर आता है, क्योंकि प्राणों की स्थिरता बग़ैर रोटी के होनी हो नहीं सकती।

एक आदमी बाज़ार को देख आकर वो कहता है कि क्या है बाज़ार में तो कुछ नहीं है, वो ज़रूर ज्ञानी है क्योंकि ज्ञान नाम जानने का है असलियत को जानना ही ज्ञान का सार मूल है, सिर्फ़ अगर कोई दूसरा शख्स इस बात को सुन कर ही कहने लग पड़े कि बाज़ार में तो कुछ नहीं है, उस वाचक ज्ञानी को सार मूल हासिल नहीं होगा, क्योंकि अगर कोई तर्कवादी या कोई ज्ञानवान उसके जवाब में कह देवे कि बाज़ार में सब कुछ है तुमने बाज़ार देखा ही नहीं, तो उस

मूर्ख की अक़्ल चक्कर खा जाती है और चक्कर में आकर हज़ारों तरह के संकल्प विकल्प में चक्कर पर चक्कर खाने लग जाती है, सारांश यह है कि वाचक ज्ञानी के दिल की लहर ज़ब्त नहीं होती।

प्यारे भाई रज्जू में सर्प का भ्रम दीपक दिखाने से दूर होता है, ऐसे ही अज्ञान रूपी अविद्या, ज्ञान विद्या रूपी दीपक से दूर होना विद्वानों का क़ौल है, मगर जो जन्म अंधा है, उस पर एक दृष्टान्त तहरीर में लाना ज़रूरी हुआ जी, क्योंकि जन्म अंधा कौन, वो मूर्ख जिस को जन्म से लेकर आज तक अक्षर बोध न हुआ, ज़रा खयाल इधर को लाओ। दो शख़्स हमरक़ाब दर सफ़र थे, एक तो जन्म अन्धा और दूसरा आंखों वाला। रास्ते में रात को एक सराय में दोनों का क़याम हुआ, जब सुबह होने आई तो वे दोनों घोड़ों पर सवार होकर रवाना होने लगे, वो अन्धा आदमी इधर उधर हाथ फैंकने लगा और कहने लगा कि यार हमारा चाबुक नहीं मिलता क्या जाने कोई चुरा ले गया है, आँखों वाला बोला कि चुरा कौन ले गया होगा, यहीं कहीं पड़ा होगा, अन्धे ने जब फिर हाथ चलाया तो एक साँप सर्दी के मारे चाबुक की

नक़ल पड़ा था, अन्धे के हाथ में जो आया तो बहुत खुश हुआ और बोला कि हमारा चाबुक तो ज़रूर कोई चुरा ही ले गया है, मगर हम को उस मालिक ने रेशम का चाबुक दिला दिया, ग़रज़ कि खुशी खुशी दोनों सवार होकर चल दिये। जब खूब सुबह हुई और नूर का जलवा गर्द गरदूं के दरमियान रोशन हुआ तो आंख वाला क्या देखता है कि अन्धे के हाथ में एक बड़ा ज़हरीला साँप है, फ़ौरन बोला कि अन्धे तेरे हाथ में साँप है जल्दी से इसको फैंक दो। अन्धा मुसकरा कर बोला कि रेशम का चाबुक मुझ को मुफ़्त मिल गया, अब तुम देख कर चाहते हो कि ये पटक देवे, तो मैं उठालूं, मगर मैं खूब जानता हूं, ये चालाकी किसी और के साथ करना क्योंकि मैं अन्धा तो हूँ मगर तुम से ज़्यादा चालाक हूँ अगर आँख होतीं तो तेरे से आदमियों को दो कौड़ी में बेच कर खा जाता। प्यारे भाई, मूर्ख आदमी भी ऐसे ही कहता है कि क्या करूं मैं पढ़ा नहीं अगर पढ़ा होता तो आकाश धरती दोनों को उड़ा देता, गरज़कि उस भले आदमी ने बहुत कुछ कहा मगर वो अन्धा कब राहरास्त पर आने वाला था, थोड़ी देर के बाद जब सूरज की गर्मी

साँप को लगी और बदन गर्म हुआ तो आँख खुलने पर क्या देखता है कि मैं एक इन्सान के हाथ में हूँ, फ़ौरन एक मुँह मारा, साँप का मुँह मारना ही था कि अन्धा घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा, साँप ने अपनी राह ली, तब आँख वाला बहुत अफ़सोस करने लगा कि अन्धा खुद जान बूझ कर मरा, अगर अन्धा न होता तो क्यों जान देता, बस मूर्ख अन्धा और आँख वाला विद्वान ज्ञानी होता है, क्योंकि आँख हर एक चीज़ देख सकती है और अन्धा कुछ नहीं देख सकता, मुफ़्त जान को अज़ाब में डालता है, इन्सान को ज़रूर लाज़िम है कि इल्म को पढ़ना, बग़ैर विद्या के अक़्ल और ज्ञान होना बहुत मुश्किल है, अगर ऐसा न होता तो वो बुज़ुर्ग लोग उस चीज़ को हरगिज़ ज़ाहिर में न लाते, उनका ज़ाहिर लाना हर एक इन्सान को आनन्द दिलाना था।

दृष्टान्त अक़्ल पर

एक राजा महाराज ने एक काग़ज़ का क़िला बनवाया और उसकी रंग साज़ी कराके ऐसा करा दिया कि कोई पहचान न सके कि ये काग़ज़ का क़िला है, जो देखे उसको यही मालूम होवे कि

बड़ा पुख़्ता, ईंट, चूने और पत्थर का क़िला बना हुआ है, दर असल में क़िला पत्थर चूने का ही होता भी है। कोई समझ न सका कि ये काग़ज़ का क़िला है, काग़ज का क़िला बनाने में राजा का क्या भेद था जो उसने काग़ज़ का बनवाकर रंग साज़ी से काग़ज़ पोशीदा करके ज़ाहिर पत्थर का कर दिखाया, और एक तोप उसके मुक़ाबिले में लगा कर ये शर्त अपनी ज़ाहिर की, कि जो राजा या राजकुँवर एक गोला से इस क़िला को उड़ा देवे तो उसके साथ मैं अपनी लड़की की शादी कर दूंगा, और अगर एक गोले से क़िला न उड़ा तो उसको जान से मरवा दिया जावेगा। देश विदेश के राजाओं को बुला कर एक बड़ा जलसा शुरू कर दिया, सब राजा महाराजाओं को यह क़िला दिखा कर अपनी शर्त सुना के लड़की को मैदान में लाकर खड़ा कर दिया, हरेक राजा हैरान था क्योंकि क़िले को देख कर अक़्ल काम नहीं कर सकती थी, कि यह क़िला एक गोले से उड़ जा सके, और इधर राजपुत्री की तरफ़ देखने से प्राणों के घायल होने की नौबत बजने लगी। अक़्ल से खाली कभी क़िला को और कभी राजपुत्री को देख देख कर दिल में, अफ़सोस के

पत्थर से दिल को तोड़ रहे थे, बहुत देर हो गई मगर कोई जवाँ मर्द मैदान में न आया, एक राजकुँवर अपने पिता के हमराह तमाशा देखने को आया हुआ था, उसने अपने दिल में ख़याल बाँधा कि यह क्या अजब बात है जो इस राजा ने ऐसी ज़बर शर्त उठाई है। क्या इसको अपनी लड़की की शादी करनी मंजूर नहीं थी, जो ऐसी शर्त पर खड़ा हो रहा है, ऐसे ऐसे ख़याल वह राजकुँवर दिल में दौड़ाने लगा, कुछ देर के बाद उसके दिल में आया कि इस में ज़रूर कुछ बातिन भेद है, यहां पर अक़्ल की ज़रूरत है ताक़त की बात पर यह शर्त नहीं है, इस ख़याल को दिल में मज़बूत करके मैदान में उतर पड़ा, बाप ने देख कर कहा कि क्यों प्राण देना चाहता है, जो काम जवानों से न हो सके वह नादान लड़के कब कर सकते हैं जल्दी से इधर वापिस आ जाओ, राजपुत्र अदब से सिर झुका कर कहने लगा, कि पिता जी मरना तो एक रोज़ ज़रूरी है फिर मरने से डरना क्या? जो हो सो हो मैं अब वापिस तो आ नहीं सकता हूँ क्योंकि मर्दे मैदां का क़दम पीछे कब हट सकता है, यह कह कर फ़ौरन तोप के पास जाकर पलीता आग का

तोप पर धर ही दिया, पलीते का धरना ही था कि गोला राल का फ़ौरन तोप से निकल कर क़िले पर जा पड़ा, क़िला तो पहिले ही बारूद बना था एकदम होली जल गई, फिर तो चारों तर्फ़ से वाहवा होने लगी, तब राजपुत्री ने वर-माला फ़ौरन आकर राजपुत्र के गले में डाल दी, देखो भाइयो अगर अक़्ल न होती तो एक तो राजपुत्री की शादी होनी बहुत मुश्किल थी और दूसरे राजा लोगों की इज़्ज़त बचनी भी मुश्किल हो जाती, मगर अक़्ल एक अजीब चीज़ है जो ऐसी ऐसी मुश्किलात को हल करती है, इन्सान बग़ैर अक़्ल के हैवान से भी बदतर है, अक़्ल है तो इन्सान अक़्ल का पुतला है, अक़्ल न हो तो इन्सान ज़हर का कुचला है, क्योंकि उमर भर आप भी दुःख पावे और औरों को भी दुःख दिखावे, ज़रूर इल्म हासिल करना और अक़्लमन्द आदमी होना, इन्सान को इंसानियत में आना यही फ़र्ज़ है जी।

दृष्टान्त विद्या पर

एक साहूकार विचारवान और सत्संगी पुरुष था। एक लड़की उसके घर पैदा हुई, साहूकार ने

लड़की को बड़े प्यार से पाला और विद्या उस को पढ़ाई क्योंकि उसके यहां और कोई लड़का वाला न था, सिर्फ उस लड़की को ही लड़का मान रक्खा था। उसके लालन पालन के आनन्द में आनन्द होता रहता था। एक रोज़ का ज़िक्र है कि वो साहूकार पुरुष स्त्री दोनों तीर्थों की यात्रा करने को चले गये, और पीछे घर में उस लड़की को छोड़ गये, एक दिन रात को घर में चोर घुस आये, जब चोर असबाब बाँधने लगे तो लड़की की आँख खुल गई, देखा कि चोर माल असबाब बांध रहे हैं, लड़की देखकर दिल में सोच करने लगी कि अगर मैं शोर मचाऊँ तो चोर मुझे फ़ौरन मार डालेंगे और माल भी ले जायेंगे, कोई हीला करना चाहिये, क्योंकि विद्वान् हरेक काम सोच समझ के करता है, यह विचार करके यूं बड़ बड़ाना शुरू किया कि जब मेरे माता पिता तीर्थों से वापस आवेंगे तो आकर पहले मेरी शादी करेंगे, फिर मैं अपने सुसराल में चली जाऊँगी और थोड़े ही अरसे में मेरे घर लड़का पैदा होगा. मैं उसका नाम रखूंगी मुकन्दा, जब वो लड़का बाहर खेलने जावेगा तो मैं उसे आवाज देकर बुलाऊँगी, अरे वे मुकन्दा वे

मुकन्दा, मुकन्दा उनके नौकर का नाम था, जो नीचे सोया हुआ था, वो आवाज़ सुनकर जाग उठा और ऊपर आकर चोरों को पकड़ लिया, जब चोर अदालत में पेश हुए तो बहुत हैरान थे और अदालत में कहते थे कि ऐसा अन्धेर हमने कहीं पर नहीं देखा कि हमारे सामने ही शादी हुई और हमारे सामने ही लड़का पैदा हुआ और हमको ही आकर पकड़ लिया। प्यारे बिरादर ज़रा ग़ौर की जगह है देखो ये इस विद्या का हीला है कि जान भी सलामत रही और माल भी जाने न पाया और चोर भी गिरफ्तारी में आये, अगर वह लड़की मूर्ख होती और शोर मचाती तो जान से जाती और माल भी जाता रहता, और अगर चुप रहती तो असबाब तो चोर बाँध ही चुके थे कब छोड़ते, इसलिए ज़रूर विद्या हासिल करना जी क्योंकि इल्म हर एक आफ़त से बरी और हिफ़ाज़त करता है। प्यारे विद्या करके एक तो दुनियाँदारी के कारबार बखूबी से चलते हैं और परमात्मा जी का ज्ञान होता है (विद्या बिना न ज्ञान:, ऋते ज्ञाना न मुक्ति) ज़रा ग़ौर करना, कि ऐसा कहना कि बहुत विद्वान् मारे मारे फिरते हैं और बहुत बुरे बुरे

काम करते हैं भला तुमने सच कहा, मैं भी कहता हूँ कि पंडित लोग शास्त्र द्वारा ये सब बातें जानते हैं मगर लालच की गर्द उन पर ऐसी पड़ी हुई है कि जन्म अन्धे से भी बढ़कर हैं क्योंकि देखने में ऐसा ही आ रहा है कि बहुत लोग विद्वान् कहलाते हैं मगर जब ग़ौर किया गया तो वह सिर्फ अक्षर के ज्ञाता हैं सार मूल विद्या का नहीं जानते । प्यारे देखो ज़रूरी यह बात है कि विद्या के सार मूल में ही आनन्द प्राप्त होता है अक्षर मात्र के ज्ञान से विद्या का सार-मूल हासिल नहीं हो सकता । क्योंकि अगर अक्षर ही विद्या का सार मूल होता तो क़ाग़ज़ पर अग्नि लिखने से काग़ज़ को जल जाना चाहिये था; मगर ऐसा देखने में अभी तक किसी को नहीं आया कि अग्नि लिखने से काग़ज़ जल गया हो, इस दृष्टान्त से मालूम करो कि विद्या के सार में ही आनन्द है, पर आज कल के ज़माने में बहुत पण्डित विद्या हासिल करके पण्डित विद्वान् बन बैठते हैं सिर्फ शास्त्रार्थ करने को कमर बांधे रहते हैं कि ये शब्द शुद्ध है ये शब्द अशुद्ध है। शुद्धी अशुद्धी के झगड़ों में पड़े भटकते रहते हैं। मैं कहता तो नहीं क्योंकि

वो विद्वान् हैं मगर दर असल वो ही बढ़कर मूर्ख से भी मूर्ख हैं अगर मूर्ख न होते तो ये ब्रह्म विद्या हासिलकर के फिर क्यों इधर उधर के प्रपंच में जकड़े रहते, इस से जाना जाता है कि ये लोग विद्या हासिल करके भी दुखिया के दुखिया ही रहे, एक दृष्टान्त इस पर याद आया प्यारे ज़रा ग़ौर से इसको नजर और दिल में लाना जी, 'एक पण्डित एक राजा को श्री गीताजी की कथा सुनाने को आये, वो महाराज विचारवान् और सत्संगी था, श्रद्धापूर्वक कथा सुन कर गीता जी का पूजन करके उस पण्डित जी को खूब ज़र व माल दिया और पण्डित जी से चलते वक्त कहा कि पण्डितजी तुम श्री गीताजी को नहीं जानते, पण्डितजी बात सुनकर दिल में बहुत शरमाये और वहां से चल दिये, और एक बड़े विद्वान् पण्डितजी के पास गीता जी का शुद्ध पाठ करने के लिये जाकर श्री गीताजी का शुद्ध पाठ याद करके अगले साल फिर राजाजी को आकर श्री गीताजी की कथा सुनाने लगे, राजा जी ने श्रद्धा पूर्वक गीताजी को ख़ूब सुनकर और पूजन करके पहले से भी दो चन्द ज़र और माल पंडितजी को

देकर कहा कि पण्डितजी तुम बिलकुल श्री गीताजी को नहीं जानते हो, पण्डितजी बहुत हैरान हो कर विचारने लगे कि अब तो और कोई विद्वान पंडित मेरे से बढ़ कर है नहीं, अगर कोई होता तो उसके पास जाकर और श्री गीताजी को शुद्ध विचारता, अब क्या करना चाहिये क्योंकि राजा जी बार बार ये वचन भाषण करते हैं कि तुम श्री गीताजी को नहीं जानते हो, और पूजन भी श्रद्धा पूर्वक खूब करते हैं ऐसा विचार करके श्री गीताजी को लेकर श्री गंगाजी के तट पर बैठ कर स्वयम् श्री गीता जी को विचारने लगे, तब श्री गीताजी में ये शब्द नज़र आने लगे, कि "पंडिता सम दर्शिनः। सम लोष्टा सम काञ्चनः। यदृ इच्छा लाभ संतुष्टा।" ऐसे ऐसे बहु शब्द श्री गीताजी में देख कर पण्डित जी बुत के बुत होकर रह गये, और दिल में विचार करके दिल को कहने लगे कि सच्ची बात राजा जी कहते थे, जरूर मैं श्री गीता जी को नहीं जानता था, अब मैंने सार मूल श्री गीताजी का जाना, ये कहकर श्री गीताजी को श्री गंगाजी में फैंक कर किनारे पर पांव फैला कर बैठ गये।

प्यारे ज़रा ग़ौर की बात है, ऐसा ये क्यों, ऐसे शब्द तो पण्डितजी पहले भी श्री गीताजी में देखते थे, मगर लालच करके श्री गीताजी का सार मूल हासिल नहीं हो सका, अब जब स्वयम् विचार की आँख से देखा तो सार मूल पर दिल की आँख पड़ते ही श्री गीताजी भी हाथ से गई और लालच का भी ख़ाका उड़ गया, पण्डितजी मगन होकर आनन्द में मगन हो गये जी, इधर फिर कुछ अरसे के बाद राजाजी ने इस पण्डित जी को याद किया, एक ख़िदमतगार ने अर्ज़ किया कि श्री हज़ूरजी वह पण्डितजी तो मैंने श्री गंगाजी के किनारे पर बैठे हुये देखे थे, तब राजा जी ने कहा कि वो पण्डितजी अब श्री गीताजी को जान गया होगा, जब हम कभी श्री गंगाजी के स्नान करने को जावें तो हमको याद दिलाना, थोड़े ही दिनों के बाद राजाजी श्री गंगाजी के स्नान करने को आये, तब उस ख़िदमतगार ने याद दिला कर अर्ज़ किया कि श्री हज़ूर जी देखें वो पण्डितजी बैठे हैं। राजाजी ने जाकर पंडितजी को दंडवत् करके कहा कि पण्डित जी आपने पांव कब से फैला दिये हैं तब पण्डितजी ने हाथ की मुट्ठी बाँध कर

राजाजी की तरफ़ करके हाथ दिखा दिये, राजाजी विचारवान थे फ़ौरन समझ गये ।

शैर

तर्क मतलब ने किया है बे नियाज़ ।
हाथ खैंचे पाँव फैलाते हैं हम ॥
हाथ उठा गुल से ताके ईज़ा न पहुँचे ख़ारसे ।
मार ठोकर गंज को फिर खौफ़ क्या है मार से ॥

आज़ादी

हर मुल्क और हर मजहब के ऋषियों व आलिमों ने हर ज़बान में ल.खूकहा शास्त्र और हज़ारहा कुतुब परमात्मा जी की तारीफ़ में लिखे, मगर किसी को उसका पार न आया और आख़िर हर एक ने अपने आपको इस बारे में आजिज़ ठहराया, इसलिए उसकी तौसीफ़ जिस क़दर की जाये थोड़ी है, क्योंकि परमात्मा हर एक सिफ़्त से बरी और लासानी और स्वयम् स्वरूप स्वयम्, तो फिर उसके बारे में क़लम को तहरीर पर लाना ख़ाम ख़्याल होगा, मगर ग़ौर के जो उसूल हैं उन्ही लकीरों का फ़कीर हर मुजस्सिम है, यहां तक कि जो तालीम व तरबियत जिस क़दर फ़ितरी और लाज़मा

फ़ितरत है, सबके वास्ते लाज़िम व अलज़म है, जो लोग अपने सोयम् स्वरूप से अलहदा रास्ता ढूंड़ते हैं व ज़ाहिर बहुत जल्द और सलीके से अपनी मनज़िल को पहुँचना चाहते हैं, दर असल वो ही लोग ज़्यादा मुसीबत में गिरफ्तार हैं, आज़ादी का नाम नज़ात है, नज़ात अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है जिसके माने रुस्तगारी के हैं अगर उसको संस्कृत ज़बान से मुशतसूक़ किया जावे तो-न जायते=बनता है जिसके माने दुबारा जन्म में न आना, चूंकि बार बार के जन्म लेने से हर क़ालिब में घूमना पड़ता है जहां दुःख है, इसलिए नज़ात जन्म मरन से छूटने और हमेशा के लिये दुःख से आज़ादी पाने को कहते हैं। संस्कृत ज़बान के अलफ़ाज़, परम गती, निर्वान, मोक्ष और मुक्ती वग़ैरा अङ्गरेज़ी के अलफ़ाज़, ब्लिस सालवेशन Bliss salvation वग़ैरा नज़ात के माने हैं, क्या दुःखों से आज़ादी पाना, दुःख के दूर करने में अगर पुरुषार्थ किया जावे, पुरुषार्थ में दुःख और दुःख से दुःख दूर होना जैसे नहाने से सर्दी का दूर होना हो नहीं सकता, इसलिए मोक्ष का अत्यन्ताभाव होने से महावाक्यार्थ सोयम स्वरूप सम्यक् ज्ञान ब्रह्म ही ब्रह्म सिद्ध होता है।

सम्यक् ज्ञान (ख़ालिक़ ख़ल्क़ हमादानी, हमा ओस्त हमा आज़ोस्त, कैवल्य ज्ञान (हमा दानी हम चुनांदीगेरनेस्त) जब प्रमाण और युक्ति से द्वैत मिथ्या है और एक अद्वैत आत्म ही पर-मार्थ से सत्य है तब यह सिद्ध हुआ, (न निरोधो न चौत्पत्तिर्न बद्धो न च साधकः। न मुमुक्षु न वै मुक्त इत्यषा परमार्थता ॥) निरोध नहीं, पुनः उत्पत्ति भी नहीं बंध नहीं साधक नहीं मुमोक्षू नहीं मुक्त नहीं ये परमार्थता नहीं अर्थात् ये सर्व लौकिक और वैद्यक व्यवहार अविद्या का विषय अज्ञान परयंत है, तब निरोध कहिये प्रलय सो नहीं, उत्पत्ति कहिये जगत् का जन्म सो भी नहीं और जब जगत् उत्पत्ति नहीं तब बंध कहिये संसारी जीव सो भी नहीं और जब बंध नहीं तब साधक कहिये मोक्षार्थ साधन करने वाला सो भी नहीं और मुमोक्ष कहिये साधन सम्पन्न मोक्ष की इच्छा वाला सो भी नहीं जब बंध से मुमोक्षू परयंत नहीं तब मुक्ति कहिये सर्व बंधनों से छूटा पुरुष सो भी नहीं इस प्रकार उत्पत्ति प्रलय, के अभाव से बंधादिक कुछ भी नहीं है, ये परमार्थता है, उक्तार्थ को ही प्रश्नोत्तर से विस्तार करते हैं, 'प्रश्न,' उत्पत्ति और प्रलय का

अभाव कैसे है, 'उत्तर,' इस द्वैत के असद्भाव से उत्पत्ति और प्रलय का अभाव है, क्योंकि श्रुति प्रमाण से, (यत्र रही द्वैत मिव भवति, तदितर इतरं पश्यति) जहां द्वैत वत होता है तहां और का और दीखता है यहां जो एक अद्वैत आत्मा तत्वों विषे नानावत दीखता है आत्मा ही ब्रह्म है आत्मा ही सोयम् स्वरूप अद्वैत है और आत्मा ही सर्व व्यापक है निश्चय करके सर्व ब्रह्म ही है जो यह आत्मा है इत्यादिक अनेक श्रुतियां करके द्वैत का असद्भाव सिद्ध है, खरा के सींग आदिक असत् पदार्थों की उत्पत्ति प्रलय होवे नहीं और सत् अद्वैत वस्तु भी उत्पति और लय होती नहीं क्योंकि अद्वैत नित्य स्वयम् सिद्ध है, इति सिद्धम्; इससे सिद्ध हुआ कि मुक्ति वास्तव में कोई पदार्थ नहीं क्योंकि ज्ञानवान मुक्ति को मानते ही नहीं और अज्ञानी मुक्ति को जानते ही नहीं। जो जिस पदार्थ को जानता ही नहीं उसको उस पदार्थ का संकल्प ही नहीं फुरता और ज्ञानवान अपने को बंधन ही नहीं मानता, जो बंध हो तो मुक्त हो, श्रुति प्रमाण से अद्वैत ब्रह्म ही सिद्ध होता है, बंध और मोक्ष सिर्फ़ कल्पित और मिथ्या हैं, आत्मा में न बंध है न मोक्ष है यह कल्पना सर्व

भ्रम मात्र मिथ्या है, क्योंकि अगर तुम मोक्ष का ख़याल करो तो वहां ज़रूर बंधन का भी ख़याल होगा, जहां सर्दी होगी वहाँ गर्मी का भी इमकान ज़रूर होगा, आत्मा सदा एक रस आनन्द स्वरूप है, विचार करके देखा जावे तो स्वयम् स्वरूप में न कहीं बंध है और न कहीं मोक्ष है, कोई शास्त्र-कार मरणान्त मुक्ति मानते हैं, यह उनकी ग़लत-फ़हमी है, मोक्ष का ज्ञान सिर्फ़ शरीर के संघात से होना चाहिये अगर स्वयम् ही स्वयम् है तो शरीर कहाँ और संघात कहाँ और मोक्ष कहां, मगर तो भी इस मोक्ष के बारे में हरएक वादी तरह तरह के ख़याली पुलाव पकाते रहते हैं, और असलियत अपने स्वयम् स्वरूप को नहीं अनुभव करते। सिर्फ़ भ्रम के मारे बदन पर निशानदिही कायम कर वाद विवाद करते रहते हैं कि हम यह हैं तुम वह हो, जैसे एक वहमी आदमी ने अपनी पहचान के लिये गले में एक सुर्ख़ डोरा डाल लिया ताकि मैं गुम न होजाऊं, किसी मस-ख़रे को उसका ये ख़ब्त मालूम हो गया उसने वक़्त ख़्वाब वह डोरा उसके गले से निकाल कर अपने गले में डाल लिया, जब वह वहमी आदमी ख़्वाब से बेदार हुआ तो वह मसख़रा फ़ौरन

आकर उस बहमी के सामने बैठ गया, बहमी की जब नींद से चौंक कर आंख खुली तो देखा कि अलामत शनाख्त दूसरे के गले में है, उससे कहा कि बाबा तू मैं है तो मैं कौन हूँ, या मैं तू हूँ, और तू मैं है या तू तू है और मैं मैं हूँ, बता मैं कौन हूँ, इस दृष्टांत पर ग़ौर से अक्ल को डालना जी, और एक कोई ऐसा कहता है कि मोक्ष कर्म का फल है कर्म करते करते बहुत अरसे के बाद मोक्ष प्राप्त हो सकती है, और कोई इस तर्ज़ पर कहता है कि मोक्ष जड़ समाधि की सी हालत है, कुछ करना धरना नहीं, और किसी की गुफ्तगू है कि स्वरूप में लीन होना ही मोक्ष है और कोई वादी चार प्रकार की मोक्ष, सालोक्य, सामीप्य, सारूप, सायुज, मानते हैं, और कोई मतवादी स्वर्गधाम की प्राप्ति मोक्ष मानते हैं, सिद्धांत=जो कर्म से मोक्ष मानते हैं उन मूर्खों को हमेशा तेली के बैल की तरह चक्कर पर चढ़ा रहना होता है क्योंकि अज्ञान से कर्म और कर्म से अज्ञान उत्पन्न होता ही रहता है, प्रमाण (अविद्या या अविद्यात्व मिद मेव हि लक्षणम्) अविद्या का अविद्या ही लक्षण होता है, मूर्ख विचार से खाली ये जानते हैं कि अब मैं मोक्ष हूंगा, उनको यह ज्ञान

नहीं कि यह ही चाहना रूपी अज्ञान बंधन का मूल कारण है, जैसे तेली का बैल सुबह से लेकर शाम तक घूमता है और यह जानता है कि मैं पचास कोस पर पहुँच गया, मगर जब आंख खुली तो देखा कि वही कोल्हू और वही घर नज़र में आया ऐसे ही कर्म कर्त्ता को भी वही बंधन और वही अज्ञान और वही मोक्ष की चाहना चक्कर से उतरने ही नहीं देती।

प्रमाण (क्रिया शरीरोद्भव हेतु राद्रता प्रिया प्रियौ तौ भवतः सुरागिणः। धर्मे तरीतत्र पुनः शरीरकं पुनः क्रियाश्चक्र वदीर्यते भवः ॥)

अज्ञान रूपी कर्म से शरीर और शरीर से अज्ञान रूपी कर्म ही होते रहते हैं, और जो जड़ समाधि की हालत मोक्ष मानते हैं उनकी ग़लती ज़ाहिर दिखाई पड़ रही है क्योंकि अगर जड़ होना ही मोक्ष है तो जड़ पदार्थ काष्ट पत्थर मिट्टी आदिक सिद्ध योगी होने चाहियें क्योंकि इनसे बढ़ कर और कोई जड़ समाधि हो ही नहीं सकता, यह हमेशा के लिये जड़ स्वरूप हैं चित् स्वरूप का अनुभव न करने से मूर्ख जड़ समाधि में ऐसी फुज़ूल अनगढ़ी बातें बनाते रहते हैं जड़ समाधि को निर्विकल्प समाधि भी कहते हैं, देखो,

जो निर्विकल्प समाधि का अगर अहंकारी माना जावे तो निर्विकल्प समाधि सिद्ध नहीं होती और अगर निर्विकल्प समाधि सिद्ध मानी जावे तो अहंकारी सिद्ध नहीं होता, क्योंकि निर्विकल्प में अहंकारी और अहंकारी में निर्विकल्प शास्त्रकार नहीं मानते क्योंकि इन दोनों का आपस में एक दूसरे से विरोध होने पर निर्विकल्प समाधि सिद्ध नहीं हो सकती।

सिद्धान्त

बग़ैर अहंकारी के निर्विकल्प समाधि का अनुभव किस को हुआ और जब अनुभव होना नहीं माना जावे तो समाधि निष्फल हुई और अनुभव अहंकारी को होना माना जावे तो निर्विकल्पता न हुई, इस से कुछ सिद्ध न हुआ तो फिर योग के बारे में क़लम को तहरीर पर लाना महज़ फ़ज़ूल है। और जो परमात्मा में लीन होना मोक्ष सिद्ध करते हैं वो मूर्ख आत्मा को स्वयं रूप से पृथक् समझ बैठे हैं, यह नहीं जानते कि परमात्मा स्वयम् प्रकाशवान् है श्रुति (अत्रायं पुरुषा स्वयम् जोतिर्भवती) स्वयम् प्रकाश अद्वैत स्वरूप से स्वयम् सिद्ध है, अगर दो मानो तो

लीन होने पर भी दोनों का भावाभाव पृथक् नज़र आयेगा, जैसे जल और मृत्तका अगर मिल भी जायें तो भी मिट्टी का मैला और कड़ापना और जल का उज्ज्वल और दुरवतपना पृथक् सिद्ध होगा क्योंकि जल में मलीनता और कड़ापन नहीं और मृत्तका में उज्ज्वल और दुरवतपना नहीं, इसी कारण करके दोनों पृथक् ही दिखाई पड़ेंगे, अगर जीव और ब्रह्म दो होंगे तो जीव का अल्पज्ञ-पना और ब्रह्म का सर्वज्ञपना माना जावेगा, इस बात में ज़रा ग़ौर करना चाहिये कि अगर जीव को अल्पज्ञ ठहराओ तो ब्रह्म की सर्वज्ञता खण्डन होगी क्योंकि जीव का देश काल ब्रह्म की सर्वज्ञता से अलहदा होने पर ब्रह्म की सर्वज्ञता की हानि ज़रूर होगी, और अगर ब्रह्म की सर्व-ज्ञता सिद्ध करो तो जीव का अल्पज्ञपना कैसे सिद्ध होगा, बस कल्पित भ्रम के दूर होने पर स्वयम् प्रकाश अद्वैत स्वरूप सर्वव्यापक आत्मा सिद्ध सिद्धान्त है और जो सामीप सालोकादिक मोक्ष मानते हैं उन की बुद्धि को तो कहना ही क्या है वो भी ये समझते हैं कि परमात्मा शरीरधारी है उस का कोई देश काल है। ऐ मूर्खो श्रुति प्रमाण से नाम रूप मिथ्या महदूद होने

वाला है (वाचा रंभण विकारो नाम धेयम्) नाम रूप विकार होने से मिथ्या माना गया है जैसे मिट्टी के वर्तन और स्वर्ण के भूषण नाम रूप विकार के कल्पित माने जाते हैं, वास्तव में नाम रूप कल्पित भंग होने पर मिट्टी मिट्टी और सोना सोना क्योंकि मृत्तका और स्वर्ण स्वयम् सिद्ध हैं, आदि अन्त और मध्य तीनों कालों में अपने स्वरूप से पृथक नहीं भासते, जो पदार्थ सदा एक रस ज्यों का त्यों भासता है वह नित्य स्वयम् सिद्ध होता है, आदि, अन्त और मध्य कल्पित दृष्टांत मात्र ही माने जाते हैं, वास्तव में परमात्मा किसी तरह से विकारवान नहीं हो सकता, प्रमाण (यथा भवति बालानां गगनं मलिनो मलैः। तथा भवत्यबुद्धी नामात्माऽपि मलिनो मलैः॥) बालकों को आकाश मल करके मलिन भान होता है परन्तु विवेकी पुरुषों को आकाश मल वाला प्रतीत होता नहीं, प्यारे जब तक तमाम मकासद दीन दुनियां और मरातब व मदारज व कश्फ़ व करामात को तर्क न करे और नामुरादी व नाकामी के मैदान में क़दम न रक्खे तब तक आजादी की हवा भी लगनी बहुत मुश्किल है, क्योंकि बड़े बड़े हुशियार पण्डित और उल-

माय फ़जीलत शआर और योगी यती ज़ाहिदान परहेजगार मरातब व मदारिज और मनाज़िल व मकामात और कश्फ़ व करामात पर फ़रेफ़ता होकर आजादी से रह कर चाहना रूपी ज़ंजीरों में जकड़े रहते हैं, प्यारे विचार करने से तुम स्वयम् आज़ाद हो क्योंकि यह सब भ्रममात्र द्वैत जगत मिथ्या है इसको विचार करके दिल से दूर करना बस यही आज़ादी आज़ाद है तुम तो स्वयम् मोक्ष स्वरूप हो जी जी जी।

प्यारे भाई योग का फैसला पहले दिखा दिया है, अब ज्ञान का फ़ैसला दिखाया जाता है, किसी पुरुष ने अपने संकल्प को दो श्लोक करके ऐसा ज़ाहिर किया है, श्लोक (शुद्धं बुद्धं प्रियं पूर्णं निष्प्रपञ्चं निरामयम्। आत्मानं न जानन्ति तत्राभ्यास पराजना॥) आत्म स्वरूप तो शुद्ध है चैतन्य स्वरूप है और आनन्द स्वरूप परिपूर्ण संसार की उपाधि से रहित है इस कारण देहाभिमानी पुरुष को उसका ज्ञान नहीं होता है॥ (मूढ़ोनाप्नोतितद्ब्रह्म यतो भवितु मिच्छति। अनिच्छन्नपि धीरो हि परब्रह्म स्वरूप भाक) मूढ़ पुरुष योगाभ्यास रूप कर्म करके ब्रह्म होने की

इच्छा करता है, और ज्ञाता तो मोक्ष की इच्छा नहीं करता है तो भी परब्रह्म के स्वरूप को प्राप्त होता है क्योंकि उसका देहाभिमान दूर हो गया है, प्यारे जब ज्ञाता का अभिमान ज्ञात कर्त्ता न रहा तो ज्ञान होने का अभिमानी कौन ठहरा जी क्योंकि ज्ञाता कर्त्ता और ज्ञान अभिमान, बग़ैर कर्त्ता के क्रिया हो नहीं सकती ये बात तो हरेक समझ सकता है कि ज़बान न हो तो बोले कौन जी, प्यारे भाई ये एक अजीब तमाशा जगत का है क्योंकि जिस को श्रीकृष्ण महाराज ने भी अर्जुन से कहा कि अर्जुन ये बस कुछ आश्चर्य है जो तू देखा, कहता और सुनता है।।

(आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्य वद्वदति थैवादि) आश्चर्य क्या कि कोई समझ न सके, एक तो ये दूसरे ये कि जब ज्ञानी समझने वाला खुद ही गुमगशतह है तो समझे कौन (इतना समझे कि कुछ न समझे। मालूम हुआ कि कुछ न मालूम हुआ) पर तो भी इस ज़बानी जमा खर्च पर लखूखहा आदमी आवारा होकर परेशान हो रहे हैं और दूसरों को भी आवारा करने पर दिन ब दिन कमर कसते ही जाते हैं,

घर, बार छुड़ाकर ख़ाक में मिलाकर भी उनको सब्र नहीं आता जी, इस पर भी वो अपना मुंह गरीवान में नहीं झुकाते और ख़ाकसार करने को परउपकारी कहलाते हैं, भाई ये आश्चर्य है कि जो कुछ समझना था उसको न समझे, पढ़ लिखकर भी अन्धे की लकड़ी हो रहे हैं, ये और बढ़कर आश्चर्य है, प्यारे मैं फिर कहता हूँ ज़रा दिल में समझना जी। इन दो, योग और ज्ञान ने इस मुल्क को बरबादी के मुक़ाम पर पहुँचा दिया जी, जरा इस उलटी समझ ने, क्योंकि योग देह की तन्दुरुस्ती का हेतु और ज्ञान मन को सत्य की तर्फ झुकाने का हेतु था, क्या सत्य वस्तु का जानना, ज्ञान नाम जानने का है, जिस को सत्यासत्य विवेक कहते हैं, इस यथार्थ को उलटा समझ कर योगी ने तो आकाश को उड़ना चाहा और ज्ञानी ने ब्रह्म बन कर जगत का कर्ता होना चाहा जी, शास्त्रकार ने लिखा है कि ब्रह्म बनने से नहीं बन सकता, ब्रह्म तो स्वयम् सिद्ध सदा एक रस परिपूर्ण नित्य है, बनना बनाना तो अनित्य नाशवान् माना गया है, प्रमाण (अत्रायं पुरुषः स्वयं ज्योतिर्भवति) प्यारे यह भी अच्छा है अज्ञान करके अगर ब्रह्म बनना

बनाना भी मानो तोभी इसी ज्ञान का हेतु होगा, मैं कह रहा हूं, और कहता भी हूँ जी, सचाई इंसान का परम धर्म है हमेशा सच बोलना किसी के दिल को न दुःखाना नेक चलन कहलाना जी, इसी का नाम ज्ञान है, प्रमाण (आसीदेक मेवाऽद्वितीयम्) तो एक ही एक रहा, फिर कोई किसी का दोस्त दुश्मन न रहा (यस्मिन सर्वाणि भूतान्यात्मैवा भूद्विजानत: । तत्र को मोहा क: शोक: एकत्व मनु पश्यत: ॥) प्यारे बहुत अज्ञानी ऐसा कहते हैं कि ऐसा करने से जगत् के कारबार नहीं चलते (भले आदमी) परमार्थ में तो कुछ करना धरना है नहीं, क्योंकि परमार्थ में एक स्वयम् ही स्वयम् अक्षर ब्रह्म जिसका क्षर नहीं हो सकता जी, जो कुछ करना धरना है व्यवहार में ही है, प्यारे परलोक किसने देखा, ये सर्व धर्म इस जगत के ही हैं, इसी से इन्सान का सच बोलना धर्म है, दूसरे को सुख देना पुण्य है और झूठ बोलना अधर्म और दूसरे को दुःख देना पाप जाना जाता है प्यारे मेरी समझ में ये बातें मजबूती पर हैं, ज़रूर ज़रूर हरेक इन्सान इन बातों को दिल में लावे जी, क्योंकि ये बातें तुम्हारे दिल को भी जनाती होंगी कि जैसे कोई आदमी तुमको

दुःख देवे अथवा तुम्हारे साथ झूठ बोले, वो आदमी जरूर तुम को बुरा और दुश्मन लगता होगा, और जो तुमको सुख देवे तुम्हारे साथ सच बोले वह तुमको भला और मित्र जरूर मालूम होता होगा, ऐसे ही तुम दूसरों को बुरे भले, ज़रूर मालूम होते होगे, ये बुरी बातें सबको बुरी और भली बातें भली जरूर लगती हैं तो फिर हरेक आदमी बुरा त्यागना और भला ग्रहण करना क्यों नहीं करता है जी, प्यारे भाई जरूर ज़रूर बुरा त्यागना और भला ग्रहण करना चाहिये यही जगत में सार है इसी सार वस्तु के जानने का नाम ज्ञान है जी, प्यारे सब झगड़े झमेले छोड़ कर इस एक सार सत्य वस्तु को दिल से जरूर ज़रूर पकड़ो जी क्या ग्रहण करो जी, प्रमाण (त्यजेद शेषं जगदात तद्रसं पीत्वा यथांऽम प्रजहाति ततफलम्) सत्य बोलने से सत्य परम पुरुष कहलाता है, क्योंकि झूठ के छोड़ने से मल विक्षेप उस झूठ के साथ ही भाग जाते हैं, इसी उपाधि के दूर करने को हर एक पुरुष बड़े बड़े मंडप रचता रहता है, वास्तव में जो देखा गया तो इसी सत्य वस्तु का ग्रहण करना और झूँठ का छोड़ना, यही ज्ञान और

यही योग है जी, ज़रूर ज़रूर देहधारी पुरुष का यही धर्म है, कि सच बोलना कोई हो बाबा जी हो चाहे संसारी हो जी।

श्री रामचन्द्र जी ने भी परशुराम जी को सत्स्वरूप का ही उपदेश किया, क्योंकि उपदेश व्यवहार में ही होता है, ऐ परशुराम जी ये हमारा सत् स्वरूप है श्रुति प्रमाण करके ऐ देहधारी पुरुषो तुम भी ज़रा जानो जी।

ॐ यत्परं ब्रह्म सर्व्वात्मा
विश्वस्याय तनं महत् ।
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं नित्यं
तत्त्व मेवत्त्व मेवतत् ॥ १॥

जाग्रत्स्वप्न सुषुप्त्यादि
प्रपञ्चं यत्प्रकाशते ।
तद्ब्रह्माह मिति ज्ञात्वा
सर्व्व बन्धैः प्रमुच्यते ॥ २ ॥

त्रिषुधा मेषु यद्भोग्यं
भोक्ता भोगश्च यद्भवेत ।
तेभ्यो विलक्षणः साक्षी
चिन्मात्रोहं सदाशिवः ॥ ३ ॥

मय्येव सकलं जातं
मयि सर्व्वं प्रतिष्ठितम् ।
मयि सर्व्वं लयं याति
तद्ब्रह्माद्वय मस्म्यहम् ॥ ४ ॥

पुरातनोहं पुरुषो ह मीशो
हिरण्मयोहं शिव रूप मस्मि ।
अपाणिपदोह मचिन्त्यशक्तिः
पश्याम्य चक्षुः सशृणोम्य कर्णः ॥ ५ ॥

अहं विजानामि विविक्त रूपो
न चास्ति वेतामम चित्सदाहम् ।
वेदै रनेकै रह मेववेद्यो
वेदान्त कृद्वेदविदेष चाहम् ॥ ६ ॥

न पुण्य पापे मम नास्ति नाशो
न जन्म देहेन्द्रिय बुद्धि रास्ति ।
न भूमि रापो मम वह्नि रस्ति
न चानिलो मेस्ति न चाम्बरञ्च ॥ ७ ॥

एवं विदित्वा परमात्मरूपं
गुहाशयं निष्कल मद्वितीयम् ।
समस्त साक्षिं सदसद्वि हीनं
प्रयातिशुद्धं परमात्मरूपम् ॥ ८ ॥

प्रकाशरूपोह मजोह मद्वयः
सकृद्विभातो हमतीव निर्म्मलः।
विशुद्ध विज्ञान घनो निरामयः
सम्पूर्ण आनन्द मयोह मक्रियः ॥ ९ ॥

सदैव मुक्तो हमचिन्त्य शक्तिमा-
नतोन्द्रियज्ञानमविक्रियात्मकः।
अनन्त पारो हमहर्निशं बुधै-
र्विभावितोहं हृदिवेद वादिभिः ॥१०॥

प्यारे सत्यासत्य व्यवहार में ही माना जाता है, विचार करके युक्त चेष्टा से व्यवहार करना क्योंकि युक्त चेष्टा पुरुष ही मुक्त है जी, (युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु) परमार्थ में मुक्तादि, द्वै, अज्ञ, शास्त्रकार नहीं मानता जी।

प्रमाण (न निरोधो न चोत्पत्ति र्नबद्धो न च साधकः। न मुमुक्षु र्नवै मुक्त इत्येषः परमार्थता)।

परमार्थ में ज्ञाता, ज्ञानादिक चौदह त्रिपुटी ही नहीं मानी गईं, तो फिर मन, बुद्धि का क्या कहना है जी।

प्रमाण (यतो वाचो निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसासह)।

कहना, सुनना, करना, धरना, व्यवहार में ही होता है जी, श्री कृष्ण महाराज जी ने ऐसा भी अर्जुन से जाहिर किया कि ऐ अर्जुन इस जगत के आदि, अन्त और मध्य स्वरूप को आज तक किसी ने नहीं जाना कि यह क्या है जी, जो देखने में आ रहा है, (न रूप मस्ये हत थोपलभ्यते नांतो न चादिर्न च सं प्रतिष्ठा) प्यारे जब ज़ाहिरा ही जगत का पार हाथ न आया तो पोशीदह पर कमर बांधना महज़ नादानी है, क्योंकि जगत वो कि जिसका आदि अन्त ही नहीं और परमार्थ केवल ब्रह्म जिसको यतोवाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसासह ऐसा शास्त्रकार मानता है, तब बुद्धि इधर उधर दोनों हाथों को खाली देखकर विचार करने लगी, विचार करते करते बुद्धि की दृष्टि सत्य परम वस्तु पर आ खड़ी हुई कि ये असार संसार में सत्य ही एक सार वस्तु है, प्रमाण (सत्यंवद धर्म्माचर स्वाध्यायन्मा प्रमदः । सत्यान्न प्रमदीतव्यं धर्म्मान्न प्रमदीतव्यं कुशलान्न प्रमदीतव्यम्)

सत्य धर्म से सत्य पुरुष ही ब्रह्म है, सो ये कह रहा है अनन्त रूप होकर, प्रमाण (सत्यं ज्ञान मनन्तं ब्रह्म) सत्यरूप ज्ञानरूप अनन्तरूप ब्रह्म ही स्वयम् ब्रह्म है, ऐसे प्रमाणों करके (जीवो ब्रह्म नापरः) प्यारे सब कुछ कह दिया जी जो कुछ दिल ने कहना था, मगर ज़रा और भी कान इधर देकर आंख से देखना जी, कि इन काले अक्षरों में और क्या लिखा है, ऐ भाई किसी ने आज तक सिंहासन आकाश से आता न देखा कि यह सिंहासन फलाने पुरुष को सवार होने के लिये आकाश से उतरा है, और न आता हुआ आकाश से ज़ञ्जीर देखा कि इस ज़ञ्जीर में फ़लाना पुरुष जकड़ा जायगा जी, ज़ाहिर में तो प्यारे यही देखने में आया कि हर एक देहधारी का आना जाना हम बराबर हो ही रहा है, ऐ मेरे स्वरूप प्यारे भाई ख़याल को ग़ौर में लाकर मेरा कहना मान कर विचार करके हरेक देहधारी से प्यार करा करो जी अरु सत्यरूपी व्यवहार करा करो जी, इस सत्य व्यवहार में सत्य ज्ञान की निष्ठा

करने से तुम सदा सुखी हो जी, आनन्द आनन्द स्वरूप स्वयम् ब्रह्म हो जी निर्भय पद हो जी, (आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न विभेति कुतश्चेनति । आनन्दं ब्रह्म विजानात् ॥) ॐ सत्य सत्यं सत्य सत्यं सत्य सत्यं ॥

❀ रमज़ की समझ ❀

अगर होता जुदा ब्रह्म, तो घर किसी के बँधा होता।
मसल ये है जहां में, गैया की तरह दुहा होता ॥

प्यारे देखो जी, सकल बबूला शकल पानी से जुदा शकल अगर माना, मगर ग़ौर कर देखा गया तो ये सब पानी का ही तमाशा है, अगर जुदा शकल मानो, तो एक तो ये कि किसी ने आजतक पानी से जुदा शकल बबूला नहीं देखा, दूसरे ये कि शकल बबूला का जुदा होकर शकल सागर पानी का पार करना बहुत ही मुश्किल था, क्योंकि एक पलक के गिरने में हज़ारों बबूलों का उपजना अरु हज़ारों का लीन होना होता ही रहता है,

जैसे प्रज्ज्वलित अग्नि से अनेक अग्नि के समान विस्फुलिंगे उपजते अरु अग्नि विषे लीन होते हैं। प्रमाण (तदेतत्सत्यं यथा सु दीप्तात् पावकाद्वि-स्फुलिंगा सहस्रशः प्रभन्ते स्वरूपाः। तथाक्षराद्वि-विधाः सौम्य भावा प्रजायन्ते तत्र चैवापि यान्ति॥) जैसे अग्नि की चिनगारियों विषे पृथक पृथक आकारादि विकार व्यवहार है परन्तु स्वरूप करके फेर भी सर्व चिनगारियों विषे एक समान अग्नि रूपता ही है, क्योंकि उष्णता अरु प्रकाशता का अविशेषपना होने से अग्नि एक ही है, तैसे ही चैतन्य रूपता के अविशेष से जीवों को स्वरूप से ब्रह्म रूपता ही है, चैतन्यतादि लक्षण वाला सत्य स्वरूप ब्रह्म एक ही होने से सर्व जीवों को स्वरूप से ब्रह्म रूपता ही है, यथा=जैसे प्रज्ज्वलित भये अग्नि से अनेक अग्नि के समान रूप वाले विस्फु-लिंगे सहस्रावधि उपजते अरु तहाँ ही अग्नि विषे लीन होते हैं, तैसे ही अक्षर ब्रह्म रूप से जगत विविध भाव उपजते अरु पुनः तहां ही लीन होते हैं, जिस करके जगत् रूप ही ब्रह्म स्वरूप है,

द्वैत भाव करके विकार अरु व्यवहार की उपाधि मानना ही अज्ञान है, प्रमाण (ये न दृष्टं परं ब्रह्म सोऽहं ब्रह्मेति चिन्तयेत। किं चिन्त यति निश्चिन्तो द्वितीयं यो न पश्यति ॥) जो पुरुष पर-ब्रह्म को देखे, वह मैं ब्रह्म हूँ, ऐसा चिन्तन करे, और जो द्वितीय को देखता ही नहीं है वह निश्चिंत होकर क्या चिन्तन करेगा, अर्थात् कुछ भी चिंतन नहीं करेगा, जिसको द्वैत दृष्टा ही नहीं है उसे चिन्तन करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है, जिससे सिद्ध हुआ कि जगत ही सत्य स्वभाव स्वरूप ब्रह्म ही है क्योंकि आदि अनादि से जगत का यही सत्य स्वभाव ही स्वभाव है, हर रोज़ हज़ारों शकलों का उपजना अरु लीन होना ही सत्य स्वभाव है, प्यारे ब्रह्म से ब्रह्म, जैसे गेहूँ से गेहूँ, चना से चना, प्रमाण (सकल मिदमहं च वासुदेवः) शास्त्र वेदांत कृद्वेद विदेव चाहम्, प्रमाण (आकाशस्य घटाकाशो विकारा वयवौ यथा। नैवात्मनः सदा जीवो विकारा वयवौ तथा ॥) जैसे आकाश का घटाकाश विकार अवयव नहीं

तैसे आत्मा का जीव सर्वदा विकार अरु अवयव भी नहीं, अर्थात् जैसे आकाश के घटाकाशादिक विकार अरु अवयव नहीं, तैसे ही सत्य स्वरूप से सत्यरूप महाकाशस्थानीय एक अखण्ड अद्वैत परब्रह्म से अभिन्न आत्मा का यह घटाकाश स्थानीय जीव सर्वदा (सर्वथा) उक्त दृष्टान्तवत् विकार नहीं, अरु अवयव भी नहीं एतदर्थ आत्मा के सत्य होने से व्यवहार भी सत्य ही है, सत्य से सत्य, सत्य सदा एक रस परब्रह्म जगतरूप सत्य ही है, अरु जीवात्मा सत्यस्वरूप पूरण ब्रह्म ही ब्रह्म है, 'प्रमाण पर प्रमाण बार बार शुद्ध ही शुद्ध पुकारता है।'

(यथा भवति बालानाँ गगनं मलिनं मलैः ।
तथा भवत्य बुद्धीनामात्माऽपि मलिनं मलैः ॥)

हे प्यारे जीव जो है सो ब्रह्म का अंश नहीं अरु विकार भी नहीं, 'घटाकाशवत' किन्तु ब्रह्म ही जीव शब्द का वाच्य है, इस प्रकार का कहना सो अयुक्त है, क्योंकि ब्रह्म तो उपाधि से रहित

शुद्ध है ताते, अरु जीव जो है सो रागादिक मल वाला है ताते, अरु जीव अनेक है ताते, इत्यादि प्रकार से तिन ब्रह्म जीव को एकता का असंभव है, यह आशंका करके स्वरूप से जीव को भी मलवानपना आदिक है नहीं, ऐसा कहते हैं। जैसे घटाकाशादिक जो नाम रूप कार्यादिक भेद का व्यवहार है, सो भेद बुद्धि का किया है, तैसे ही उपाधि अज्ञान का भेद व्यवहार है, सो अविद्या के किये हैं, ताते तिस अविद्या रचित भेद किया ही क्लेश कर्म्म फल अरु जन्म मरण रागादिक मल करके युक्त पना है, यथार्थ स्वरूप से नहीं, इस अर्थ को दृष्टान्त से प्रतिपादन करने को इच्छते हुए कहते हैं (यथा भवति बालानाँ गगनं मलिनं मलैः) जैसे बालकों को आकाश मल करके मलिन होता है, अर्थात् जैसे लोक विषे विचार शून्य अविवेकी बालकों को परम शुद्ध जो आकाश है सो मेघ, रज धूमादि मल करके मलिन मैल वाला भासता है, परन्तु जो आकाश के स्वरूप स्वभाव के जानने वाले जे विवेकी पुरुष हैं,

तिनको आकाश मल वाला प्रतीत होता नहीं, अर्थात् जिन पुरुषों को आकाश के यथार्थ स्वरूप स्वरूप स्वभाव का ज्ञान है, तिन को आकाश में धूम, धूलि आदिक मल के होते संते भी आकाश मलिन प्रतीत होके भी जैसा है तैसा ही प्रतीत होता है, (तथा मथत्यबुद्धी नामात्माऽपि मलिनं मलैः) तैसे आत्मा भी अबुद्धियों को मल करके मलीनप्रतीत होता है, अर्थात् जैसे अविवेकी बालकों को आकाश धूम धूलि करके युक्त मलिन भासता है, तैसे जो विज्ञाता प्रत्येक चैतन्य परब्रह्म रूप आत्मा हैं सो भी तिस प्रत्यगात्मा के यथार्थ विवेक से रहित अबुद्धिमान अज्ञानी पुरुषों को क्लेश कर्म्म इत्यादि मलों करके मलिन विकारी प्रतीत होता है, अर्थात् सर्व शरीरों में शुद्ध बुद्ध युक्त रूप एक ही आत्मा है, परन्तु सो तैसा होता संता भी अविवेकी पुरुषों को देह इन्द्रिय मन प्राणादिकों के क्लेश क्रिया फलादि धर्म्मवान पने करके युक्त भासता है, परन्तु जैसे ऊषर देश को देख के तिस विषे जल की कामना वाला तृषित पुरुष

जल फेन तरंगादिकों का आरोप करता है, तथापि तिस असत् आरोप से वो ऊषर देश जल फेन तरंगादि वाला होता नहीं, तैसे ही सदा शुद्ध निर्विकार प्रत्यगात्मा सो अबुद्ध अविवेकी अज्ञानी पुरुषों करके आरोप किये क्लेशादिक मल तिन करके मलिन होता नहीं, अर्थात् जिन पुरुषों को अपने आप सदा शुद्ध बुद्ध युक्त स्वभाव प्रत्यगात्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं सो पुरुष अपने आप आत्मा विषे देहेन्द्रिय मन प्राणादिकों के जन्म मरणादि धर्मों का आरोप करते हैं, परन्तु तिनके आरोप से वो सदा शुद्ध आत्मा कदापि किसी प्रकार से विकारवान् मलिन सदोष होता नहीं, प्यारे और एक प्रमाण कहता हूँ जिस करके दिल में निश्चय निश्चल हो जावे कि हां मैं ही ब्रह्म हूँ।

नांतः परमस्ति ॥ यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतं । तदेव ब्रह्मत्त्वं विद्धि नेदं यदिद मुपासते।

जो मन करके नहीं मनन होता अरु जिस करके मन मनन करता है सोई ब्रह्म है, नहीं है

यह ब्रह्म, जो ये उपासते हैं, इस श्रुति प्रमाण करके निश्चय हुआ कि मैं ही ब्रह्म हूं, क्योंकि मेरे ही मनन करने से मनन होता है, जो कुछ मनन होता है, और जो मनन किया जा रहा है, प्यारे ये जगत व्यवहार रूपी तमाशा इसी देहधारी चैतन्य पुरुष का है, विचार करके अपने आप का आप को अपरोक्ष हुआ तो ये सिद्ध हुआ कि ये जगत रूपी तमाशा सर्व मेरा ही तमाशा है, जैसे एक देशी घट के प्रत्यक्ष ज्ञान होने से सर्व देश के सर्व घटों का ज्ञान प्रत्यक्ष होता है, देश काल जो भेद कहा सो कार्य कारण भाव करके तिन की अभेदता की सिद्धयर्थ है, सिद्ध हुआ कि ये सर्व मेरा ही सत्य स्वरूप है, सर्व मेरे ही सत्य स्वरूप से जगत सत्य स्वरूप धारी है, प्यारे ये ही उपदेश वसिष्ठ जी ने श्री रामचंद्र को किया, कि ऐ रामचंद्र जी ये सर्व जगत तुम्हारे ही स्वरूप से स्वरूपधारी हो रहा है, तुम जगत से भिन्न नहीं, अरु जगत तुम्हारे से भिन्न नहीं। जगत तुम्हारा स्वरूप अरु तुम जगत के स्वरूप हो जी।

प्रमाण (यत्र जीव तत्र ब्रह्म) (जीवो ब्रह्म नापरः) सर्व प्रकाशरूप ब्रह्म ही है, प्रमाण (ब्रह्मैवेद मभृतं पुरस्ताद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोतरेण । अधश्चोर्द्धश्च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम्)।

घट घट व्यापक कह कर फेर कामना क्यों करनी (ब्रह्म बोली काया के ओली, विन काया के ब्रह्म क्या बोली ।)

प्यारे मुश्किल है मुश्किल=प्रमाण, (बुभुक्षुरिह संसारे मुमुक्षुरपि दृश्यते । भोग मोक्ष निराकांक्षी विरलोहि महाशयः ॥)

इस संसार में विषय भोग की अभिलाषा करने वाले भी बहुत देखने में आते हैं, और मोक्ष की इच्छा करने वाले भी बहुत देखने में आते हैं, परन्तु विषय भोग और मोक्ष की इच्छा न करने वाला तथा पूर्ण ब्रह्म निरला ही होता है, क्योंकि नाना इच्छा कामना करने से आपे को कुछ का कुछ मान बैठा है, इसी का नाम संसार है ।

प्रमाण (यत्र यत्र भवेत्तृष्णां संसारं विद्धि तत्रवै । प्रौढ वैराग्य माश्रित्य वीत तृष्णां सुखी भव ॥)

जहाँ जहाँ विषयों के विषे तृष्णा होती है, तहाँ ही संसार जान, तृष्णा ही कर्मों के द्वारा संसार का हेतु होती है, तिस कारण दृढ़ वैराग्य का अवलम्बन करके अप्राप्त विषयों में इच्छा रहित होकर आत्मज्ञान की निष्ठा करके सुखी हो ।

प्यारे मेरे कहने का सार मूल यही है, कि जो कुछ मैंने समझा तुम सज्जनों को कह दिया जी, सांच बोलो झूंठ मत बोलो, वह काम करो जिस करके तुम को सुख हो अरु औरों को भी सुख होवे, वह काम मत करो जिस करके तुम को दुःख हो अरु औरों को भी दुःख होवे जी । इसी का नाम वैराग्य, ज्ञान और यही संसार में सार है जी, इस रमज़ की समझ को विचार करके समझना कुछ सज्जनों के वास्ते बड़ी बात नहीं जी, ।

प्रमाण (यथा नरो गलच्छिद्रोया वत्कलनया मनाक । विमृशत्याशयंता वच्छिद्रा तस्य विलीयते ॥)

जैसे जिस पुरुष की निद्रा गलित हो रही है वह जब तक अपने चित्त के वृत्तांत को किंचित विचारता है तभी तक उसकी निद्रा नष्ट हो जाती है ऐसे ही किंचित विचार मात्र से यह अविद्या नष्ट होती है।

प्रमाण (एतावदेवा विद्याया नेदं ब्रह्मेति निश्चयः। एतदेव क्षयोघस्या ब्रह्मेदमिति निश्चयः॥)

यह जगत ब्रह्म नहीं है, ऐसा जो निश्चय है यही अविद्या का स्वरूप है, और यह सब ब्रह्म ही है यही निश्चय अविद्या का क्षय है, द्वैत दृष्टि अविद्या रूपी क्षय होने से शेष चिन्मात्र में तुम स्थिर हो जी जी जी इति सिद्धम्।

